अहंकार

अनातोले फ्रांस

सरस्वती प्रेस बनारस

द्वितीय सस्करण, अगस्त, १९३७ ।

तृतीय सस्करण, अक्तूबर १९४४ ।

चतुर्थ सस्करण, ,, १९४५ ।

मूल्य =)

मुद्रक—श्रीपतराय, सरस्वती प्रेस, बनारस ।

भूमिका

योरप में फ्रांस का सरस साहित्य सर्वोत्तम है फ्रेंच साहित्य में 'अनातोले फ्रांस' का नाम अगर सर्वोच्च नहीं तो किसी से कम भी नहीं, और 'थायस' उन्हीं महोदय की एक अद्भुत रचना है — हाँ, ऐसी विलक्षण साहित्यिक कृति को अद्भुत ही कहना उपयुक्त है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, इन तीनों ही गुणों का यहाँ ऐसा अनुपम समावेश हो गया है कि एक अंग्रेज समालोचक के शब्दों में 'यह साहित्यिक अंगविन्यास' का आदर्श है। कथा बहुत पुरानी है, ईसा की दूसरी शताब्दि की। घटना ऐतिहासिक है। प्राचीन समय के धर्मों से कोई पुस्तक ऐतिहासिक नहीं होती - पुराने शिला लेख और ताम्र-पत्र भी इतिहास नहीं हैं। इतिहास है किसी समय की भाषा और विचार को व्यक्त करना और इस विषय में अनातोले फ्रांस ने कमाल कर दिखाया है। यह १८०० वर्ष पहले की दुनिया की आपको सैर करा देता है, पुस्तक के पात्र प्राचीन वस्त्रों में वर्तमान काल के मनुष्य नहीं हैं, बल्कि उसी जमाने के लोग हैं, उनकी भाषा शैली वही है, विचार भी उतने ही प्राचीन। उस समय की ईसाई दुनिया का आपको इतना स्पष्ट और सजीव ज्ञान हो जाता है जितना सैकड़ों इतिहासों के पन्ने उलटने से भी न हो सकता। ईसाई धर्म अपनी प्रारम्भिक दशा की कठिनाइयों में पड़ा हुआ था। उसके अनुयायी अधिकांश दीन, दुर्बल प्राणी थे, जिन्हें अमीरों के हाथों नित्य कष्ट पहुँचा करता था। उच्च श्रेणी के लोग भोग विलास में डूबे हुए थे। दार्शनिकता की प्रधानता थी, भाँति-भाँति के वादों का जोर शोर था। कोई प्रकृतिवादी था, कोई सुखवादी, कोई दु:खवादी, कोई विरागवादी, कोई शंकावादी, कोई ...वादी। ईसाई मत को विद्वान् तथा शिक्षित समुदाय तुच्छ समझता था। यह लोग भी भूत, प्रेत, टोना, नजर के क़ायल थे। आपको सभी वादों के माननेवाले मिलेंगे, जिनका एक एक वाक्य आपको मुग्ध कर देगा। टिमा-...न, निसियास, कोटा, हरमोडारस, जेनायेमीस, यूक्राइटीन, यथार्थ में

भिन्न भिन्न वादों ही के नाम हैं। ईसाई मत स्वय कई सम्प्रदायों में विभक्त ह। गया है। उनके सिद्धान्तों में भेद है, एक दूसरे के दुश्मन हैं। लेखक की कलाचातुरी इसमें है कि एक ही मुलाक़ात में आप उसके चरित्रों से सदा के लिये परिचित हो जाते हैं। पालम की तस्वीर कभी आपके चित्त से न उतरेगी। कितना सरल, प्रसन्नमुख, दयालु प्राणी है। उसे आप अपने बग़ीचे में पेड़ों को सींचते हुए पायेंगे। अहिंसा का ऐसा भक्त कि अपने कन्धों पर बैठे हुए पक्षियों को भी नहीं उड़ाता, सँभल सँभलकर चलता है कि कहीं उसके सिर पर बैठा हुआ कबूतर चौंककर उड़ न जाय। टिमाक्लीज को देखिए। शकावाद की सजीव मूर्ति है। पर इतने वादों के होते हुए भी वे तात्त्विकता में ईसाई मत से कहीं बढे हुए थे। ईसाई धर्म को जो इतनी सफलता प्राप्त हुई, इसका हेतु वह विलासान्धता थी जिसकी एक झलक आप 'भोज' के प्रकरण मे पायेंगे। वास्तव में यह भोज साहित्य ससार मे एक अनूठी वस्तु है। देखिए, विद्वानों और दार्शनिकों के आचरण कितने भ्रष्ट हैं, यहाँ तक कि सारी सभा नशे में मस्त हो जाती है, लोग वेश्याओं से गले मिलकर सोने में लेशमात्र भी सकोच नहीं करते। इसी भ्रष्टाचरण ने ईसाई मत का बोलबाला किया। थियोडोर एक हब्शी गुलाम है, लेकिन उसका चरित्र कितना उज्ज्वल है। सन्त एन्टोनी का चरित्र हमारे यहाँ के ऋषियों से मिलता है। कितना शान्त, कितना सौम्य रूप है। ईसाइयों की यही धर्म-परायणता और सच्चरित्रता थी जो उसके विजय का मुख्य कारण हुई।

उस समय के खान पान, रहन सहन, आहार-व्यवहार का भी पुस्तक में बहुत ही धामिक उल्लेख किया गया है। पापनाशी ने जिस स्तम्भ के शिखर पर तप किया था उसके नीचे जो नगर बस गया था, और वहाँ जो उत्सव होते थे, उनका वृत्तान्त उस काल का यथार्थ चित्र है। देश-देश के यात्रियों के भिन्न भिन्न वस्त्रों को देखिए। कहीं मदारी का तमाशा है, कहीं सँपेरा साँप को नचा रहा है, कहीं कोई महिला गधे पर सवार मेले में से निकल जाती है फेरीवाले चिल्ला रहे हैं, फ़क़ीर गा गाकर भीख माँग रहे हैं। सोचिए, वह विपद् चित्र खींचने के लिए लेखक को उस समय का कितना ज्ञान प्राप्त करना पड़ा होगा।

यह तो पुस्तक के ऐतिहासिक महत्व की चर्चा हुई। अब मुख्य कथा पर आइए। एक सन्त के अहंकार और उसके पतन की ऐसी मार्मिक मीमांसा संसार के साहित्य में न मिलेगी। लेखक ने यहाँ अपनी विलक्षण कल्पना शक्ति का परिचय दिया है। वर्तमान काल के एक करोड़पती, या किसी वेश्या के मनोभावों की कल्पना करना बहुत कठिन नहीं है। हम उसे नित्य देखते हैं, उससे मिलते जुलते हैं, उसकी बातें सुनते हैं। लेकिन एक तपस्वी के हृदय में पैठ जाना और उसके संचित भावों और आकांक्षाओं की खोज निकालना किसी आत्मज्ञानी ही का काम है। पापनाशी के पतन का कारण उसकी वासना लिप्सा न था। उसका अहंकार था। यह अहंकार कितने गुप्त भाव से उस पर अपना आसन जमाता है कि ऐसा प्रतीत होता है योगी के पतन में दैवी इच्छा का भी भाग था। पापनाशी त्याग की मूर्ति है, अत्यन्त संयमी, वासनाओं को दमन करनेवाला, ईश्वर में रत रहनेवाला, पर इसके साथ ही धार्मिक संकीर्णता और मिथ्यान्धता भी उसमें कूट-कूटकर भरी हुई है। जो उसके मत को नहीं मानता वह म्लेच्छ है, नारकीय है, अवहेलनीय है, अस्पृश्य है। उसमें सहिष्णुता छू तक नहीं गई है। देखिए वह टिमाक्लीज़, निसियास का कितने उत्तेजना-पूर्ण शब्दों में तिरस्कार करता है। धर्मान्धता ने उसकी विचार शक्ति सम्पूर्णतः अपहरित कर लिया है। उसकी समझ में नहीं आता कि बिना किसी बदले या फल की आशा के कोई क्योंकर निवृत्ति मार्ग ग्रहण कर सकता है। वह 'थायस' का उद्धार करने चलता है। यहीं से उसके अहंकार का अभिनय आरम्भ होता है। हमारे धर्म-ग्रन्थों में भी ऋषियों के गर्व पतन की कथाएँ मिलती हैं, पर उनका आरम्भ ऋषि की वासना लिप्सा होना है। ऋषि को अपनी तपस्या का गर्व हो जाता है। विष्णु भगवान उनका गर्व मर्दन करने के लिए उसे माया में फँसा देते हैं, ऋषि का होश ठिकाने हो जाता है। यह अहंकार उद्धार के भाव से उत्पन्न होता है। 'उद्धार' क्यों? किसी को उद्धार करने का दावा करना ही गर्व है। हम अधिक-से अधिक सेवा कर सकते हैं। उद्धार कैसा? पापनाशी को पालम इस काम से रोकता है। पर उसकी बात पापनाशी के मन में नहीं बैठती। वहाँ से लौटती बार पक्षियों के दृश्य द्वारा फिर उसे चेतावनी मिलती है,

पर वह उस पर ध्यान नहीं देता । वह यात्रा पर चल खड़ा होता है, इस्कन्द्रिया पहुँचता है, जो उन दिनों यूनान और एथेन्स के बाद विद्या और विचार का केन्द्र था, निसियास से उसकी भेंट होती है, तब थायस से उसका साक्षात् होता है । सभी से उसका व्यवहार धार्मिकता के गर्व में डूबा हुआ होता है । थायस पहले तो उससे भयभीत होती है । फिर उसके उपदेशों से उसके धार्मिक भाव का पुन संस्कार होता है । 'अनन्त जीवन' की आशा उसे पापनाशी के साथ चलने पर प्रस्तुत कर देती है । पापनाशी उसे स्त्रियों के आश्रम में प्रवृष्ट करके फिर अपने स्थान को लौट जाता है । पर उसके चित्त की शान्ति लुप्त हो गई है । वासना की अज्ञात पीडा उसके हृदय को व्यथित करती रहती है । उसका आत्मविश्वास उठ गया है, उसकी विवेक-बुद्धि मन्द हो गई है । उसे दु.स्वप्न दिखाई देते हैं । वह इस मानसिक अशान्ति से बचने के लिए एकान्त निवास करने की ठानता है और जाकर एक स्तम्भ पर आसन जमाता है । वहाँ से भी दु स्वप्न के कारण वह एक कब्र में आश्रय लेता है । वहीं उसकी जोजिमस से भेंट होती है, और वह सन्त एन्टोनी के दर्शनों का चलता है । उसी स्थान पर उसे थायस के मरणासन्न होने की खबर होती है । वह भागा भागा स्त्रियों के आश्रम में पहुँचता है । उसके मानसिक कष्ट का वर्णन करने में लेखक ने अद्वितीय प्रतिभा दिखाई है । इतनी आवेशपूर्ण भाषा कदाचित् ही किसी ने लिखी हो । कैसा अगाध प्रेम है, जिसकी थाह वह अब तक स्वय न पा सका था । उसका जीवन सचित ईश्वर-विश्वास गायब हो जाता है । वह ईश्वर को अपशब्द कहता हुआ, सासारिक भोग विलास को स्वर्ग और धर्म के सुखों से कहीं उत्तम, वाञ्छनीय बतलाता हुआ हमसे सदैव के लिए विदा हो जाता है । वह अहकार की सजीव मूर्ति है—यह विभाव एक क्षण के लिए भी इसका गला नहीं छोड़ता । निसियास विधर्मी है, लेकिन विलासप्रियता के साथ वह कितना सहृदय, कितना सहिष्णु, कितना शान्त प्रकृत है । उसकी विनय-पूर्ण बातों का उत्तर जब पापनाशी देता है तो उसकी सकीर्णता पराकाष्ठा को पहुँच जाती है । वह अहकार उस समय भी उसकी गर्दन पर सवार रहता है । जब वह थायस के साथ नगर से प्रस्थान करता है—कहता है—'स्त्री, तू जानती है कि तेरे

पापों का कितना बोझ है ?" यहाँ तक कि जब मूर्ख पाल सन्त एन्टोनी के प्रश्नों के उत्तर में स्वर्गशैय्या देखने की बात कहता है तो पापनाशी उछल पड़ता है कि कदाचित् वह शैय्या मेरे ही लिए बिछाई गई है, हालाँकि इस समय तक उसे अपने आत्मपतन का यथार्थ ज्ञान हो जाना चाहिए था।

लेकिन पापनाशी का चरित्र जितना ही मार्मिक है, उतना ही अरसिक है। उसकी धार्मिक वितंडाओं को सुनते सुनते जी ऊब जाता है और उसके प्रति मन में घृणा उत्पन्न हो जाती है। इसके प्रतिकूल थायस का चरित्र जितना ही मार्मिक है, उतना ही मनोहर है। फ्रांस के उपन्यासकारों में स्त्री-चरित्र की मीमांसा करने का विशेष गुण है। अनातोले महाशय ने थायस के चित्रण में स्त्री मनोभाव का जैसा सूक्ष्म परिचय दिया है वह साहित्य में एक दुर्लभ वस्तु है। वह साधारण स्थिति के माता पिता की कन्या है। पर मातृस्नेह से वंचित है। उसकी माता बड़ी गुस्सेवर, पैसों पर जान देनेवाली स्त्री है। थायस का मन बहलानेवाला, उससे प्रेम करनेवाला हब्शी गुलाम है, जिसका नाम अहमद है और जो गुप्त रीति से ईसाई धर्म का अनुयायी है। अहमद थायस के बालिका हृदय में ही ईसाइ धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर देता है। यहाँ तक कि उसका बप्तीसमा भी करा देता है। अहमद इसके कुछ दिनों बाद, जब थायस ग्यारह वर्ष की थी मार डाला गया, और अब थायस की रक्षा करनेवाला कोई न रहा। वह उच्चकोटि की स्त्रियों को देखती तो उसकी भी यही इच्छा होती कि मेरी सवारी भी इसी ठाट-बाट से निकलती। अन्त में एक कुटनी उसे बहका ले जाती है और थायस का जीवन-मार्ग निश्चित हो जाता है। अमीरों की सभाओं में नाचना गाना, नकलें करना उसका काम है। उसकी प्रखर बुद्धि थोड़े ही दिनों में इस कला में प्रवीण हो जाती है। तब वह अपनी जन्म भूमि इस्कन्द्रिया में चली आती है। पर यहाँ आने के पहले वह एक पुरुष की प्रेमिका रह चुकी है, और उसी विशुद्ध प्रेम को फिर भोगने की लालसा उसे विकल करती रहती है।

इस्कन्द्रिया में पहले तो उसके अभिनय कर में सफलता नहीं होती, पर थोड़े ही दिनों में वह वहाँ की नाट्यशालाओं का शृंगार बन जाती है। प्रेमियों की आमदरफ्त शुरू होती है, कञ्चन की वर्षा होने लगती है। किन्तु

थायस को इन प्रेमियों के साथ उस मौलिक, अद्भुत प्रेम का आनन्द नहीं प्राप्त होता, जिसके लिए उसका हृदय तड़पता रहता था। वह साधारण स्त्रियों की भाँति धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री थी। उसमें भक्ति थी, श्रद्धा थी, भय था। वह 'अज्ञात को जानने के लिए' उद्विग्न रहती थी, उसे भविष्य का सदा भय लगा रहता था। उसके प्रेमियों में सुखवादी निसियास भी था, लेकिन उसका मन निसियास से न मिलता था। वह कहती है—

'मुझे तुम जैसे प्राणियों से घृणा है जिनको किसी बात की आशा नहीं, किसी बात का भय नहीं। मैं ज्ञान की इच्छुक हूँ, सच्चे ज्ञान की इच्छुक हूँ।'

इसी 'ज्ञान' प्राप्त करने के उद्देश्य से वह दार्शनिकों के ग्रन्थों का अध्ययन करती, किन्तु जटिलता और भी जटिल होती जाती थी। एक दिन वह रात को भ्रमण करती हुई एक गिरजाघर में जा पहुँचती है। वहाँ उसे यह देखकर आश्चर्य होता है कि उसके गुलाम 'अहमद' की, जिसका ईसाई नाम 'थियोडोर' था, जयन्ती मनाई जा रही है। थायस भी सिर झुकाकर, बड़े दीन-भाव से थियोडोर की क़ब्र को चूमती है। उसके मन में यह प्रश्न होता है—वह कौन-सी वस्तु है जिसने थियोडोर को पूज्य बना दिया! वह घर लौटकर आती है तो निश्चय करती है कि मैं थियोडोर की भाँति त्यागी और दीन बनूँगी। वह निसियास से कहती है—

'मुझे उन सब प्राणियों से घृणा है जो सुखी हैं, जो धनी हैं।'

एक विलास भोगिनी स्त्री के मुख से यह वचन असगत-से जान पड़ते हैं किन्तु जो बड़े से बड़े शराबी हैं, वह शराब के बड़े से बड़े निन्दक देखे जाते हैं। मनुष्य के व्यवहार और विचारों में असादृश्य मनोभावों का एक साधारण रहस्य है। थायस को आत्मविलास में भी शान्ति नहीं। अपनी सारी सम्पत्ति को अग्नि की भेंट करने के बाद जब पापनाशी के साथ चलती है, उस समय वह निसियास से कहती है—

'निसियास, मैं तुम जैसे प्राणियों के साथ रहते रहते तंग आ गई हूँ मैं उन सब बातों से उकता गई हूँ जो मुझे ज्ञात हैं, और अब मैं अज्ञात की खोज में जाती हूँ।'

थायस यहाँ से मरुभूमि के एक महिलाश्रम में प्रविष्ट होती है और वहाँ

आदर्श जीवन का अनुसरण करके वह थोड़े ही दिनों में 'सत' पद को प्राप्त कर लेती है। थायस विलासिनी होने पर भी सरल प्रकृति, दयालु रमणी है। एक समालोचक ने यथार्थतः उसे Immoral immortal कहा है और बहुत सत्य कहा है। थायस अमर है। यद्यपि थायस का शव खोद निकाला गया है, लेकिन अनातोले फ्रांस ने उससे कहीं बड़ा काम किया है, उसने थायस को बोलते सुना दिया और अभिनय करते दिखा दिया। पापनाशी के साथ आश्रम को आते हुए वह कहती है—

'मैंने ऐसा निर्मल जल नहीं पिया और ऐसी पवित्र वायु में साँस नहीं लिया। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस चलती हुई वायु में ईश्वर तैर रहा है।'

कितने भक्तिपूर्ण शब्द हैं।

लेखक ने थायस के चरित्र लेखन में जहाँ इतनी कुशलता दिखाई है वहाँ उसे अत्यन्त भीरु बना दिया है, यहाँ तक कि जब उसे पापनाशी के विषय में यह पूर्ण विश्वास हो जाता है कि वह मुझे अनन्तजीवन प्रदान कर सकता है, अर्थात् वह औषधियाँ जानता है कि जिनके सेवन से वृद्धावस्था पास न आये, तो वह कुछ भय से, कुछ उसे लुब्ध करने के लिए उसके साथ सभोग करने को प्रस्तुत हो जाती है। यद्यपि पापनाशी की सयमशीलता उसे इस प्रलोभन का शिकार होने से बचा लेती है, तथापि थायस की वह निर्लज्जता कुछ अस्वाभाविक सी प्रतीत होती है। वेश्याएँ भी यों सबके साथ अपनी लाज नहीं खोया करतीं। उनमें भी आत्माभिमान की मात्रा होती है, विशेषत जब वह थायस की भाँति विपुल-धन सम्पन्ना हों।

पापनाशी के चरित्र चित्रण में भी जो बात खटकती है वह अनैसर्गिक विषयों का समावेश है। जब वह थायस का उद्धार करने के लिए इस्कन्द्रिया पहुँचता है, उस समय उसे एक स्वप्न दिखाई देता है, जो उसके स्वर्ग नरक के सिद्धान्त को भ्रान्ति में डाल देता है। इसी भाँति जब वह थायस को आश्रम में पहुँचाकर फिर अपने आश्रम में लौट आता है तो उसकी कुटी में गीदड़ों की भरमार होने लगती है। एक और उदाहरण लीजिए। जब वह स्तम्भ पर बैठा हुआ तपस्या करता है तो एक दिन उसके कानों में आवाज़

आती है, पापनाशी 'उठ और ईश्वर की कीर्ति को उज्ज्वल कर, बीमारों को आरोग प्रदान कर' इसके बाद वही आवाज़ उसे फिर स्तम्भ से नीचे उतरने को कहती है, किन्तु सीढ़ी द्वारा नहीं, बल्कि फाँदकर। पापनाशी फाँदने की चेष्टा करता है तो उसके कानों में हँसी की आवाज आती है। तब पापनाशी भयभीत होकर चौंक पड़ता है। उसे विदित हो जाता है कि शैतान मुझे परीक्षा में डाल रहा है। इन शंकाओं का समाधान केवल इसी विचार से किया जा सकता है कि यह सब पापनाशी के अहंकारमय हृदय के विचार थे जो यह रूप धारण करके उसकी आन्तरिक इच्छाओं और भावों को प्रकट करते थे। जो मनुष्य यह कहे कि—

'सद्पुरुषों की आत्माएँ दुष्टों की आत्माओं से कहीं ज्यादा कलुषित होती हैं, क्योंकि समस्त संसार के पाप उसमें प्रविष्ट होते हैं।'

जो प्राणी ईश्वर से यह प्रार्थना करे कि—

'भगवान मुझ पर प्राणिमात्र की कुवासनाओं का भार रख दीजिए, मैं उन सबों का प्रायश्चित करूँगा।'

उसके सगर्व अन्तःकरण की दुरिच्छाएँ दुस्स्वप्नों का रूप धारण कर लें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

भाषा के सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है। एक तो यह अनुवाद का अनुवाद है, दूसरे फ्रेंच जैसी समुन्नत भाषा की पुस्तक का, और फिर अनुवादक भी वह प्राणी है जो इस काम में अभ्यस्त नहीं, तिस पर भी दो-तीन स्थलों पर पाठकों को लेखक की प्रखर लेखनी की कुछ झलक दिखाई देगी। निसियास ने थायस से विदा लेते समय कितनी ओजस्विनी और मर्मस्पर्शी भाषा में अपने भावों को प्रकट किया है! और पापनाशी के उस समय के मनोद्गार जब उसे थायस के मरने की खबर मिलती है, इतने चोटीले हैं कि बिना हृदय को थामे उन्हें पढ़ना कठिन है!

इन चन्द शब्दों के साथ हम इस पुस्तक को पाठकों को भेंट करते हैं। हमको पूर्ण आशा है कि सुविज्ञ इस रसोद्यान का आनन्द उठायेंगे। हमने इसका अनुवाद केवल इसलिए किया है कि हमें यह पुस्तक सर्वाङ्ग-सुन्दर प्रतीत हुई और हमें यह कहने में संकोच नहीं है कि इससे सुन्दर साहित्य

हमने अंग्रेजी में नहीं देखा। हम उन लोगों मे हैं जो यह धारणा रखते हैं कि अनुवादों से भाषा का गौरव चाहे न बढे, साहित्यिक ज्ञान अवश्य बढता है। एक विद्वान का कथन है कि 'थायस' ने अतीत काल पर पुनर्विजय प्राप्त कर लिया है और इस कथन में लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं है।

मूल पुस्तक में यूनान, मिस्र आदि देशा के इतने नामों और घटनाओं का उल्लेख था कि उन्हें समझने के लिए अलग एक टीका लिखनी पडती। इसलिए हमने यथास्थान कुछ काट-छाँट कर दी है, पर इसका विचार रखा है कि पुस्तक के सारस्य मे विघ्न न पड़ने पाये। 'पापनाशी' मूल में 'पापन्युशियस' था। सरलता के विचार से हमने थोड़ा सा रूपान्तर कर दिया है।

एक शब्द और। कुछ लोगों की सम्मति है कि हमें अनुवादों को स्वजातीय रूप देकर प्रकाशित करना चाहिए। नाम सब हिन्दू होने चाहिएँ। केवल आधार मूल पुस्तक का रहना चाहिए। मैं इस सम्मति का घोर विरोधी हूँ। साहित्य में मूल विषय के अतिरिक्त और भी कितनी ही बातें समाविष्ट रहती हैं। उसमें यथास्थान ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक आदि अनेक विषयों का उल्लेख किया जाता है। मूल आधार लेकर शेष बातों को छोड देना वैसा ही है जैसे कोइ आदमी थाली की रोटियाँ खा ले और दाल, भाजी, चटनी अचार सब छोड़ दे। अन्य भाषाओं की पुस्तकों का महत्व केवल साहित्यिक नहीं होता। उनसे हमें उनके आचार विचार, रीति-रिवाज आदि बातों का ज्ञान भी प्राप्त होता है। इसलिए मैंने इस पुस्तक का 'अपनाने' की चेष्टा नहीं की। मिस्र की मरुभूमि में जो वृक्ष फलता-फूलता है, वह मानसरोवर के तट पर नहीं पनप सकता।

—प्रेमचंद

उन दिनों नील नदी के तट पर बहुत से तपस्वी रहा करते थे। दोनों ही किनारों पर कितनी ही झोपड़ियाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनी हुई थीं। तपस्वी लोग इन्हीं में एकान्तवास करते थे और ज़रूरत पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करते थे। इन्हीं झोपड़ियों के बीच में जहाँ तहाँ गिरजे बने हुए थे। प्राय सभी गिरजाघरों पर सलीब का आकार दिखाइ देता था। धर्मोत्सवों पर साधु सन्त दूर-दूर से यहाँ आ जाते थे। नदी के किनारे जहाँ तहाँ मठ भी थे, जहाँ तपस्वी लोग अकेले छोटी-छोटी गुफाओं मे सिद्धि प्राप्त करने का यत्न करते थे।

यह सभी तपस्वी बड़े बड़े कठिन व्रत धारण करते थे, केवल सूर्यास्त के बाद एक बार सूक्ष्म आहार करते। रोटी और नमक के सिवाय और किसी वस्तु का सेवन न करते थे। कितने ही तो समाधियों या कन्दराओं में पडे रहते थे। सभी ब्रह्मचारी थे, सभी मिताहारी थे। वह ऊन का एक कुरता और कन्टोप पहनते थे, रात को बहुत देर तक जागते और भजन करने के पीछे भूमि पर सो जाते थे। अपने पूर्व पुरुष के पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए वह अपनी देह को भोग विलास ही से दूर नहीं रखते थे, वरन् उसकी इतनी रक्षा भी न करते थे जो वर्तमान काल मे अनिवार्य्य समझी जाती है। उनका विश्वास था कि देह को जितना कष्ट दिया जाय, वह जितनी रुग्णावस्था में हो, उतनी ही आत्मा पवित्र होती है। उनके लिए कोढ और फोडों से उत्तम श्रृंगार की कोई वस्तु न थी।

इस तपोभूमि में कुछ लोग तो ध्यान और तप में जीवन को सफल करते थे, पर कुछ ऐसे लोग भी थे जो ताड़ की जटाओ को बटकर किसानों के लिए रस्सियाँ बनाते, या फल के दिनो म कृषकों की सहायता करते थे। शहर के रहनेवाले समझते थे कि यह चोरों और डाकुओं का गरोह है, यह सब अरब के लुटेरो से मिलकर क़ाफ़िलों को लूट लेते हैं। किन्तु यह भ्रम था। तपस्वी धन को तुच्छ समझते थे, आत्मोद्धार ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। उनके तेज की ज्योति आकाश को भी आलोकित कर दती थी।

/

स्वर्ग के दूत युवकों या यात्रियों का वेष रखकर इन मठों में आते थे। इसी प्रकार राक्षस और दैत्य हबशियों या पशुओं का रूप धरकर इस धर्माश्रम में तपस्वियो को बहकाने के लिए विचरा करते थे। जब ये भक्तगण अपने अपने घड़े लेकर प्रात काल सागर की ओर पानी भरने जाते थे तो उन्हें राक्षसों और दैत्यों के पदचिन्ह दिखाई देते । यह धर्माश्रम वास्तव में एक समरक्षेत्र था जहाँ नित्य और विशेषत. रात को स्वर्ग और नरक, धर्म और अधर्म में भीषण सग्राम होता रहता था। तपस्वी लोग स्वर्गदूतों तथा ईश्वर की सहायता से व्रत, ध्यान और तप से—इन पिशाच सेनाओं के आघातों का निराकरण करते थे। कभी इन्द्रिय जनित वासनाएँ उनके मर्मस्थल पर ऐसा अकुश लगाती थीं कि वे पीडा से विकल होकर चीखने लगते थे और उनकी आर्तध्वनि वन पशुओं का गरज के साथ मिलकर तारों से भूषित आकाश तक गूँजने लगती थी। तब वही राक्षस और दैत्य मनोहर वेष धारण कर लेते थे, क्योंकि यद्यपि इनकी सूरत बहुत भयकर होती है, पर वह कभी-कभी सुन्दर रूप धर लिया करते हैं, जिसमे उसकी पहचान न हो सके। तपस्वियों को अपनी कुटियों में वासनाओं के ऐसे दृश्य देखकर विस्मय होता था जिन पर उस समय धुरन्धर विश्वासियों का चित्त मुग्ध हो जाता। लेकिन सलीब की शरण में बैठे हुए तपस्वियों पर उनके प्रलोभनों का कुछ असर न होता था, और यह दुष्टात्माएँ सूर्योदय होते ही अपना यथार्थ रूप धारण करके भाग जाती थीं। प्रात काल इन दुष्टों को रोते हुए भागते देखना का असाधारण बात न थी। कोई उनसे पूछता तो कहते 'हम इसलिए रो रहे कि तपस्वियों ने हमको मारकर भगा दिया है।'

धर्माश्रम के सिद्ध पुरुषों का समस्त देश के दुर्जनों और नास्तिकों प आतक-सा छाया हुआ था। कभी कभी उनकी धर्म परायणता बड़ा विकराल रूप धारण कर लेती थी। उन्हें धर्म स्मृतियों ने ईश्वर-विमुख प्राणियों क दण्ड देने का अधिकार प्रदान कर दिया था और जो कोई उनके कोप क भागी होता था उसे ससार की कोई शक्ति बचा न सकती थी। नगरों में यह तक कि इस्कन्द्रिया में भी इन भीषण यत्रणाओं की अद्भुत दन्त कथाएँ फैली हुई थीं। एक महात्मा ने कई दुष्टों को अपने सोटे से मारा, जमीन फट गा

और वह उसमें समा गये। अत दुष्टजन विशेषकर मदारी, विवाहित पादरी और वेश्याएँ, इन तपस्वियों से थर-थर काँपते थे।

इन सिद्ध-पुरुषों के योगबल के सामने वन जन्तु भी शीश झुकाते थे। जब कोई योगी मरणासन्न होता तो एक सिंह आकर पंजों से उसकी कब्र खोदता था। इससे योगी को मालूम हो जाता था कि भगवान उसे बुला रहे हैं। वह तुरन्त जाकर अपने सहयोगियों के मुख चूमता था। तब क़ब्र में आकर समाधिस्थ हो जाता था।

अब तक इस तपाश्रम का प्रधान एन्टोनी था। पर अब उसकी अवस्था १७० वर्ष की हो चुकी थी। इसलिए वह इस स्थान को त्याग कर अपने दो शिष्यों के साथ जिनके नाम मकर और अमात्य थे, एक पहाड़ी में विश्राम करने चला गया था। अब इस आश्रम में पापनाशी नाम के एक साधू से बड़ा और कोई महात्मा न था। उसके सत्कर्मों की कीर्ति दूर दूर फैली हुई थी। और कई तपस्वी थे जिनके अनुयायियों की संख्या अधिक थी और जो अपने आश्रम के शासन में अधिक कुशल थे। लेकिन पापनाशी व्रत और तप में सबसे बढ़ा हुआ था, यहाँ तक कि वह तीन तीन दिन अनशन व्रत रखता था, रात को और प्रात काल अपने शरीर को बाणों से छेदता था और घण्टों भूमि पर मस्तक नवाये पड़ा रहता था।

उसके २४ शिष्यों ने अपनी अपनी कुटियाँ उसकी कुटी के आस-पास बना ली थीं और योगक्रियाओं में उसी के अनुगामी थे। इन धर्मपुत्रों में ऐसे ऐसे मनुष्य थे जिन्होंने वर्षों डकैतियाँ की थीं, जिनके हाथ रक्त से रँगे हुए थे, पर महात्मा पापनाशी के उपदेशों के वशीभूत होकर वह अब धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे और अपने पवित्र आचरणों से अपने सहवर्गियों को चकित कर देते थे। एक शिष्य, जो पहले हब्श देश की रानी का बावरची था, नित्य रोता रहता था। एक और शिष्य फलदा नाम का था जिसने पूरी बाइबिल कण्ठ कर ली थी और वाणी में भी निपुण था। लेकिन जो शिष्य आत्म शुद्धि में इन सबसे बढ़कर था वह पाल नाम का एक किसान युवक था। उसे लोग मूर्ख पाल कहा करते थे, क्योंकि वह अत्यन्त सरल हृदय था। लोग उसकी भोली भाली बातों पर हँसा करते थे, लेकिन ईश्वर की उस पर विशेष कृपा-

दृष्टि थी। वह आत्मदर्शी और भविष्यवक्ता था। उसे इलहाम हुआ करता था।

पापनाशी का जीवन अपने शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा और आत्म शुद्धि की क्रियाओं में कटता था। वह रात भर बैठा हुआ बाइबिल की कथाओं पर मनन किया करता था कि उनमें दृष्टान्तों को ढूँढ निकाले। इसलिए अवस्था के न्यून होने पर भी वह नित्य परोपकार में रत रहता था। पिशाचगण जो अन्य तपस्वियों पर आक्रमण करते थे, उसके निकट जाने का साहस न कर सकते थे। रात को सात शृगाल उसकी कुटी के द्वार पर चुपचाप बैठे रहते थे। लोगों का विचार था कि यह सातों दैत्य थे जो उसके योगबल के कारण चौखट के अन्दर पाँव न रख सकते थे।

पापनाशी का जन्मस्थान इस्कन्द्रिया था। उसके माता-पिता ने उसे भौतिक विद्या की ऊँची शिक्षा दिलाई थी। उसने कवियों के शृंगार का आस्वादन किया था और यौवनकाल में ईश्वर के अनादित्व, बल्कि अस्तित्व पर भी, दूसरों से वाद विवाद किया करता था। इसके पश्चात् कुछ दिन तक उसने धनी पुरुषों के प्रथानुसार ऐन्द्रिय सुख भोग में व्यतीत किये, जिसे याद करके अब लज्जा और ग्लानि से उसको अत्यन्त पीड़ा होती थी। वह अपने सहचरों से कहा करता, 'उन दिनों मुझ पर वासना का भूत सवार था।' इसका आशय यह कदापि न था कि उसने व्यभिचार किया था, बल्कि केवल इतना कि उसने स्वादिष्ट भोजन किया था और नाट्यशालाओं में तमाशा देखने जाया करता था। वास्तव में २० वर्ष की अवस्था तक उसने उस काल के साधारण मनुष्यों की भाँति जीवन व्यतीत किया था। वही भोग-लिप्सा अब उसके हृदय में काँटे के समान चुभा करती थी। दैवयोग से उन्हीं दिनों उसे मकर ऋषि के सदुपदेशों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसकी कायापलट हो गई। सत्य उसके रोम रोम में व्याप्त हो गया, भाले के समान उसके हृदय में चुभ गया। बतीसमा लेने के बाद वह साल भर तक और भद्र पुरुषों में रहा, पुराने संस्कारों से मुक्त न हो सका। लेकिन एक दिन वह गिरजाघर में गया और वहाँ उपदेशक को यह पद गाते हुए सुना—'यदि तू ईश्वर-भक्ति का इच्छुक है तो जा, जो कुछ तेरे पास हो उसे बेच डाल और गरीबों को देदे।' वह तुरन्त घर गया, अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर

ग़रीबों को दान कर दी और धर्माश्रम में प्रविष्ट हो गया। और दस साल तक संसार से विरक्त होकर वह अपने पापों का प्रायश्चित्त करता रहा।

एक दिन वह अपने नियमों के अनुसार उन दिनों का स्मरण कर रहा था, जब वह ईश्वर-विमुख था और अपने दुष्कर्मों पर एक एक करके विचार कर रहा था। सहसा उसे याद आया कि मैंने इस्कन्द्रिया की एक नाट्यशाला में थायस नाम की एक अति रूपवती नटी देखी थी। वह रमणी रंगशालाओं में नृत्य करते समय अंग प्रत्यंगों की ऐसी मनोहर छवि दिखाती थी कि दर्शकों के हृदय में वासनाओं की तरंगें उठने लगती थीं। वह ऐसा थिरकती थी, ऐसे भाव बताती थी, लालसाओं का ऐसा नग्न चित्र खींचती थी कि सजीले युवक और धनी वृद्ध कामातुर होकर उसके गृहद्वार पर फूलों की मालाएँ भेंट करने के लिए आते। थायस उनका सहर्ष स्वागत करती और उन्हें अपनी अङ्कस्थली में आश्रय देती। इस प्रकार वह केवल अपनी ही आत्मा का सर्वनाश न करती थी, वरन् दूसरों की आत्माओं का भी खून करती थी।

पापनाशी स्वयं उसके मायापाश में फँसते फँसते रह गया था। वह काम-तृष्णा से उन्मत्त होकर एक बार उसके द्वार तक चला गया था। लेकिन वारांगना के चौखट पर वह ठिठक गया, कुछ तो उठती हुई जवानी की स्वाभाविक कातरता के कारण और कुछ इस कारण कि उसकी जेब में रुपये न थे, क्योंकि उसकी माता इसका सदैव ध्यान रखती थी कि वह धन का अपव्यय न कर सके। ईश्वर ने इन्हीं दो साधनों द्वारा उसे पाप के अग्नि कुण्ड में गिरने से बचा लिया। किन्तु पापनाशी ने इस असीम दया के लिए ईश्वर को धन्यवाद नहीं दिया, क्योंकि उस समय उसके ज्ञानचक्षु बन्द थे। वह न जानता था कि मैं मिथ्या आनन्द भोग की धुन में पड़ा हूँ। अब अपनी एकान्त कुटी में उसने पवित्र सलीब के सामने मस्तक झुका दिया और योग के नियमों के अनुसार बहुत देर तक थायस का स्मरण करता रहा, क्योंकि उसने मूर्खता और अन्धकार के दिनों में उसके चित्त को इन्द्रिय सुख-भोग की इच्छाओं से आन्दोलित किया था। कई घण्टे ध्यान में डूबे रहने के बाद थायस की स्पष्ट और सजीव मूर्ति उसके हृदय नेत्रों के आगे आ

खड़ी हुई। अब भी उसकी रूपशोभा उतनी ही अनुपम थी जितनी उस समय जब उसने उसकी कुवासनाओं को उत्तेजित किया था। वह बड़ी कोमलता से गुलाब के सेज पर सिर झुकाये लेटी हुई थी। उसके कमल नेत्रों में एक विचित्र आर्द्रता, एक विलक्षण ज्योति थी। उसके नथने फड़क रहे थे, अधर कली की भाँति अधखुले हुए थे और उसकी बाँहें दो जलधाराओं के सदृश निर्मल और उज्ज्वल थीं। यह मूर्ति देखकर पापनाशी ने अपनी छाती पीट-कर कहा—

'भगवन्! तू साक्षी है कि मैं पापों को कितना घोर और घातक समझ रहा हूँ।'

धीरे धीरे इस मूर्ति का मुख विकृत होने लगा, उसके ओठ के दोनों कोने नीचे को झुककर उसकी अन्तवेंदना को प्रकट करने लगे। उसकी बड़ी बड़ी आँखें सजल हो गईं। उसका वक्ष उच्छ्वासों से आन्दोलित होने लगा मानों तूफ़ान के पूर्व हवा सनसना रही हो! यह कुतूहल देखकर पाप-नाशी को मर्मवेदना होने लगी। भूमि पर सिर नवाकर उसने यों प्रार्थना की—

'करुणामय! तूने हमारे अन्तःकरण को दया से परिपूरित कर दिया है, उसी भाँति जैसे प्रभात के समय खेत हिमकणों से परिपूरित होते हैं। मैं तुझे नमस्कार करता हूँ। तू धन्य है। मुझे शक्ति दे कि तेरे जीवों को तेरी दया की ज्योति समझकर प्रेम करूँ, क्योंकि संसार में सब कुछ अनित्य है, एक तू ही नित्य, अमर है। यदि इस अभागिनी स्त्री के प्रति मुझे चिन्ता है तो इसका यही कारण है कि वह तेरी ही रचना है। स्वर्ग के दूत भी उस पर दयाभाव रखते हैं। भगवन् क्या, क्या यह तेरे ही ज्योति का प्रकाश नहीं है? उसे इतनी शक्ति दे कि वह इस कुमार्ग को त्याग दे। तू दयासागर है, उसके पाप महाघोर, घृणित हैं और उनके कल्पनामात्र ही से मुझे रोमांच हो जाता है। लेकिन वह जितनी पापिष्ठा है, उतना ही मेरा चित्त उसके लिए व्यथित हो रहा है। मैं यह विचार करके व्यग्र हो जाता हूँ कि नरक के दूत अनन्तकाल तक उसे जलाते रहेंगे।'

वह यही प्रार्थना कर रहा था कि उसमें अपने पैरों के पास एक गीदड़ को पड़े हुए देखा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसकी कुटी का द्वार

बन्द था। ऐसा जान पड़ता था कि वह पशु उसके मनोगत विचारों को भाँप रहा है। वह कुत्ते की भाँति पूँछ हिला रहा था। पापनाशी ने तुरत सलीब का आकार बनाया और पशु लुप्त हो गया। उसे तब ज्ञात हुआ कि आज पहली बार राक्षस ने मेरी कुटी में प्रवेश किया। उसने चित्त शान्ति के लिए छोटी सी प्रार्थना की और फिर थायस का ध्यान करने लगा।

उसने अपने मन में निश्चय किया 'हरीच्छा से मैं अवश्य उसका उद्धार करूँगा।' तब उसने विश्राम किया।

दूसरे दिन ऊषा के साथ उसकी निद्रा भी खुली। उसने तुरन्त ईश वंदना की और पालम सन्त से मिलने गया जिनका आश्रम वहाँ से कुछ दूर था। उसने सन्त महात्मा को अपने स्वभाव के अनुसार प्रफुल्ल चित्त से भूमि खोदते पाया। पालम बहुत वृद्ध थे। उन्होंने एक छोटी सी फुलवाड़ी लगा रखी थी। वनजन्तु आकर उनके हाथों को चाटते थे और पिशाचादि कभी उन्हें कष्ट न देते थे।

उन्होंने पापनाशी को देखकर नमस्कार किया।

पापनाशी ने उत्तर देते हुए कहा—भगवान तुम्हें शान्ति दे।

पालम—तुम्हें भी भगवान् शान्ति दे। यह कहकर उन्होंने माथे का पसीना अपने कुरते की आस्तीन से पोछा।

पापनाशी—बन्धुवर, जहाँ भगवान की चर्चा होती है वहाँ भगवान अवश्य वर्तमान रहते हैं। हमारा धर्म है कि अपने सम्भाषणों में भी ईश्वर की स्तुति ही किया करें। मैं इस समय ईश्वर की कीर्ति प्रसारित करने के लिए एक प्रस्ताव लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

पालम—बन्धु पापनाशी, भगवान् तुम्हारे प्रस्ताव को मेरे काहू के बेलों की भाँति सफल करे। वह नित्य प्रभात को मेरी वाटिका पर ओस बिन्दुओं के साथ अपनी दया की वर्षा करता है और उसके प्रदान किये हुए खीरों और खरबूजों का आस्वादन करके मैं उसकी असीम वात्सल्य की जयजयकार मनाता हूँ। उससे यही याचना करनी चाहिए कि हमें अपनी शांति की छाया में रखे। क्योंकि मन को उद्विग्न करनेवाले भीषण दुरावेगों से अधिक भयकर और कोई वस्तु नहीं है। जब यह मनोवेग जाग्रत हो जाते हैं तो हमारी दशा

मतवालों की सी हो जाती है, हमारे पैर लड़खड़ाने लगते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि अब औंधे मुँह गिरे। कभी कभी इन मनोवेगों के वशीभूत होकर हम घातक सुख भोग में मग्न हो जाते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आत्म वेदना और इन्द्रियों की अशांति हमें नैराश्य नद में डुबा देती है, जो सुखभंग से वहीं सर्वनाशक है। बन्धुवर, मैं एक महान् पापी प्राणी हूँ, लेकिन मुझे अपने दीर्घ जीवन काल में यह अनुभव हुआ है कि योगी के लिए इस मलिनता से बड़ा और कोई शत्रु नहीं है। इससे मेरा अभिप्राय उस असाध्य उदासीनता और क्षोभ से है जो कुहरे की भाँति आत्मा पर परदा डाले रहती है और ईश्वर की ज्योति को आत्मा तक नहीं पहुँचने देती। मुक्ति मार्ग में इससे बड़ा और कोई बाधा नहीं है, और असुर राज की सबसे बड़ी जीत यही है कि वह एक साधु पुरुष के हृदय में क्षुब्ध और मलिन विचार अंकुरित कर दे। यदि वह हमारे ऊपर मनोहर प्रलोभनों ही से आक्रमण करता तो बहुत भय की बात न थी। पर शोक! वह हमें क्षुब्ध करके बाजी मार ले जाता है। पिता एन्टोनी को कभी किसी ने उदास या दुखी नहीं देखा। उनका मुखड़ा नित्य फूल के समान खिला रहता था। उनके मधुर मुसकान ही से भक्तों के चित्त को शान्ति मिलती थी। अपने शिष्यों में कितने प्रसन्न-चित्त रहते थे। उनकी मुखकान्ति कभी मनोमालिन्य से धुँधली नहीं हुई। लेकिन हाँ, तुम किस प्रस्ताव की चर्चा कर रहे थे?

पापनाशी—बन्धु पालम, मेरे प्रस्ताव का उद्देश्य केवल ईश्वर के माहात्म्य को उज्ज्वल करना है। मुझे अपने सद्परामर्श से अनुगृहीत कीजिए, क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं और पाप की वायु ने कभी आपको स्पर्श नहीं किया।

पालम—बन्धु पापनाशी, मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि तुम्हारे चरणों की रज भी माथे पर लगाऊँ और मेरे पापों की गणना मरुस्थल के बालुकणों से भी अधिक है। लेकिन मैं वृद्ध हूँ और मुझे जो कुछ अनुभव है, उससे तुम्हारी सहर्ष सेवा करूँगा।

पापनाशी—तो फिर आपसे स्पष्ट कह देने में कोई सकोच नहीं है कि मैं इस्कन्द्रिया में रहनेवाली 'थायस' नाम की एक पतित स्त्री की अधोगति से

बहुत दुखी हूँ। वह समस्त नगर के लिए कलंक है और अपने साथ कितनी ही आत्माओं का सर्वनाश कर रही है।

पालम—बन्धु पापनाशी, यह ऐसी व्यवस्था है जिस पर हम जितने आँसू बहावें कम हैं। भद्र श्रेणी में कितनी ही रमणियों का जीवन ऐसा ही पापमय है। लेकिन इस दुरवस्था के लिए तुमने कोई निवारण विधि सोची है?

पापनाशी—बन्धु पालम, मैं इस्कन्द्रिया जाऊँगा, इस वेश्या को तलाश करूँगा और ईश्वर की सहायता से उसका उद्धार करूँगा। यही मेरा संकल्प है। आप इसे उचित समझते हैं?

पालम—प्रिय बन्धु, मैं एक अधम प्राणी हूँ किन्तु हमारे पूज्य गुरु एन्टोनी का कथन था कि मनुष्य को अपना स्थान छोड़कर कहीं और जाने के लिए उतावली न करनी चाहिए।

पापनाशी—पूज्य बन्धु क्या आपको मेरा प्रस्ताव पसन्द नहीं है?

पालम—प्रिय पापनाशी, ईश्वर न करे कि मैं अपने बन्धु के विशुद्ध भावों पर शंका करूँ, लेकिन हमारे श्रद्धेय गुरु एन्टोनी का यह भी कथन था कि जैसे मछलियाँ सूखी भूमि पर मर जाती हैं, वही दशा उन साधुओं की होती है जो अपनी कुटी छोड़कर संसार के प्राणियों से मिलते जुलते हैं। वहाँ भलाई की कोई आशा नहीं।

यह कहकर संत पालम ने फिर कुदाल हाथ में ली और धरती गोड़ने लगे। वह फल से लदे हुए एक अंजीर के वृक्ष की जड़ों पर मिट्टी चढ़ा रहे थे। वह कुदाल चला ही रहे थे कि झाड़ियों में सनसनाहट हुई और एक हिरन बाग के बाड़े के ऊपर से कूदकर अन्दर आ गया। वह सहमा हुआ था, उसकी कोमल टाँगें काँप रही थीं। वह सन्त पालम के पास आया और अपना मस्तक उनकी छाती पर रख दिया।

पालम ने कहा—ईश्वर को धन्य है जिसने इस सुन्दर वनजन्तु की सृष्टि की।

इसके पश्चात् पालम सन्त अपने झोपड़े में चले गये। हिरन भी उनके पीछे-पीछे चला। सन्त ने तब ज्वार की रोटी निकाली और हिरन को अपने हाथों से खिलायी।

पापनाशी कुछ देर तक विचार में मग्न खड़ा रहा। उसकी आँखें अपने पैरों के पास पड़े हुए पत्थरों पर जमी हुई थीं। तब वह पालम सन्त की बातों पर विचार करता हुआ धीरे धीरे अपनी कुटी की ओर चला। उसके मन में इस समय भीषण संग्राम हो रहा था।

उसने सोचा—सन्त पालम की सलाह अच्छी मालूम होती है। वह दूरदर्शी पुरुष हैं। उन्हें मेरे प्रस्ताव के औचित्य पर सन्देह है, तथापि थायस को घातक पिशाचों के हाथों में छोड़ देना घोर निर्दयता होगी। ईश्वर मुझे प्रकाश और बुद्धि दे।

चलते चलते उसने एक तीतर को जाल में फँसे हुए देखा जो किसी शिकारी ने बिछा रखा था। यह तीतरी मालूम होती थी, क्योंकि उसने एक क्षण में नर को जाल के पास उड़कर और जाल के फन्दे को चोंच से काटते देखा, यहाँ तक कि जाल में तीतरी के निकलने भर का छिद्र हो गया। योगी ने घटना को विचारपूर्ण नेत्रों से देखा और अपनी ज्ञान शक्ति से सहज में इसका आध्यात्मिक आशय समझ लिया। तीतरी के रूप में थायस थी, जो पापजाल में फँसी हुई थी, और जैसे तीतर ने रस्सी का जाल काटकर उसे मुक्त कर दिया था, वह भी अपने योगबल और सदुपदेश से उन अदृश्य बंधनों को काट सकता था जिनमें थायस फँसी हुई थी। उसे निश्चय हो गया कि ईश्वर ने इस रीति से मुझे परामर्श दिया है। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसका पूर्व संकल्प दृढ़ हो गया, लेकिन फिर जो देखा, नर की टाँग उसी जाल में फँसी हुई थी जिसे काटकर उसने मादा को निवृत्त किया था तो वह फिर भ्रम में पड़ गया।

वह सारी रात करवटें बदलता रहा। उषाकाल के समय उसने एक स्वप्न देखा, थायस की मूर्ति फिर उसके सम्मुख उपस्थित हुई। उसके मुख चन्द्र पर कलुषित विलास की आभा न थी, न वह अपने स्वभाव के अनुसार रत्नजटित वस्त्र पहने हुए थी। उसका शरीर एक लम्बी चौड़ी चादर से ढँका हुआ था, जिससे उसका मुँह भी छिप गया था। केवल दो आँखें दिखाई दे रही थीं, जिनमें से गाढ़े आँसू बह रहे थे।

यह स्वप्न दृश्य देखकर पापनाशी शोक से विह्वल हो रोने लगा और

यह विश्वास करके कि यह दैवी आदेश है, उसका विकल्प शान्त हो गया। वह तुरन्त उठ बैठा, जरीब हाथ में ली जो ईसाई धर्म का एक चिन्ह था। कुटी के बाहर निकला, सावधानी से द्वार बन्द किया, जिसमें वनजन्तु और पक्षी अन्दर जाकर ईश्वर ग्रन्थ को गन्दा न कर दें जो उसके सिरहाने रखा हुआ था। तब उसने अपने प्रधान शिष्य 'फलदा' को बुलाया और उसे शेष २३ शिष्यों के निरीक्षण में छोड़कर, केवल एक ढीला ढाला चोगा पहने हुए नील नदी की ओर प्रस्थान किया। उसका विचार था कि लाइबिया होता हुआ मकदूनिया नरेश (सिकन्दर) के बसाये हुए नगर में पहुँच जाऊँ। वह भूख, प्यास और थकन की कुछ परवाह न करते हुए प्रातःकाल से सूर्यास्त तक चलता रहा। जब वह नदी के समीप पहुँचा तो सूर्य क्षितिज की गोद में आश्रय ले चुका था और नदी का रक्त-जल कंचन और अग्नि के पहाड़ों के बीच में लहरें मार रहा था।

वह नदी के तटवर्ती मार्ग से होता हुआ चला। जब भूख लगती किसी झोपड़ी के द्वार पर खड़ा होकर ईश्वर के नाम पर कुछ माँग लेता। तिरस्कारों, उपेक्षाओं और कटुवचनों को प्रसन्नता से शिरोधार्य करता था। साधु को किसी से अमर्ष नहीं होता। उसे न डाकुओं का भय था, न वन के जन्तुओं का, लेकिन जब किसी गाँव या नगर के समीप पहुँचता तो कतराकर निकल जाता। वह डरता था कि कहीं बालवृन्द उसे आँखमिचौनी खेलते हुए न मिल जायँ अथवा किसी कुएँ पर पानी भरनेवाली रमणियों से सामना न हो जाय जो घड़ों को उतारकर उससे हास परिहास कर बैठें। योगी के लिए यह सभी शंका की बातें हैं, न जाने कब भूत-पिशाच उसके कार्य में विघ्न डाल दें। उसे धर्म ग्रन्थों में यह पढ़कर भी शंका होती है कि भगवान् नगरों की यात्रा करते थे और अपने शिष्यों के साथ भोजन करते थे। योगियों की आचरण वाटिका के पुष्प जितने सुन्दर हैं, उतने ही कोमल भी होते हैं, यहाँ तक कि सांसारिक व्यवहार का एक झोंका भी उन्हें झुलसा सकता है, उनकी मनोरम शोभा को नष्ट कर सकता है। इन्हीं कारणों से पापनाशी नगरों और बस्तियों से अलग-अलग रहता था कि अपने स्वजातीय भाइयों को देखकर उसका चित्त उनकी ओर आकर्षित न हो जाय।

वह निर्जन मार्गों पर चलता था। सन्ध्या समय जब पक्षियों का मधुर कलरव सुनाई देता और समीर के मन्द झोंके आने लगते तो अपने कन्टोप को आँखों पर खींच लेता कि उस पर प्रकृति सौन्दर्य का जादू न चल जाय। इसके प्रतिकूल भारतीय ऋषि महात्मा प्रकृति-सौन्दर्य के रसिक होते थे। एक सप्ताह की यात्रा के बाद वह 'सिल सिल' नाम के एक स्थान पर पहुँचा। वहाँ नील नदी एक सकरी घाटी में होकर बहती है और उसके तट पर पर्वत श्रेणी की दुहरी मेंड़ सी बनी हुई है। इसी स्थान पर मिस्रनिवासी अपने पिशाच पूजा के दिनों में मूर्तियाँ अंकित करते थे। पापनाशी को एक वृहदाकार स्फिंक्स* ठोस पत्थर का बना हुआ दिखाई दिया। इस भय से कि इस प्रतिमा में अब भी पैशाचिक विभूतियाँ संचित न हों, पापनाशी ने सलीब का चिन्ह बनाया और प्रभु मसीह का स्मरण किया। तत्क्षण उसने प्रतिमा के एक कान में से एक चमगादड़ को उड़कर भागते देखा। पापनाशी को विश्वास हो गया कि मैंने उस पिशाच को भगा दिया जो शताब्दियों से इस प्रतिमा में अड्डा जमाये हुए था। उसका धर्मोत्साह बढ़ा, उसने एक पत्थर उठाकर प्रतिमा के मुँह पर मारा। चोट लगते ही प्रतिमा का मुख इतना उदास हो गया कि पापनाशी को उस पर दया आ गई। उसने उसे सम्बोधित करके कहा—हे प्रेत, तू भी उन प्रेतों की भाँति प्रभु पर ईमान ला जिन्हें प्रातःस्मरणीय एन्टोनी ने वन में देखा था, और मैं ईश्वर, उसके पुत्र और अलख के नाम पर तेरा उद्धार करूँगा।

यह वाक्य समाप्त होते ही स्फिंक्स के नेत्रों से अग्निज्योति प्रस्फुटित हुई, उसकी पलकें काँपने लगीं और उसके पाषाण-मुख से 'मसीह' की ध्वनि निकली, मानो पापनाशी के शब्द प्रतिध्वनित हो गये हों। अतएव पापनाशी ने दाहिना हाथ उठाकर उस मूर्ति को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार पाषाण हृदय में भक्ति का बीज आरोपित करके पापनाशी ने अपनी राह ली। थोड़ी देर के बाद घाटी चौड़ी हो गई। वहाँ किसी बड़े नगर के अवशिष्ट चिन्ह दिखाई दिये। बचे हुए मन्दिर जिन खम्भों पर अवलम्बित

* एक कल्पित जीव जिसका धड़ सिंह का होता है और मुख स्त्री का।

थे, वास्तव में उन बड़ी-बड़ी पाषाण-मूर्तियों ने ईश्वरीय प्रेरणा से पापनाशी पर एक लम्बी निगाह डाली। वह भय से काँप उठा। इस प्रकार वह १७ दिन तक चलता रहा, क्षुधा से व्याकुल होता तो वनस्पतियाँ उखाड़ कर खा लेता और रात को किसी भवन के खँड़हर में, जंगली बिल्लियों और चूहों के बीच में सो रहता। रात को ऐसी स्त्रियाँ भी दिखाई देती थीं जिनके पैरों की जगह काँटेदार पूँछ थी। पापनाशी को मालूम था कि यह नारकीय स्त्रियाँ हैं और वह सलीब के चिन्ह बनाकर भगा देता था।

अठारहवें दिन पापनाशी को बस्ती से बहुत दूर एक दरिद्र झोपड़ी दिखाई दी। वह खजूर के पत्तियों की थी और उसका आधा भाग बालू के नीचे दबा हुआ था। उसे आशा हुई कि इसमें अवश्य कोई साधु सन्त रहता होगा। उसके निकट आकर एक बिल के रास्ते से अन्दर झाँका (उसमें द्वार न थे) तो एक घड़ा, प्याज का एक गट्ठा और सूखी पत्तियों का बिछावन दिखाई दिया। उसने विचार किया यह अवश्य किसी तपस्वी की कुटिया है, और उनके शीघ्र ही दर्शन होंगे। हम दोनों एक दूसरे के प्रति शुभकामना-सूचक शब्दों का उच्चारण करेंगे। कदाचित् ईश्वर अपने किसी कौए द्वारा रोटी का एक टुकड़ा हमारे पास भेज देगा और हम दोनों मिलकर भोजन करेंगे।

मन में यह बातें सोचता हुआ उसने सन्त को खोजने के लिए कुटिया की परिक्रमा की। एक सौ पग भी न चला होगा कि उसे नदी के तट पर एक मनुष्य पल्थी मारे बैठा दिखाई दिया। वह नग्न था। उसके सिर और दाढ़ी के बाल सन हो गये थे और शरीर ईंट से भी ज्यादा लाल था। पापनाशी ने साधुओं के प्रचलित शब्दों में उसका अभिवादन किया—'बन्धु, भगवान् तुम्हें शान्ति दे, तुम एक दिन स्वर्ग के आनन्द लाभ करो।'

पर उस वृद्ध पुरुष ने इसका कुछ उत्तर न दिया, अचल बैठा रहा। उसने मानों कुछ सुना ही नहीं। पापनाशी ने समझा कि वह ध्यान में मग्न है। वह हाथ बाँधकर उकड़ूँ बैठ गया और सूर्यास्त तक ईश-प्रार्थना करता रहा। जब अब भी वह वृद्ध पुरुष मूर्तिवत् बैठा रहा तो उसने कहा—पूज्य पिता, अगर आपकी समाधि टूट गई है तो मुझे प्रभु मसीह के नाम पर आशीर्वाद दीजिए।

वृद्ध पुरुष ने उसकी ओर बिना ताके ही उत्तर दिया—

'पथिक, मैं तुम्हारी बात नहीं समझा और न प्रभु मसीह ही को जानता हूँ।' पापनाशी ने विस्मित होकर कहा—अरे! जिसके प्रति ऋषियों ने भविष्यवाणी की, जिसके नाम पर लाखों आत्माएँ बलिदान हो गई, जिसकी सीज़र ने भी पूजा की, और जिसका जयघोष सिलसिली की प्रतिमा ने अभी-अभी किया है, क्या उस प्रभु मसीह के नाम से भी तुम परिचित नहीं हो! क्या यह सम्भव है!

वृद्ध—हाँ मित्रवर, यह सम्भव है, और यदि संसार में कोई वस्तु निश्चित होती तो निश्चित भी होता।

पापनाशी उस पुरुष की अज्ञानावस्था पर बहुत विस्मित और दुखी हुआ, बोला, यदि तुम प्रभु मसीह को नहीं जानते तो तुम्हारा धर्म-कर्म सब व्यर्थ है, तुम कभी अनन्त-पद नहीं प्राप्त कर सकते।

वृद्ध—कर्म करना, या कर्म से हटना दोनों ही व्यर्थ हैं। हमारे जीवन और मरण में कोई भेद नहीं।

पापनाशी—क्या, क्या? क्या तुम अनन्त जीवन के आकांक्षी नहीं हो? लेकिन तुम तो तपस्वियों की भाँति वन्यकुटी में रहते हो!

'हाँ, ऐसा जान पड़ता है।'

'क्या मैं तुम्हें नग्न और विरत नहीं देखता?'

'हाँ ऐसा जान पड़ता है।'

'क्या तुम कन्द मूल नहीं खाते और इच्छाओं का दमन नहीं करते?'

'हाँ, ऐसा जान पड़ता है।'

'क्या तुमने संसार के माया-मोह को नहीं त्याग दिया है?'

'हाँ, ऐसा जान पड़ता है, मैंने उन मिथ्या वस्तुओं को त्याग दिया है, जिन पर संसार के प्राणी जान देते हैं।'

'तब तुम मेरी भाँति एकान्तसेवी, त्यागी और शुद्धाचरण हो। किन्तु मेरी भाँति ईश्वर की भक्ति और अनन्त सुख की अभिलाषा से यह व्रत नहीं धारण किया है। अगर तुम्हें प्रभु मसीह पर विश्वास नहीं है तो तुम क्यों

सात्विक बने हुए हो ! अगर तुम्हें स्वर्ग के अनन्त सुख की अभिलाषा नहीं है तो ससार के पदार्थों को क्यों नहीं भोगते ?'

वृद्ध पुरुष ने गम्भीर भाव से जवाब दिया—मित्र, मैंने ससार की उत्तम वस्तुओं का त्याग नहीं किया है और मुझे इसका गर्व है कि मैंने जो जीवन पथ ग्रहण किया है वह सामान्यत सन्तोषजनक है, यद्यपि यथार्थ तो यह है कि ससार में उत्तम या निकृष्ट, भले या बुरे—जीवन का भेद ही मिथ्या है। कोई वस्तु स्वत भली या बुरी, सत्य या असत्य, हानिकर या लाभकर, सुखमय या दुखमय नहीं होती। हमारा विचार ही वस्तुओं को इन गुणों से आभूषित करता है, उसी भाँति जैसे नमक भोजन को स्वाद प्रदान करता है।

पापनाशी ने अपवाद किया—तो तुम्हारे मतानुसार ससार में कोई वस्तु स्थायी नहीं है। तुम उस थके हुए कुत्ते की भाँति हो, जो कीचड़ में पड़ा सो रहा है—अज्ञान के अन्धकार में अपना जीवन नष्ट कर रहे हो। तुम प्रतिमावादियों से भी गये-गुजरे हो।

'मित्र, कुत्तों और ऋषियों का अपमान करना समान ही व्यर्थ है। कुत्ते क्या हैं, हम यह नहीं जानते। हमको किसी वस्तु का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं।'

'तो क्या तुम भ्रांतिवादियों में हो? क्या तुम उस निर्बुद्धि, कर्महीन सम्प्रदाय म हो, जो सूर्य के प्रकाश में, और रात्रि के अन्धकार में, कोई भेद नहीं कर सकते !

'हाँ मित्र, मैं वास्तव में भ्रमवादी हूँ। मुझे इस सम्प्रदाय में शान्ति मिलती है, चाहे तुम्हें हास्यास्पद जान पड़ता हो। क्योंकि एक ही वस्तु भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में भिन्न-भिन्न रूप धारण कर लेती है। इन विशाल मीनारों ही को देखो। प्रभात के पीत प्रकाश में वह केशर के कगूरों से दीख पड़ते हैं। सन्ध्या समय सूर्य की ज्योति दूसरी ओर पड़ती है और यह काले काले त्रिभुजों के सदृश दिखाई देते हैं। यथार्थ में किस रंग के हैं, इसका निश्चय कौन करेगा! बादलों ही को देखो। वह कभी अपनी दमक से कुन्दन को लजाते हैं, कभी अपनी कालिमा से अन्धकार को मात करते हैं। विश्व के सिवाय और कौन ऐसा निपुण है जो उनके विविध आवरणों की छाया उतार सके!

शहर की गलियों में फिरने लगे। नगे, सिर के बाल बढाये, मुँह से पिचकुर बहाते, कुत्तों की भाँति चिल्लाते रहते थे। लड़के उन पर पत्थर फेंकते और उन पर कुत्ते दौड़ाते। अन्त में तीनों मर गये और मेरे पिता ने अपने ही हाथों से उन तीनों को क़ब्र में सुलाया। पिताजी को भी इतना शोक हुआ कि उनका दाना-पानी छूट गया और वह अपरिमित धन रहते हुए भी भूख से तड़प-तड़पकर परलोक सिधारे। मैं एक विपुल सम्पत्ति का वारिस हो गया। लेकिन घरवालों की दशा देखकर मेरा चित्त ससार से विरक्त हो गया था। मैंने उस सम्पत्ति को देशाटन में व्यय करने का निश्चय किया। इटली, यूनान, अफ्रीका आदि देशों की यात्रा की, पर एक प्राणी भी ऐसा न मिला जो सुखी या ज्ञानी हो। मैंने इस्कन्द्रिया और एथेन्स में दर्शन का अध्ययन किया और उसके अपवादों को सुनते मेरे कान बहरे हो गये। निदान देश विदेश घूमता हुआ मैं भारतवर्ष में जा पहुँचा और वहाँ गगा तट पर मुझे एक नग्न पुरुष के दर्शन हुए जो वहीं ३० वर्षों से मूर्ति की भाँति निश्चल पद्मासन लगाये बैठे हुए थे। उनके तृणवत् शरीर पर लताएँ चढ गईं थीं और उनकी जटाओं में चिड़ियों ने घोंसले बना लिये थे। फिर भी वे जीवित थे। उसे देखकर मुझे अपने दोनों भाइयों की, भावज की, गवैये की, पिता की, याद आई और तब मुझे ज्ञात हुआ कि यही एक ज्ञानी पुरुष हैं। मेरे मन में विचार उठा कि मनुष्यों के दुख के तीन कारण होते हैं। या तो वह वस्तु नहीं मिलती जिसकी उन्हें अभिलाषा होती है, अथवा उसे पाकर उन्हें उसके हाथ से निकल जाने का भय होता है, अथवा जिस चीज को वह बुरा समझते हैं उसका उन्हें सहन करना पड़ता है। इन विचारों का चित्त से निकाल दो और सारे दुख आप ही आप शात हो जावेंगे। इन्हीं कारणों से मैंने निश्चय किया कि अब से किसी वस्तु की अभिलाषा न करूँगा। ससार के श्रेष्ठ पदार्थों का परित्याग कर दूँगा और उसी भारतीय योगी की भाँति मौन और निश्चल रहूँगा।

पापनाशी ने इस कथन को ध्यान से सुना और तब बोला—

टिमो, मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारा कथन बिलकुल अर्थ शून्य नहीं

है। संसार की धन सम्पत्ति को तुच्छ समझना बुद्धिमानों का काम है। लेकिन अपने अनन्त सुख की उपेक्षा करना परले सिरे की नादानी है। इससे ईश्वर के क्रोध की आशंका है। मुझे तुम्हारे अज्ञान का बड़ा दुःख है और मैं सत्य का उपदेश करूँगा जिसमें तुमको उसके अस्तित्व का विश्वास हो जाय और तुम आज्ञाकारी बालक के समान उसकी आज्ञा पालन करो।

टिमाक्लीज ने बात काटकर कहा—

नहीं नहीं, मेरे सिर पर अपने धर्म सिद्धान्तों का बोझ मत लादो। इस भूल में न पड़ो कि तुम मुझे अपने विचारों के अनुकूल बना सकोगे। यह तर्क वितर्क सब मिथ्या है। कोई मत न रखना ही मेरा मत है। किसी सम्प्रदाय में न होना ही मेरा सम्प्रदाय है। मुझे कोई दुःख नहीं, इसलिए कि मुझे किसी वस्तु की ममता नहीं। अपनी राह जाओ, और मुझे इस उदासीनावस्था से निकालने की चेष्टा न करो। मैंने बहुत कष्ट झेले हैं और यह दशा ठण्डे जल के स्नान करने की भाँति सुखकर प्रतीत हो रही है।

पापनाशी को मानव चरित्र का पूरा ज्ञान था। वह समझ गया कि इस मनुष्य पर ईश्वर की कृपादृष्टि नहीं हुई है और उसकी आत्मा के उद्धार का समय अभी दूर है। उसने टिमाक्लीज़ का खण्डन न किया कि कहीं उसकी उद्धारक शक्ति घातक न बन जाय क्योंकि विधर्मियों से शास्त्रार्थ करने में कभी कभी ऐसा हो जाता है कि उनके उद्धार के साधन उनके अपकार के मन्त्र बन जाते हैं। अतएव जिन्हें सद्ज्ञान प्राप्त है उन्हें बड़ी चतुराई से उसका प्रचार करना चाहिए। उसने टिमाक्लीज को नमस्कार किया और एक लम्बी साँस खींचकर रात ही को फिर अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

सूर्योदय हुआ तो उसने जल पक्षियों को नदी के किनारे एक पैर पर खड़े देखा। उनकी पीली और गुलाबी गर्दनों का प्रतिबिम्ब जल में दिखाई देता था। कोमल बेत वृक्ष अपनी हरी हरी पत्तियों को जल पर फैलाये हुए थे। स्वच्छ आकाश में सारसों का समूह त्रिभुज के आकार में उड़ रहा था और झाड़ियों में छिपे हुए बगुलों की आवाज सुनाई देती थी। जहाँ तक निगाह जाती थी नदी का हरा जल हल्कारें मार रहा था। उजले पालवाली नौकाएँ चिड़ियों की भाँति तैर रही थीं, और किनारों पर जहाँ-तहाँ श्वेत

भवन जगमगा रहे थे। तटों पर हल्का कुहरा छाया हुआ था और द्वीपों के आड़ से जो खजूर, फूल और फल के वृक्षों से ढके हुए थे बतख, लालसर, हारिल आदि चिड़ियाँ कलरव करती हुई निकल रही थीं। बायें ओर मरुस्थल तक हरे हरे खेतों और वृक्ष-पुंजों की शोभा आँखों को मुग्ध कर देती थी। पके हुए गेहूँ के खेतों पर सूर्य की किरणें चमक रही थीं और भूमि से भीनी भीनी सुगन्धि के झोंके आते थे। यह प्रकृति शोभा देखकर पापनाशी ने घुटनों पर गिरकर ईश्वर की वन्दना की—'भगवान्, मेरी यात्रा समाप्त हुई, तुझे धन्यवाद देता हूँ। दयानिधि, जिस प्रकार तूने इन अजीर के पौधों पर ओस के बूँदों की वर्षा की है, उसी प्रकार थायस पर, जिसे तूने अपने प्रेम से रचा है, अपनी दया की वृष्टि कर। मेरी हार्दिक इच्छा है कि वह तेरी प्रेममयी रक्षा के अधीन एक नव विकसित पुष्प की भाँति, स्वर्ग तुल्य जेरुशलम में अपनी यश और कीर्ति का प्रसार करे।'

और तदुपरान्त उसे जब कोई वृक्ष फूलों से सुशोभित अथवा कोई चमकीले परोंवाला पक्षी दिखाई देता तो उसे थायस की याद आती। कई दिन तक नदी के बायें किनारे पर, एक उर्वर और आबाद प्रान्त में चलने के बाद वह इस्कन्द्रिया नगर में पहुँचा, जिसे यूनानियों ने 'रमणीक' और 'स्वर्णमयी' की उपाधि दे रखी थी। सूर्योदय की एक घड़ी बीत चुकी थी, जब उसे एक पहाड़ी के शिखर पर वह विस्तृत नगर नजर आया, जिसकी छतें कंचनमयी प्रकाश में चमक रही थीं। वह ठहर गया और मन में विचार करने लगा—'यही वह मनोरम भूमि है जहाँ मैंने मृत्युलोक में पदार्पण किया, यहीं मेरे पापमय जीवन की उत्पत्ति हुई, यहीं मैंने विषाक्त वायु का आलिंगन किया, इसी विनाशकारी रक्त सागर में मैंने जल विहार किये। वह मेरा पालना है जिसके घातक गोद में मैंने काम मधुर लोरियाँ सुनीं। साधारण बोलचाल में कितना प्रतिभाशाली स्थान है, कितना गौरव से भरा हुआ। इस्कन्द्रिया! मेरी विशाल जन्मभूमि! तेरे बालक तेरा पुत्रवत् सम्मान करते हैं, यह स्वाभाविक है। लेकिन योगी प्रकृति को अवहेलनीय समझता है, साधु बहिरूप को तुच्छ समझता है, प्रभु मसीह का दास जन्मभूमि को विदेश समझता है, और तपस्वी इस पृथ्वी का प्राणी ही नहीं। मैं अपने

हृदय को तेरी ओर से फेर लिया हूँ। मैं तुझसे घृणा करता हूँ। मैं तेरी सम्पत्ति को, तेरी विद्या को, तेरे शास्त्रों को, तेरे सुख विलास को, और तेरी शोभा को घृणित समझता हूँ। तू पिशाचों का क्रीड़ास्थल है, तुझे धिक्कार है! अर्थ सेवियों की अपवित्र शैय्या, नास्तिकता का वितण्ड क्षेत्र, तुझे धिक्कार है! और जिबरील, तू अपने पैरों से उस अशुद्ध वायु को शुद्ध कर दे जिसमें मैं साँस लेनेवाला हूँ, जिसमें यहाँ के विषैले कीटाणु मेरी आत्मा को भ्रष्ट न कर दें।'

इस तरह अपने विचारोद्गारों को शान्त करके, पापनाशी शहर में प्रविष्ट हुआ। यह द्वार पत्थर का एक विशाल मण्डप था। उसके मेहराब की छाँह में कई दरिद्र भिक्षुक बैठे हुए पथिकों के सामने हाथ फैला फैलाकर खैरात माँग रहे थे।

एक वृद्धा स्त्री ने जो वहाँ घुटनों के बल बैठी थी, पापनाशी की चादर पकड ली और उसे चूमकर बोली—ईश्वर के पुत्र, मुझे आशीर्वाद दो कि परमात्मा मुझसे सन्तुष्ट हो। मैंने पारलौकिक सुख के निमित्त इस जीवन में अनेक कष्ट झेले। तुम देव पुरुष हो, ईश्वर ने तुम्हें दुखी प्राणियों के कल्याण के लिए भेजा है, अतएव तुम्हारी चरण रज कञ्चन से भी बहुमूल्य है।

पापनाशी ने वृद्धा को हाथों से स्पर्श करके आशीर्वाद दिया। लेकिन वह मुश्किल से बीस क़दम चला होगा कि लड़कों के एक गोल ने उसका मुँह चिढाने और उस पर पत्थर फेंकने शुरू किये और तालियाँ बजाकर कहने लगे—ज़रा आपकी विशालमूर्ति देखिए। आप लगूर से भी काले हैं, और आपकी दाढी बकरे की दाढी से भी लम्बी है। बिलकुल भुतना मालूम होता है। इसे किसी बाग में मारकर लटका दो कि चिड़ियाँ हौवा समझकर उड़ें। लेकिन नहीं, बाग में गया तो खेत में सब फूल नष्ट हो जायँगे। उसकी सूरत ही मनहूस है। इसका मांस कौओं को खिला दो। कहकर उन्होंने पत्थरों की एक बाढ छोड़ दी।

लेकिन पापनाशी ने केवल इतना कहा—'ईश्वर तू इन अबोध बालकों को सुबुद्धि दे, वह नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।'

वह आगे चला तो सोचने लगा—उस वृद्धा स्त्री ने मेरा कितना सम्मान,

किया और इन लडकों ने कितना अपमान किया। इस भाँति एक ही वस्तु को भ्रम में पडे हुए प्राणी भिन्न भिन्न भावों से देखते हैं। यह स्वीकार करना पडेगा कि टिमाक्लीज मिथ्यावादी होते हुए भी निल्कुल निर्बुद्धि न था। वह अधा तो इतना जानता था कि मैं प्रकाश से वचित हूँ। उसका वचन इन दुराग्रहियों से कहीं उत्तम था जो घने अन्धकार में बैठे पुकारते हैं—'वह सूर्य है!' वह नहीं जानते कि ससार में सब कुछ माया, मृगतृष्णा, उडता हुआ बालू है। केवल ईश्वर ही स्थायी है।

वह नगर में बडे वेग से पाँव उठाता हुआ चला। दस वर्ष के बाद देखने पर भी उसे वहाँ का एक एक पत्थर परिचित मालूम होता था और प्रत्येक पत्थर उसके मन में किसी दुष्कर्म की याद दिलाता था। इसलिए उसने सडकों से जड़े हुए पत्थरों पर अपने पैरों को पटकना शुरू किया और जब पैरों से रक्त बहने लगा तो उसे आनन्द सा हुआ। सड़क के दोनों किनारों पर बड़े बडे महल बने हुए थे जो सुगन्ध की लपटों से अलसित जान पड़ते थे। देवदार, छुहारे, आदि के वृक्ष सिर उठाये हुए इन भवनों को मानों बालकों की भाँति गोद में खिला रहे थे। अधखुले द्वारों में से पीतल की मूर्तियाँ सगमरमर के गमलों में रखी हुई दिखाई दे रही थीं और स्वच्छ जल के हौज कुञ्जों की छाया में लहरें मार रहे थे। पूर्ण शान्ति छाई हुई थी। शोर गुल का नाम न था। हाँ, कभी कभी द्वार से आनेवाली वीणा की ध्वनि कान में आ जाती थी। पापनाशी एक भवन के द्वार पर रुका जिसकी सायबान के स्तम्भ युवतियों की भाँति सुन्दर थे। दीवारों पर यूनान के सर्वश्रेष्ठ ऋषियों की प्रतिमाएँ शोभा दे रही थीं। पापनाशी ने फलातूँ, सुक़रात, अरस्तू, एपिक्युरस और जिनो की प्रतिमाएँ पहचानीं और मन में कहा—इन मिथ्या भ्रम में पड़नेवाले मनुष्यों की कीर्तियों को मूर्तिमान कराना मूर्खता है। अब उनके मिथ्या विचारों की क़लई खुल गई, उनकी आत्मा अब नरक में पड़ी सड़ रही है, और यहाँ तक कि फलातूँ भी, जिसने ससार को अपनी प्रगल्भता से गुञ्जारित कर दिया था, अब पिशाचों के साथ तू तू—मैं-मैं कर रहा है। द्वार पर एक हथौड़ी रखी हुई थी। पापनाशी ने द्वार खटखटाया। एक गुलाम ने तुरत द्वार खोल दिया और एक साधु को द्वार पर खड़े

देखकर कर्कश स्वर में बोला—दूर हो यहाँ से, दूसरा द्वार देख, नहीं तो मैं डंडे से खबर लूँगा।

पापनाशी ने सरल भाव से कहा—मैं कुछ भिक्षा माँगने नहीं आया हूँ। मेरी केवल यही इच्छा है कि मुझे अपने स्वामी निसियास के पास ले चलो।

गुलाम ने और भी बिगड़कर जवाब दिया—मेरा स्वामी तुम-जैसे कुत्तों से मुलाक़ात नहीं करता।

पापनाशी—पुत्र जो मैं कहता हूँ वह करो, अपने स्वामी से इतना ही कह दो कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ।

दरवान ने क्रोध के आवेग में आकर कहा—चला जा, यहाँ से भिखमंगा कहीं का! और अपनी छड़ी उठाकर उसने पापनाशी के मुँह पर जोर से लगाई। लेकिन योगी ने छाती पर हाथ बाँधे, बिना ज़रा भी उत्तेजित हुए, शांत भाव से यह चोट सह ली और तब विनयपूर्वक फिर वही बात कही—पुत्र, मेरी याचना स्वीकार करो।

दरवान ने चकित होकर मन में कहा—यह तो विचित्र आदमी है जो मार से भी नहीं डरता और तुरन्त अपने स्वामी से पापनाशी का संदेशा कह सुनाया।

निसियास अभी स्नानागार से निकला था। दो युवतियाँ उसकी देह पर तेल की मालिश कर रही थीं। वह रूपवान् पुरुष था, बहुत ही प्रसन्नचित्त। उसके मुख पर कोमल व्यंग की आभा थी, योगी को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और हाथ फैलाये हुए उसकी ओर बढ़ा—आओ मेरे मित्र, मेरे बन्धु, मेरे सहपाठी, आओ। मैं तुम्हें पहचान गया यद्यपि तुम्हारी सूरत इस समय आदमियों की सी नहीं, पशुओं की सी है। आओ मेरे गले से लग जाओ। तुम्हें वह दिन याद है जब हम व्याकरण, अलंकार और दर्शन साथ पढ़ते थे? तुम उस समय भी तीव्र और उद्दण्ड प्रकृति के मनुष्य थे, पर पूर्ण सत्यवादी। तुम्हारी तृप्ति एक चुटकी भर नमक में हो जाती थी, पर तुम्हारी दान शीलता का वारापार न था। तुम अपने जीवन की भाँति अपने धन की भी कुछ परवाह न करते थे। तुममें उस समय भी थोड़ी-सी झक थी जो बुद्धि की कुशाग्रता का लक्षण है। तुम्हारे चरित्र की विचित्रता मुझे बहुत भली मालूम होती

थी। आज तुमने दस वर्षों के बाद दर्शन दिये हैं। हृदय से मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। तुमने वन्यजीवन को त्याग दिया और ईसाइयों की दुर्मति को तिलाञ्जलि देकर फिर अपने सनातन धर्म पर आरूढ हो गये, इसके लिए तुम्हें बधाई देता हूँ। मैं सुफेद पत्थर पर इस दिन का स्मारक बनाऊँगा।

यह कहकर उसने उन दोनों युवती सुन्दरियों को आदेश दिया—मेरे प्यारे मेहमान के हाथों, पैरों और दाढी में सुगन्ध लगाओ।

युवतियाँ हँसी और तुरन्त एक थाल, सुगन्ध की शीशी और आईना लाईं। लेकिन पापनाशी ने कठोर स्वर से उन्हें मना किया और आँखें नीची कर लीं कि उन पर निगाह न पड़ जाय, क्योंकि दोनों नग्न थीं। निसियास ने तब उसके लिए दावत किये और बिस्तर मँगाये और नाना प्रकार के भोजन और उत्तम शराब उसके सामने रखी। पर उसने घृणा के साथ सब वस्तुओं को सामने से हटा दिया। तब बोला—

निसियास, मैंने उस सत्पथ का परित्याग नहीं किया जिसे तुमने गलती से 'ईसाइयों की दुर्मति' कहा है। वही तो सत्य की आत्मा और ज्ञान का प्राण है। आदि में केवल शब्द था और 'शब्द' के साथ ईश्वर था, और शब्द ही ईश्वर था। उसी ने समस्त ब्रह्माण्ड की रचना की। वही जीवन का स्रोत है और जीवन मानव-जाति का प्रकाश है।

निसियास ने उत्तर दिया—प्रिय पापनाशी, क्या तुम्हें आशा है कि मै अर्थहीन शब्दों के झंकार से चकित हो जाऊँगा? क्या तुम भूल गये कि मैं स्वय छोटा मोटा दार्शनिक हूँ? क्या तुम समझते हो कि मेरी शाति उन चिथड़ों से हो जायगी जो कुछ निर्बुद्ध मनुष्यो ने इमलियस के वस्त्रों से फाड़ लिया है, जब इमलियस, फलातूँ और अन्य तत्त्वज्ञानियों से मेरी शाति न हुई? ऋषियों के निकाले हुए सिद्धान्त केवल कल्पित कथाएँ हैं जो मानव सरलहृदयता के मनोरजन के निमित्त कही गई हैं। उनको पढकर हमारा मनोरजन उसी भाँति होता है जैसे अन्य कथाओं को पढ कर। इसके बाद अपने मेहमान का हाथ पकड़कर वह उसे एक कमरे में ले गया जहाँ हजारों लपेटे हुए भोजपत्र टोकरों में रखे हुए थे। उन्हें दिखाकर बोला—यही मेरा पुस्तकालय है। इसमें उन सिद्धान्तों में से कितनों ही का सग्रह है जो ज्ञानियों

ने सृष्टि के रहस्य की व्याख्या करने के लिए आविष्कृत किये हैं। † सेरा-पियम में भी अतुल धन के होते हुए, सब सिद्धान्तों का संग्रह नहीं है! लेकिन शोक! यह सब केवल रोगपीडित मनुष्यों के स्वप्न हैं!

उसने तब अपने मेहमान को एक हाथीदाँत की कुरसी पर जबरदस्ती बैठाया। और खुद भी बैठ गया। पापनाशी ने इन पुस्तकों को देखकर त्योरियाँ चढ़ाईं और बोला—इन सबको अग्नि की भेंट कर देना चाहिए। निसियास बोला—नहीं प्रियमित्र, यह घोर अनर्थ होगा, क्योंकि रुग्ण पुरुषों के स्वप्न कभी-कभी बड़े मनोरंजक होते हैं। फिर यदि हम इन कल्पनाओं और स्वप्नों को मिटा दें तो संसार शुष्क और नीरस हो जायगा और हम सब विचार शैथिल्य के गढ़े में जा पड़ेंगे।

पापनाशी ने उसी ध्वनि में कहा—यह सत्य है कि मूर्तिवादियों के सिद्धान्त मिथ्या और भ्रान्तिकारक हैं। किन्तु ईश्वर ने, जो सत्य का रूप है, मानव शरीर धारण किया और अलौकिक विभूतियों द्वारा अपने को प्रगट किया और हमारे साथ रहकर हमारा कल्याण करता रहा।

निसियास ने उत्तर दिया—प्रिय पापनाशी, तुमने यह बात अच्छी कही कि ईश्वर ने मानव शरीर धारण किया। तब तो वह मनुष्य ही हो गया। लेकिन तुम ईश्वर और उसके रूपान्तरों का समर्थन करने तो नहीं आये! बतलाओ तुम्हें मेरी सहायता तो न चाहिए! मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ!

पापनाशी बोला—बहुत कुछ! मुझे ऐसा ही सुगन्धित एक वस्त्र दे दो जैसा तुम पहने हुए हो। इसके साथ सुनहरे खड़ाऊँ और एक प्याला तेल भी दे दो कि मैं अपनी दाढ़ी और बालों में चुपड़ लूँ। मुझे एक हजार स्वर्ण मुद्राओं की एक थैली भी चाहिए निसियास! मैं ईश्वर के नाम पर और पुरानी मित्रता के नाते तुमसे यही सहायता माँगने आया हूँ।

निसियास ने अपना सर्वोत्तम वस्त्र मँगवा दिया। उस पर कमख्वाब के बूटों में फूलों और पशुओं के चित्र बने हुए थे। दोनों युवतियों ने उसे खोल-

† मिस्र के रहनेवालों के आराध्यदेव का मन्दिर।

कर उसका भड़कीला रग दिखाया और प्रतीक्षा करने लगीं कि पापनाशी अपना ऊनी लबादा उतारे तो पहनायें। लेकिन पापनाशी ने जोर देकर कहा कि यह कदापि नहीं हो सकता। मेरी खाल उतर जाय पर यह ऊनी लबादा नहीं उतर सकता। विवश होकर उन्होंने उस बहुमूल्य वस्त्र को लबादे के ऊपर ही पहना दिया। दोनों युवतियाँ सुन्दरी थीं, और वह पुरुषों से शरमाती न थीं। वह पापनाशी को इस दुरगे भेष मे देखकर खूब हँसी। एक ने उसे अपना प्यारा सामन्त कहा, दूसरी ने उसकी दाढी खींच ली। लेकिन पाप नाशी ने उन पर दृष्टिपात तक न किया। सुनहरी खड़ाऊँ पैरों में पहनकर एक थैली कमर में बाँधकर उसने निसियास से कहा, जो विनोद-भाव से उसकी ओर देख रहा था।

'निसियास, इन वस्तुओं के विषय में कुछ सन्देह मत करना, क्योंकि मैं इनका सदुपयोग करूँगा।'

निसियास बोला—प्रिय मित्र, मुझे कोई सन्देह नहीं है क्योंकि मेरा विश्वास है कि मनुष्य में न भले काम करने की क्षमता है न बुरे, भलाई या बुराई का आधार केवल प्रथा पर है। मैं उन सब कुत्सित व्यवहारों का पालन करता हूँ जो इस नगर में प्रचलित हैं। इसलिए मेरी गणना सज्जन पुरुषों में है। अच्छा, मित्र, अब जाओ और चैन करो।

लेकिन पापनाशी ने उससे अपना उद्देश्य प्रकट करना आवश्यक समझा। बोला—तुम थायस को जानते हो जो यहाँ की रङ्गशालाओं का शृंगार है?

निसियास ने कहा—वह परम सुन्दरी है और किसी समय मैं उसके प्रेमियों में था। उसकी ख़ातिर मैंने एक कारख़ाना और दो अनाज के खेत बेच डाले और उसके विरह-वर्णन में निकृष्ट कविताओं से भरे हुए तीन ग्रन्थ लिख डाले। यह निर्विवाद है कि रूप लालित्य ससार की सबसे प्रबल शक्ति है, और यदि हमारे शरीर की रचना ऐसी होती कि हम यावज्जीवन उस पर अधिकृत रह सकते तो हम दार्शनिकों के जीव और भ्रम, माया और मोह, पुरुप और प्रकृति की ज़रा भी परवाह न करते। लेकिन मित्र, मुझे यह देख

कर आश्चर्य होता है कि तुम अपनी कुटी छोड़कर केवल 'थायस' की चर्चा करने के लिए आये हो।

यह कहकर निसियास ने एक ठण्डी साँस खींची। पापनाशी ने उसे भीत नेत्रों से देखा। उसको यह कल्पना ही असम्भव मालूम होती थी कि कोई मनुष्य इतनी सावधानी से अपने पापों को प्रकट कर सकता है। उसे जरा भी आश्चर्य न होता, अगर जमीन फट जाती और उसमें से अग्निज्वाला निकलकर उसे निगल जाती। लेकिन जमीन स्थिर बनी रही, और निसियास हाथ पर मस्तक रखे चुपचाप बैठा हुआ अपने पूर्वजीवन की स्मृतियों पर म्लान मुख से मुसकराता रहा। योगी तब उठा और गम्भीर स्वर में बोला—

नहीं निसियास, मैं अपना एकान्तवास छोड़कर इस पिशाच नगरी में थायस की चर्चा करने नहीं आया हूँ। बल्कि, ईश्वर की सहायता से मैं इस रमणी को अपवित्र विलास के बन्धनों से मुक्त कर दूँगा और उसे प्रभु मसीह की सेवार्थ भेंट करूँगा। अगर निराकार ज्योति ने मेरा साथ न छोड़ा तो थायस अवश्य इस नगर को त्यागकर किसी वनिता धर्माश्रम में प्रवेश करेगी।

निसियास ने उत्तर दिया—मधुर कलाओं और लालित्य की देवी 'वीनस' को रुष्ट करते हो तो सावधान रहना! उसकी शक्ति अपार है और यदि तुम उसकी प्रधान उपासिका को ले जाओगे तो वह तुम्हारे ऊपर अवश्य वज्राघात करेगी।

पापनाशी बोला—प्रभु मसीह मेरी रक्षा करेंगे। मेरी उनसे यह भी प्रार्थना है कि वह तुम्हारे हृदय में भी धर्म की ज्योति प्रकाशित करें और तुम उस अन्धकारमय कूप में से निकल आओ जिसमें पड़े हुए एड़ियाँ रगड़ रहे हो।

यह कहकर वह गर्व से मस्तक उठाये बाहर निकला। लेकिन निसियास भी उसके पीछे चला। द्वारपाल आते आते उसे पा लिया और तब अपना हाथ उसके कन्धे पर रखकर उसके कान में बोला—देखो, 'वीनस' को क्रुद्ध मत करना। उसका प्रत्याघात अत्यन्त भीषण होता है।

किन्तु पापनाशी ने इस चेतावनी को तुच्छ समझा, सिर फेरकर भी न देखा। वह निसियास को पतित समझता था, लेकिन जिस बात से उसे होती थी वह यह थी कि मेरा पुराना मित्र थायस का प्रेमपात्र रह चुका

उसे ऐसा अनुभव होता था कि इसमें घोर अपराध हो ही नहीं सकता। अब से वह निसियास को संसार का सबसे अधम, सबसे घृणित प्राणी समझने लगा। उसने भ्रष्टाचार से सदैव नफरत की थी, लेकिन आज के पहले यह पाप उसे इतना नारकीय कर्म न प्रतीत हुआ था। उसकी समझ में प्रभु मसीह के क्रोध और स्वर्गदूतों के तिरस्कार का इससे निन्द्य और कोई विषय ही न था।

उसके मन में थायस को इन विलासियों से बचाने के लिए अब और भी तीव्र आकांक्षा जागृत हुई। अब बिना एक क्षण विलम्ब किये मुझे थायस से भेंट करनी चाहिए। लेकिन अभी मध्याह्न काल था और जब तक दोपहर की गरमी शान्त न हो जाय, थायस के घर जाना उचित न था। पापनाशी शहर की सड़कों पर घूमता रहा। आज उसने कुछ भोजन न किया था जिसमें उस पर ईश्वर की दया दृष्टि रहे। कभी वह दीनता से आँखें जमीन की ओर झुका लेता था, और कभी अनुरक्त होकर आकाश की ओर ताकने लगता था। कुछ देर इधर-उधर निष्प्रयोजन घूमने के बाद वह बन्दरगाह पर जा पहुँचा। सामने विस्तृत बन्दरगाह था, जिसमें असंख्य जलयान और नौकायें लङ्गर डाले पड़ी हुई थीं, और उनके आगे नीला समुद्र, श्वेत चादर ओढ़े हँस रहा था। एक नौका ने, जिसकी पतवार पर एक अप्सरा का चित्र बना हुआ था, अभी लंगर खोला था। डाँडे पानी में चलने लगे, माझियों ने गाना आरम्भ किया और देखते देखते वह श्वेत वस्त्रधारिणी जल कन्या योगी की दृष्टि में केवल एक स्वप्न चित्र की भाँति रह गई। बन्दरगाह से निकलकर, वह अपने पीछे जगमगाता हुआ जलमार्ग छोड़ती खुले समुद्र में पहुँच गई।

पापनाशी ने सोचा मैं भी किसी समय संसार सागर पर गाते हुए यात्रा करने को उत्सुक था। लेकिन मुझे शीघ्र ही अपनी भूल मालूम हो गई। मुझ पर अप्सरा का जादू न चला।

इन्हीं विचारों में मग्न वह रस्सियों की गेंडुली पर बैठ गया। निद्रा से उसकी आँखें बन्द हो गई। नींद में उसे एक स्वप्न दिखाई दिया। उसे मालूम हुआ कि कहीं से तुरहियों की आवाज कान में आ रही है, आकाश

स्वर्ण हो गया है। उसे ज्ञात हुआ कि धर्माधर्म के विचार का दिन आ
हुँचा। वह बड़ी तन्मयता से ईश वन्दना करने लगा। इसी बीच में उसने
क अत्यन्त भयकर जन्तु को अपनी ओर आते देखा, जिसके माथे पर प्रकाश
ा एक सलीब लगा हुआ था। पापनाशी ने उसे पहचान लिया—सिल
उली की पिशाच मूर्ति थी। उस जन्तु ने उसे दाँतों के नीचे दबा लिया और
से लेकर चला, जैसे बिल्ली अपने बच्चे को लेकर चलती है। इस भाँति
ह जन्तु पापनाशी को कितने ही द्वीपों से होता, नदियों को पार करता,
हाड़ों को फाँदता अन्त में एक निर्जन स्थान में पहुँचा, जहाँ दहकते हुए
हाड़ और सुलगते राख के ढेरों के सिवाय और कुछ नजर न आता था।
मि कितने ही स्थलों पर फट गई थी और उसमें से आग की लपट निकल
ही थी। जन्तु ने पापनाशी को धीरे से उतार दिया और कहा—देखो!

पापनाशी ने एक खोह के किनारे झुककर नीचे देखा। एक आग की
दी पृथ्वी के अन्तस्तल में दो काले काले पर्वतों के बीच से बह रही थी।
हाँ धुँधले प्रकाश में नरक के दूत पापात्माओं को कष्ट दे रहे थे। इन
त्माओं पर उनके मृत शरीर का हलका आवरण था, यहाँ तक कि वह कुछ
त्र भी पहने हुए थीं। ऐसे दारुण कष्ट मे भी यह आत्माएँ बहुत दु खी
जान पड़ती थीं। उनमें से एक जो लम्बी, गौरवर्ण आँखें बन्द
िये हुए थी, हाथ में एक तलवार लिये जा रही थी। उसके मधुर स्वरों
समस्त मरुभूमि गूँज रही थी। वह देवताओं और शूर वीरों की विरुदावली
रही थी। छोटे-छोटे हरे रग के दैत्य उसके ओठ और कठ को लाल
हे की सलाखों से छेद रहे थे। यह अमर कवि होमर की प्रतिछाया थी।
इतना कष्ट झेल कर भी गाने से बाज न आती थी। उसके समीप ही
नक्सगोरस जिसके सिर के बाल गिर गये थे, धूल में परकाल से शक्लें बना
ा था। एक दत्य उसके कानों में खौलता हुआ तेल डाल रहा था, पर
की एकाग्रता को भग न कर सकता था। इनके अतिरिक्त पापनाशी को
र कितनी आत्माएँ दिखाई दीं जो जलती हुई नदी के किनारे बैठी हुई
ी भाँति पठन-पाठन, वाद प्रतिवाद, उपासना ध्यान में मग्न थीं जैसे यूनान
गुरुकुलों में गुरु शिष्य किसी वृक्ष की छाया में बैठ कर किया करते थे।

वृद्ध टिमाक्लीज ही सबसे अलग था और भ्रान्तिवादियों की भाँति सिर हिला रहा था। एक देत्य उसकी आँखों के सामने एक मशाल हिला रहा था, किन्तु टिमाक्लीज आँखें ही न खोलता था।

इस दृश्य से चकित होकर पापनाशी ने उस भयकर जन्तु की ओर देखा जो उसे यहाँ लाया था। कदाचित् उससे पूछना चाहता था कि यह क्या रहस्य है ? पर वह जन्तु अदृश्य हो गया था और उसकी जगह एक स्त्री मुँह पर नक़ाब डाले खड़ी थी। वह बोली—

योगी, खूब आँखें खोलकर देख। इन भ्रष्ट आत्माओं का दुराग्रह इतना जटिल है कि नरक में भी उनकी भ्रान्ति शान्त नहीं हुई। यहाँ भी वह उसी माया के खिलौने बने हुए हैं। मृत्यु ने उनके भ्रमजाल को नहीं तोड़ा क्योंकि प्रत्यक्ष ही, केवल मर जाने ही से ईश्वर के दर्शन नहीं होते। जो लोग जीवन-भर अज्ञानान्धकार में पडे हुए थे, वह मरने पर भी मूर्ख ही बने रहेंगे। यह दैत्यगण ईश्वरीय न्याय के यन्त्र ही तो हैं। यही कारण है कि आत्माएँ उन्हें न देखती हैं, न उनसे भयभीत होती हैं। वह सत्य के ज्ञान से शून्य थे, अतएव उन्हें अपने अकर्मों का भी ज्ञान न था। उन्होंने जो कुछ किय अज्ञान की अवस्था में किया। उन पर वह दोषारोपण नहीं कर सकता फि वह उन्हें दण्ड भोगने पर कैसे मजबूर कर सकता है ?

पापनाशी ने उत्तेजित होकर कहा—ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह स कुछ कर सकता है।

नक़ाबपोश स्त्री ने उत्तर दिया—नहीं, वह असत्य को सत्य नहीं कर सकता। उनको दण्ड भोग के योग्य बनाने के लिये पहले उनको अज्ञान से मुक्त करना होगा, और जब वह अज्ञान से मुक्त हो जायँगे तो वह धर्मात्माओ की श्रेणी में आ जायँगे !

पापनाशी उद्विग्न और मर्माहत होकर फिर खोह के किनारों पर झुका। उसने निसियास की छाया को एक पुष्पमाला सिर पर डाले, और एक झुलसे हुए मेंहदी के वृक्ष के नीचे बैठे देखा। उसकी बगल में एक अति रूपवती वेश्या बैठी हुई थी और ऐसा विदित होता था कि वह प्रेम की व्याख्या कर रहे हैं।। वेश्या की मुखश्री मनोहर और प्रतिभ थी। उन पर जो अग्नि की

वर्षा हो रही थी वह ओस की बूँदों के समान सुखद और शीतल थी, और वह झुलसती हुई भूमि उनके पैरों से कोमल तृण के समान दब जाती थी। यह देखकर पापनाशी की क्रोधाग्नि जोर से भड़क उठी। उसने चिल्लाकर कहा—ईश्वर, इस दुराचारी पर वज्राघात कर! यह निसियास है। उसे ऐसा कुचल कि वह रोये, कराहे और क्रोध से दाँत पीसे। उसने थायस को भ्रष्ट किया है।

सहसा पापनाशी की आँखें खुल गईं। वह एक बलिष्ठ माँझी की गोद में था। माँझी बोला—बस मित्र, शान्त हो जाओ। जलदेवता साक्षी हैं कि तुम नींद में बुरी तरह चौंक पड़ते हो। अगर मैंने तुम्हें सम्हाल न लिया होता तो तुम अब तक पानी में डुबकियाँ खाते होते। आज मैंने ही तुम्हारी जान बचाई।

पापनाशी बोला—ईश्वर की दया है।

वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और इस स्वप्न पर विचार करता हुआ आगे बढ़ा। अवश्य ही यह दुःस्वप्न है, नरक को मिथ्या समझना ईश्वरीय न्याय का अपमान करना है। इस स्वप्न का प्रेषक कोई पिशाच है।

ईसाई तपस्वियों के मन में नित्य यह शंका उठती रहती कि इस स्वप्न का हेतु ईश्वर है या पिशाच। पिशाचादि उन्हें नित्य घेरे रहते थे। मनुष्यों से जो मुँह मोड़ता है, उसका गला पिशाचों से नहीं छूट सकता। मरुभूमि पिशाचों का क्रीड़ा क्षेत्र है। वहाँ नित्य उनका शोर सुनाई देता है। तपस्वियों को प्रायः अनुभव से, या स्वप्न की व्यवस्था से ज्ञान हो जाता है कि यह ईश्वरीय प्रेरणा है या पैशाचिक प्रलोभन। पर कभी कभी बहुत यत्न करने पर भी उन्हें भ्रम हो जाता था। तपस्वियों और पिशाचों में निरन्तर महाघोर संग्राम होता रहता था। पिशाचों की सदैव यह धुन रहती थी कि योगियों को किसी तरह धोखे में डालें और उनसे अपनी आज्ञा मनवा लें। सन्त जॉन एक प्रसिद्ध पुरुष थे। पिशाचों के राजा ने ६० वर्ष तक लगातार उन्हें धोखा देने की चेष्टा की, पर सन्त जॉन उसकी चालों को ताड़ लिया करते थे। एक दिन पिशाच-राजा ने एक वैरागी का रूप धारण किया और जॉन की कुटी में आकर बोला—जॉन, कल शाम तक तुम्हें अनशन व्रत रखना

होगा। जॉन ने समझा यह ईश्वर का दूत है और दो दिन तक निर्जल रहा। पिशाच ने उन पर केवल यही एक विजय प्राप्त की, यद्यपि पिशाचराज का कोई कुत्सित उद्देश्य न पूरा हुआ, पर सन्त जॉन को पराजय का बहुत शोक हुआ। किन्तु पापनाशी ने जो स्वप्न देखा था उसका विषय ही कहे देता था कि इसका कर्ता पिशाच है।

वह ईश्वर से दीन शब्दों में कह रहा था—मुझसे ऐसा कौन सा अपराध हुआ जिसके दण्ड स्वरूप तूने मुझे पिशाच के फन्दे में डाल दिया। सहसा उसे मालूम हुआ कि मैं मनुष्यों के एक बड़े समूह में इधर उधर धक्के खा रहा हूँ। कभी इधर जा पड़ता हूँ, कभी उधर। उसे नगरों की भीड़ भाड़ में चलने का अभ्यास न था। वह एक जड़ वस्तु की भाँति इधर-उधर ठोकरें खाता फिरता था, और अपने कमख्वाब के कुरते के दामन से उलझकर वह कई बार गिरते-गिरते बचा। अन्त में उसने एक मनुष्य से पूछा—तुम लोग सब के सब एक ही दिशा में इतनी हड़बड़ी के साथ कहाँ दौड़े जा रहे हो। क्या किसी सन्त का उपदेश हो रहा है?

उस मनुष्य ने उत्तर दिया—यात्री, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि शीघ्र ही तमाशा शुरू होगा और थायस रंगमंच पर उपस्थित होगी। हम सब उस थियेटर में जा रहे हैं। तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी हमारे साथ चलो। उस अप्सरा के दर्शन मात्र ही से हम कृतार्थ हो जायँगे।

पापनाशी ने सोचा कि थायस को रंगशाला में देखना मेरे उद्देश्य के अनुकूल होगा। वह उस मनुष्य के साथ हो लिया। उनके सामने थोड़ी दूर पर रंगशाला स्थित थी। उसके मुख्य द्वार पर चमकते हुए परदे पड़े थे और उसकी विस्तृत वृत्ताकार की दीवारें अनेक प्रतिमाओं से सजी हुई थीं। अन्य मनुष्यों के साथ यह दोनों पुरुष भी एक तङ्ग गली से दाखिल हुए। गली के दूसरे सिरे पर अर्द्ध चन्द्र के आकार का रङ्ग मंच बना हुआ था जो इस समय प्रकाश से जगमगा रहा था। वे दर्शकों के साथ एक जगह जा बैठे। वहाँ से नीचे की ओर किसी तालाब के घाट की भाँति सीढ़ियों की कतार रङ्गशाला तक चली गई थी। रङ्गशाला में अभी कोई न था, पर वह खूब सजी हुई थी। बीच में कोई परदा न था। रंगशाला के मध्य में कब्र की

ति एक चबूतरा-सा बना हुआ था। चबूतरे के चारों तरफ रावटियाँ थीं। वटियों के सामने भाले रखे हुए थे और लम्बी लम्बी खूँटियों पर सुनहरी लें लटक रही थीं। स्टेज पर सन्नाटा छाया हुआ था। जब दर्शकों का र्धवृत्त ठसाठस भर गया तो मधु मक्खियों की भिनभिनाहट सी दबी हुई ावाज आने लगी। दर्शकों की आँखें अनुराग से भरी हुई, वृहद्, निस्तब्ध ामच की ओर लगी हुई थीं। स्त्रियाँ हँसती थीं और नीबू खाती थीं और त्यप्रति नाटक देखनेवाले पुरुष अपनी जगह से दूसरों को हँस हँस कारते थे।

पापनाशी मन में ईश्वर की प्रार्थना कर रहा था और मुँह से एक ी मिथ्या शब्द नहीं निकालता था, लेकिन उसका साथी नाट्यकला ी अवनति की चर्चा करने लगा—'भाई हमारे इस कला का घोर तन हो गया है। प्राचीन समय में अभिनेता, चेहरे पहनकर वियों की रचनाएँ उच्च स्वर से गाया करते थे। अब तो वह गूँगों ी भाँति अभिनय करते हैं। वह पुराने सामान भी गायब हो ये। न तो वह चेहरे रहे जिनमें आवाज को फैलाने के लिए धातु की जीभ नी रहती थी, न वह ऊँचे खड़ाऊँ ही रह गये जिन्हें पहनकर अभिनेतागण वताओं की तरह लम्बे हो जाते थे, न वह ओजस्विनी कविताएँ रहीं और वह मर्मस्पर्शी अभिनयचातुर्य्य। अब तो पुरुषों की जगह रंगमंच पर स्त्रियों ा दौरदौरा है, जो बिना संकोच के खुले मुँह मंच पर आती हैं। उस समय े यूनान निवासी स्त्रियों को स्टेज पर देखकर न जाने दिल में क्या कहते। त्रियों के लिए जनता के सम्मुख मंच पर आना घोर लज्जा की बात है। मने इस कुप्रथा को स्वीकार करके अपने आध्यात्मिक पतन का परिचय दिया है। यह निर्विवाद है कि स्त्री पुरुष का शत्रु और मानव जाति का कलंक है।'

पापनाशी ने इसका समर्थन किया—बहुत सत्य कहते हो स्त्री हमारी प्राणघातिका है। उससे हमें कुछ आनन्द प्राप्त होता है और इसलिए उससे सदैव डरना चाहिए।

उसके साथी ने जिसका नाम डोरियन था, कहा—स्वर्ग के देवताओं की शपथ खाता हूँ, स्त्री से पुरुष को आनन्द नहीं प्राप्त होता, बल्कि चिन्ता,

दु ख और अशान्ति। प्रेम ही हमारे दारुणतम कष्टों का कारण है। सुनो, मित्र, जब मेरी तरुणावस्था थी तो मैं एक द्वीप की सैर करने गया था और वहाँ मुझे एक बहुत बडा मेंहदी का वृक्ष दिखाई दिया जिसके विषय में यह दन्तकथा प्रचलित है कि 'फीडरा' जिन दिनों 'हिप्पोलाइट' पर आशिक थी तो वह विरह दशा में इसी वृक्ष के नीचे बैठी रहती थी और दिल बहलाने के लिए अपने बालों की सूइयाँ निकालकर इन पत्तियों में चुभाया करती थी सब पत्तियाँ छिद गई। फीडरा की प्रेम कथा तो तुम जानते ही होगे। अपने प्रेमी का सर्वनाश करने के पश्चात् वह स्वय गले में फाँसी डाल, एक हाथी दाँत की खूँटी से लटककर मर गई। देवताओं की ऐसी इच्छा हुई कि फीडरा के असह्य विरहवेदना के चिन्ह स्वरूप इस वृक्ष की पत्तियों में नित छेद होते रहे। मैंने एक पत्ती तोड़ ली और लाकर उसे अपने पलँग के सिरहाने लटका दिया कि वह मुझे प्रेम की कुटिलता की याद दिलाती रहे, और मेरे गुरु, अमर एपिक्युरस के सिद्धान्तों पर अटल रखे, जिसका उद्देश्य था कि कुवासना से डरना चाहिए। लेकिन यथार्थ मे प्रेम जिगर का एक रोग है और कोई यह नहीं कह सकता कि यह रोग मुझे नहीं लग सकता।

पापनाशी ने प्रश्न किया—डोरियन, तुम्हारे आनन्द के विषय क्या हैं!

डोरियन ने खेद से कहा—मेरे आनन्द का केवल एक विषय है, और वह भी बहुत आकर्षक नहीं। वह ध्यान है। जिसकी पाचनशक्ति, दूषित हो गई हो उसके लिए आनन्द का और क्या विषय हो सकता है!

पापनाशी को अवसर मिला कि वह इस आनन्दवादी को आध्यात्मिक सुख की दीक्षा दे जो ईश्वराराधना से प्राप्त होता है। बोला—मित्र डोरियन सत्य पर कान धरो, और प्रकाश ग्रहण करो!

लेकिन सहसा उसने देखा कि सबकी आँखें मेरी तरफ उठी हैं और लोग मुझे चुप रहने का सकेत कर रहे हैं। नाट्यशाला में पूर्ण शान्ति स्थापित हो गई और एक क्षण मे वीर गान की ध्वनि सुनाई दी।

खेल शुरू हुआ। होमर की इलियड का एक दु खान्त दृश्य था। ट्रोजन युद्ध समाप्त हो चुका था। यूनान के विजयी सूरमा अपनी छोलदारियों से निकलकर कूच की तैयारी कर रहे थे कि एक अद्भुत घटना हुई। रग-भूमि

के मध्यस्थित समाधि पर बादलों का एक टुकड़ा छा गया। एक क्षण के बाद बादल हट गया और एशिलीस का प्रेत सोने के शस्त्रों से सजा हुआ प्रकट हुआ। वह योद्धाओं की ओर हाथ फैलाये मानों कह रहा है, हेलास के सपूतों क्या तुम यहाँ से प्रस्थान करने को तैयार हो? तुम उस देश को जाते हो जहाँ जाना मुझे फिर नसीब न होगा और मेरी समाधि बिना कुछ भेंट किये ही छोड़ जाते हो।

यूनान के वीर सामन्त, जिनमें वृद्ध नेस्टर, अगामेमनन, उलाइसेस आदि थे, समाधि के समीप आकर इस घटना को देखने लगे। पिरस ने जो एशिलीस का युवक पुत्र था, भूमि पर मस्तक झुका दिया। उलीस ने ऐसा संकेत किया जिससे विदित होता था कि वह मृत-आत्मा की इच्छा से सहमत है। उसने अगामेमनन से अनुरोध किया—हम सबों को एशिलीस का यश मानना चाहिए, क्योंकि हेलास ही की मानरक्षा में उसने वीर गति पाई है। उसका आदेश है कि प्रायम की पुत्री, कुमारी पालिक्सेना मेरी समाधि पर समर्पित की जाय। यूनान वीरो, अपने नायक का आदेश स्वीकार करो।

किन्तु सम्राट् अगामेमनन ने आपत्ति की—ट्रोजन की कुमारियों की रक्षा करो। प्रायम का यशस्वी परिवार बहुत दुःख भोग चुका है।

उसके आपत्ति का कारण यह था कि वह उलाइसेस के अनुरोध से सहमत है। निश्चय हो गया कि पालिक्सेना एशिलीस की बलि दी जाय। मृत-आत्मा इस भाँति शान्ति होकर यमलोक को चली गई। चरित्रों के वार्तालाप के बाद उत्तेजक और कभी करुण स्वरों में गाना होता था। अभिनय का एक भाग समाप्त होते ही दर्शकों ने तालियाँ बजाई।

पापनाशी जो प्रत्येक विषय में धर्म सिद्धान्तों का व्यवहार किया करता था, बोला—अभिनय से सिद्ध होता है कि सत्ताहीन देवताओं के उपासक कितने निर्दयी होते हैं।

डोरियन ने उत्तर दिया—यह दोष प्रायः सभी मतान्तरों में पाया जाता है। सौभाग्य से महात्मा एपिक्युरस ने, जिन्हें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त था, मुझे अदृश्य के मिथ्या शंकाओं से मुक्त कर दिया।

इतने में अभिनय फिर शुरू हुआ। हेक्युबा, जो पालिक्सेना की माता

थी, उस छोलदारी से बाहर निकली जिसमें वह क़ैद थी। उसके श्वेत केश बिखरे हुए थे, कपडे फटकर तार तार हो गये थे। उसकी शोकमूर्ति देखते ही दर्शकों ने वेदनापूर्ण आह भरी। हेक्युबा को अपनी कन्या के विषादमय अन्त का एक स्वप्न द्वारा ज्ञान हो गया था। अपने और अपनी पुत्री के दुर्भाग्य पर वह सिर पीटने लगी। उलाइसेस ने उसके समीप जाकर कहा — पालिक्सेना पर से अपना मातृस्नेह अब उठा लो। वृद्धा स्त्री ने अपने बाल नोच लिए, मुँह को नखों से खसोटा और निर्दयी योद्धा उलाइसेस के हाथों को चूमा जो अब भी दयाशून्य शान्ति से कहता हुआ जान पड़ता था—

हेक्युबा, धैर्य से काम लो। जिस विपत्ति का निवारण नहीं हो सकता, उसके सामने सिर झुकाओ। हमारे देश में भी कितनी ही माताएँ अपने पुत्रों के लिए रो रही हैं जो आज यहाँ वृक्षों के नीचे मोहनिद्रा में मग्न हैं। और हेक्युबा ने, जो पहले एशिया के सबसे समृद्धिशाली राज्य की स्वामिनी थी और इस समय गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, नैराश्य से धरती पर सिर पटक दिया।

तब छोलदारियों में से एक के सामने का परदा उठा और कुमारी पालिक्सेना प्रकट हुई। दर्शकों में एक सनसनी सी दौड़ गई। उन्होंने थायस को पहचान लिया। पापनाशी ने उस वेश्या को फिर देखा जिसकी खोज में वह आया था। वह अपने गोरे हाथ से भारी परदे को ऊपर उठाये हुए थी। वह एक विशाल प्रतिमा की भाँति स्थिर खड़ी थी। उसके अपूर्व लोचनों से गर्व और आत्मोत्सर्ग झलक रहा था, और उसके प्रदीप्त सौन्दर्य से समस्त दर्शकवृन्द एक निरुपाय लालसा के आवेग से थर्रा उठे।

पापनाशी का चित्त व्यग्र हो उठा। छाती को दोनों हाथों से दबाकर उसने एक ठण्डी साँस लिया और बोला—ईश्वर! तूने एक प्राणी को क्योंकर इतनी शक्ति प्रदान की है?

किन्तु डोरियन जरा भी अशान्त न हुआ। बोला—वास्तव में जिन परमाणुओं के एकत्र हो जाने से इस स्त्री की रचना है उनका संयोग बहुत ही नयनाभिराम है। लेकिन यह केवल प्रकृति की एक क्रीडा है, और परमाणु, जड़वस्तु हैं। किसी दिन वह स्वाभाविक रीति से विच्छिन्न हो जायँगे।

थी, उस छोलदारी से बाहर निकली जिसमें वह क़ैद थी। उसके श्वेत केश बिखरे हुए थे, कपड़े फटकर तार तार हो गये थे। उसकी शोकमूर्ति देखते ही दर्शकों ने वेदनापूर्ण आह भरी। हेक्युबा को अपनी कन्या के विषादमय अन्त का एक स्वप्न द्वारा ज्ञान हो गया था। अपने और अपनी पुत्री के दुर्भाग्य पर वह सिर पीटने लगी। उलाइसेस ने उसके समीप जाकर कहा— पालिक्सेना पर से अपना मातृस्नेह अब उठा लो। वृद्धा स्त्री ने अपने बाल नोच लिए, मुँह को नखों से खसोटा और निर्दयी योद्धा उलाइसेस के हाथों को चूमा जो अब भी दयाशून्य शान्ति से कहता हुआ जान पड़ता था—

हेक्युबा, धैर्य से काम लो। जिस विपत्ति का निवारण नहीं हो सकता, उसके सामने सिर झुकाओ। हमारे देश में भी कितनी ही माताएँ अपने पुत्रों के लिए रो रही हैं जो आज यहाँ वृक्षों के नीचे मोहनिद्रा में मग्न हैं। और हेक्युबा ने, जो पहले एशिया के सबसे समृद्धिशाली राज्य की स्वामिनी थी और इस समय गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, नैराश्य से धरती पर सिर पटक दिया।

तब छोलदारियों में से एक के सामने का परदा उठा और कुमारी पालिक्सेना प्रकट हुई। दर्शकों में एक सनसनी सी दौड़ गई। उन्होंने थायस को पहचान लिया। पापनाशी ने उस वेश्या को फिर देखा जिसकी खोज में वह आया था। वह अपने गोरे हाथ से भारी परदे को ऊपर उठाये हुए थी। वह एक विशाल प्रतिमा की भाँति स्थिर खड़ी थी। उसके अपूर्व लोचनों से गर्व और आत्मोत्सर्ग झलक रहा था, और उसके प्रदीप्त सौन्दर्य से समस्त दर्शकवृन्द एक निरुपाय लालसा के आवेग से थर्रा उठे।

पापनाशी का चित्त व्यग्र हो उठा। छाती को दोनों हाथों से दबाकर उसने एक ठण्डी साँस लिया और बोला—ईश्वर! तूने एक प्राणी को क्योंकर इतनी शक्ति प्रदान की है?

किन्तु डोरियन ज़रा भी अशान्त न हुआ। बोला—वास्तव में जिन परमाणुओं के एकत्र हो जाने से इस स्त्री की रचना है उनका संयोग बहुत ही नयनाभिराम है। लेकिन यह केवल प्रकृति की एक क्रीड़ा है, और परमाणु, जड़वस्तु हैं। किसी दिन वह स्वाभाविक रीति से विच्छिन्न हो जायँगे।

जिन परमाणुओं से लैला और क्लीओपेटरा की रचना हुई थी वह अब कहाँ है ? मैं मानता हूँ कि स्त्रियाँ कभी कभी बहुत रूपवती होती हैं, लेकिन वह भी तो विपत्ति और घृणोत्पादक अवस्थाओं के वशीभूत हो जाती हैं। बुद्धिमानों को यह बात मालूम है, यद्यपि मूर्ख लोग इस पर ध्यान नहीं देते।

योगी ने भी थायस को देखा। दार्शनिक ने भी। दोनों के मन में भिन्न-भिन्न विचार उत्पन्न हुए। एक ने ईश्वर से फरियाद की, दूसरे ने उदासीनता से तत्त्व का निरूपण किया।

इतने में रानी हेक्युबा ने अपनी कन्या को इशारों से समझाया, मानों कह रही है—इस हृदयहीन उलाइसेस पर अपना जादू डाल। अपने रूप-लावण्य, अपने यौवन और अपने अश्रु प्रवाह का आश्रय ले।

थायस, या कुमारी पालिक्सेना ने छोलदारी का परदा गिरा दिया। तब उसने एक क़दम आगे बढ़ाया। लोगों के दिल हाथ से निकल गये। और जब वह गर्व से तालों पर क़दम उठाती हुई उलाइसेस की ओर चली तो दर्शकों को ऐसा मालूम हुआ मानों वह सौन्दर्य्य का केन्द्र है। कोई आपे में न रहा। सबकी आँखें उसी ओर लगी हुई थीं। अन्य सभी का रंग उसके सामने फीका पड़ गया। कोई उन्हें देखता भी न था।

उलाइसेस ने मुँह फेर लिया और अपना मुँह चादर में छिपा लिया कि इस दया भिखारिनी के नेत्र कटाक्ष और प्रेमालिंगन का जादू उस पर न चले। पालिक्सेना ने उससे इशारों से कहा—मुझसे क्यों डरते हो ? मैं तुम्हें प्रेमपाश में फँसाने नहीं आई हूँ। जो अनिवार्य्य है, वह होगा। उसके सामने सिर झुकाती हूँ। मृत्यु का मुझे भय नहीं है। प्रायम की लड़की और वीर हेक्टर की बहन, इतनी गई गुजरी नहीं है कि उसकी शैय्या, जिसके लिए बड़े बड़े सम्राट लालायित रहते थे, किसी विदेशी पुरुष का स्वागत करे। मैं किसी की शरणागत नहीं होना चाहती।

हेक्युबा जो अभी तक भूमि पर अचेत सी पड़ी थी सहसा उठी और अपनी प्रिय पुत्री को छाती से लगा लिया। यह उसका अन्तिम, नैराश्यपूर्ण आलिंगन था। पतिवंचित मातृहृदय के लिए संसार में कोई अवलम्ब न था।

पालिक्सेना ने धीरे से माता के हाथों से अपने को छुडा लिया, मानों उससे कह रही थी—

माता, धैर्य्य से काम लो। अपने स्वामी की आत्मा को दुखी मत करो। ऐसा क्यों करती हो कि यह लोग निर्दयता से जमीन पर गिराकर मुझे अलग कर लें?

थायस का मुखचन्द्र इस शोकावस्था में और भी मधुर हो गया था, जैसे मेघ के हलके आवरण से चन्द्रमा। दर्शकवृन्द को उसने जीवन के आवेशों और भावों का कितना अपूर्व चित्र दिखाया। इससे सभी मुग्ध थे। आत्म सम्मान, धैर्य, साहस आदि भावों का ऐसा अलौकिक, ऐसा मुग्धकर दिग्दर्शन कराना थायस ही का काम था। यहाँ तक कि पापनाशी को भी उस पर दया आ गई। उसने सोचा, यह चमक-दमक अब थोडे ही दिनों के और मेहमान हैं, फिर तो यह किसी धर्माश्रम में तपस्या करके अपने पापों का प्रायश्चित करेगी।

अभिनय का अन्त निकट आ गया। हेक्युबा मूर्छित होकर गिर पडी और पालिक्सेना उलाइसेस के साथ समाधि पर आई। योद्धागण उसे चारों ओर से घेरे हुए थे। जब वह बलिवेदी पर चढ़ी तो एशिलिस के पुत्र ने एक सोने के प्याले में शराब लेकर समाधि पर गिरा दी। मातमी गीत गाये जा रहे थे। जब बलि देनेवाले पुजारियों ने उसे पकड़ने को हाथ फैलाया तो उसने संकेत द्वारा बतलाया कि मैं स्वच्छन्द रहकर मरना चाहती हूँ, जैसा कि राज्य कन्याओं का धर्म है। तब अपने वस्त्रों को उतारकर वह वज्र को हृदय स्थल में रखने को तैयार हो गई। पिर्रस ने सिर फेरकर अपनी तलवार उसके वक्षस्थल में भोंक दी। रुधिर की धारा बह निकली। कोई लाग रखी गई थी। थायस का सिर पीछे को लटक गया, उसकी आँखें तिलमिलाने लगीं और एक क्षण में वह गिर पड़ी।

योद्धागण तो बलि को कफ़न पहना रहे थे। पुष्पवर्षा की जा रही थी। दर्शकों की आर्तध्वनि से हवा गूँज रही थी। पापनाशी उठ खड़ा हुआ और उच्च स्वर से यह भविष्यवाणी की—

मिथ्यावादियो, और प्रेतों के पूजनेवालो! यह क्या भ्रम हो गया है?

तुमने जो अभी दृश्य देखा है वह केवल एक रूपक है। उस कथा का आध्यात्मिक अर्थ कुछ और ही है, और यह स्त्री थोड़े ही दिनों में अपनी स्वेच्छा और अनुराग से, ईश्वर के चरणों में समर्पित हो जायगी।

इसके एक घण्टे बाद पापनाशी ने थायस के द्वार पर जन्जीर खटखटाई।

थायस उस समय रईसों के मुहल्ले में, सिकन्दर की समाधि के निकट रहती थी। उसके विशाल भवन के चारों ओर सायेदार वृक्ष थे, जिनमें से एक जलधारा कृत्रिम चट्टानों के बीच से होकर बहती थी। एक बुढ़िया हब्शिन दासी ने जो मुद्रियों से लदी हुई थी, आकर द्वार खोल दिया और पूछा--क्या आज्ञा है?

पापनाशी ने कहा—मैं थायस से भेंट करना चाहता हूँ। ईश्वर साक्षी है कि मैं यहाँ इसी काम के लिए आया हूँ।

वह अमीरों के-से वस्त्र पहने हुए था और उसकी बातों से रोब टपकता था। अतएव दासी उसे अन्दर ले गइ। और बोली—थायस परियों के कुञ्ज में विराजमान है।

२

थायस ने स्वाधीन, लेकिन निर्धन और मूर्तिपूजक माता पिता के घर जन्म लिया। जब वह बहुत छोटी सी लड़की थी तो उसका पिता एक सराय का भठियारा था। उस सराय में प्राय मल्लाह बहुत आते थे। बाल्यकाल की अश्रृङ्खल, किन्तु सजीव स्मृतियाँ उसके मन मे अब भी सचित थीं। उसे अपने बाप की याद आती थी जो पैर पर पैर रखे अँगीठी के सामने बैठा रहता था। लम्बा, भारी भरकम, शान्त प्रकृति का मनुष्य था, उन फ़िरऊनों की भाँति जिनकी कीर्ति सड़क के नुक्कड़ों पर भाटों के मुख से नित्य अमर होती रहती थी। उसे अपनी दुर्बल माता की भी याद आती थी जो भूखी बिल्ली की भाँति घर में चारों ओर चक्कर लगाती रहती थी। सारा घर उसके तीक्ष्ण कण्ठ स्वरों से गूँजता और उसकी उद्दीपन नेत्रों की ज्योति से

चमकता रहता था। पड़ोसवाले कहते थे यह डायन है, रात को उल्लू बन जाती है और अपने प्रेमियों के पास उड़ जाती है। यह अफीमचियों की गप थी। थायस अपनी माँ से भली भाँति परिचित थी और जानती थी कि वह जादू टोना नहीं करती, हाँ उसे लोभ का रोग था और दिन की कमाई को रात भर गिनती रहती थी। आलसी पिता और लोभिनी माता थायस के लालन पालन की ओर विशेष ध्यान न देते थे। वह किसी जगली पौधे के समान अपनी बाढ से बढती जाती थी। वह मतवाले मल्लाहों के कमरबन्द से एक एक करके पैसे निकालने मे निपुण हो गई। वह अपने अश्लील वाक्यों और बाजारी गीतों से उनका मनोरजन करती थी, यद्यपि वह स्वय इनका आशय न जानती थी। घर शराब की महक से भरा रहता था। जहाँ-तहाँ शराब के चमड़े के पीपे रखे रहते थे और वह मल्लाहों की गोद में बैठती फिरती थी। तब मुँह में शराब का लसका लगाये वह पैसे लेकर घर से निकलती और एक बुढिया से गुलगुले लेकर खाती। नित्यप्रति एक ही अभिनय होता रहता था। मल्लाह अपनी जान जोखिम यात्राओं की कथा कहते, तब चौसर खेलते, देवताओं को गालियाँ देते और उन्मत्त होकर 'शराब, शराब, सबसे उत्तम शराब!' की रट लगाते। नित्यप्रति रात को मल्लाहों के हुल्लड से बालिका की नींद उचट जाती थी। एक दूसरे को वे घोंघे फेंक फेंककर मारते जिससे माँस कट जाता था और भयकर कोलाहल मचता था। कभी तलवारें भी निकल पड़ती थीं और रक्तपात हो जाता था।

थायस को यह याद करके बहुत दु:ख होता था कि बाल्यावस्था में यदि किसी को मुझसे स्नेह था तो वह सरल, सहृदय, अहमद था। अहमद इस घर का हब्शी गुलाम था, तवे से भी ज्यादा काला, लेकिन बड़ा सज्जन, बहुत नेक, जैसे रात की मीठी नींद। वह बहुधा थायस को घुटनों पर बैठा लेता और पुराने जमाने के तहखानों की अद्भुत कहानियाँ सुनाता जो धन लोलुप राजे महाराजे बनवाते थे और बनवाकर शिल्पियों और कारीगरों का वध कर डालते थे कि किसी से बता न दें। कभी-कभी ऐसे चतुर चोरों की कहानियाँ सुनाता जिन्होंने राजाओं की कन्याओं से विवाह किया और मीनार बनवाये। बालिका थायस के लिए अहमद बाप भी था, माँ भी था,

दाई था और कुत्ता भी था। वह अहमद के पीछे फिरा करती, जहाँ वह जाता, परछाई की तरह साथ लगी रहती। अहमद भी उस पर जान देता था। बहुधा रात को अपने पुआल के गद्दे पर सोने के बदले बैठा हुआ वह उसके लिए कागज के गुब्बारे और नौकाएँ बनाया करता।

अहमद के साथ उसके स्वामियों ने घोर निर्दयता का बर्ताव किया था। उसका एक कान फटा हुआ था और देह पर कोड़ों के दाग़ ही दाग थे। किन्तु उसके मुख पर नित्य सुखमय शान्ति खेला करती थी और कोई उससे न पूछता था कि इस आत्मा की शान्ति और हृदय के सन्तोष का स्रोत कहाँ था। वह बालक की तरह भोला था। काम करते करते थक जाता तो अपने भद्दे स्वर में धार्मिक भजन गाने लगता जिन्हें सुनकर बालिका काँप उठती और वही बातें स्वप्न में भी देखती।

'हमसे बता मेरी तू कहाँ गई थी और क्या देखा था?'

'मैंने कफन और सुफेद कपडे देखे। स्वर्गदूत क़ब्र पर बैठे हुए थे, और मैंने प्रभु मसीह की ज्योति देखी।'

थायस उससे पूछती—दादा, तुम कब्र पर बैठे हुए दूतों का भजन क्यों गाते हो?

अहमद जवाब देता—मेरी आँखों की नन्हीं पुतली, मैं स्वर्ग-दूतों के भजन इसलिए गाता हूँ कि हमारे प्रभु मसीह स्वर्गलोक को उड गये हैं।

अहमद ईसाई था। उसकी यथोचित रीति से दीक्षा हो चुकी थी और ईसाइयों के समाज में उसका नाम भी थिओडोरा प्रसिद्ध था। वह रातों को छिपकर अपने सोने के समय में उनकी संगतों में शामिल हुआ करता था।

उस समय ईसाइ धर्म पर विपत्ति की घटाएँ छाई हुई थीं। रूस के बादशाह की आज्ञा से ईसाइयों के गिरजे खोदकर फेंक दिये गये थे, पवित्र पुस्तकें जला डाली गई थीं और पूजा की सामग्रियाँ लूट ली गई थीं। ईसाइयों के सम्मान पद छीन लिये गये थे और चारों ओर उन्हें मौत ही मौत दिखाई देती थी। इस्कन्द्रिया में रहनेवाले समस्त ईसाई समाज के भारतीय संकट में थे। जिसके विषय में ईसावलम्बी होने का जरा भी सन्देह होता, उसे तुरन्त क़ैद में डाल दिया जाता था। सारे देश में इन खबरों से हाहा

कार मचा हुआ था कि स्याम, अरब, ईरान आदि स्थानों में ईसाई बिशपों और व्रतधारिणी कुमारियों को कोड़े मारे गये हैं, शूली दी गई है और जंगल के जानवरों के सामने डाल दिया गया है। इस दारुण विपत्ति के समय जब ऐसा निश्चय हो रहा था कि ईसाइयों का नाम-निशान भी न रहेगा, एन्थोनी ने अपने एकान्तवास से निकलकर मानों मुरझाये हुए धान में पानी डाल दिया। एन्थोनी मिस्र निवासी ईसाइयों का नेता, विद्वान, सिद्ध पुरुष था, जिसके अलौकिक कृत्यों की खबरें दूर-दूर तक फैली हुई थीं। वह आत्म-ज्ञानी और तपस्वी था। उसने समस्त देश में भ्रमण करके ईसाई सम्प्रदाय मात्र को श्रद्धा और धर्मोत्साह से प्लावित कर दिया। विधर्मियों से गुप्त रहकर वह एक ही समय में ईसाइयों की समस्त सभाओं में पहुँच जाता था, और सभी में उस शक्ति और विचारशीलता का संचार कर देता था जो उसके रोम रोम में व्याप्त थी। गुलामों के साथ असाधारण कठोरता का व्यवहार किया गया था। इससे भयभीत होकर कितने ही धर्म-विमुख हो गये, और अधिकांश जंगल को भाग गये। वहाँ या तो वे साधु हो जायँगे या डाके मारकर निर्वाह करेंगे। लेकिन अहमद पूर्ववत् इन सभाओं में सम्मिलित होता, क़ैदियों से भेंट करता, आहत पुरुषों का क्रिया-कर्म करता, और निर्भय होकर ईसाई धर्म की घोषणा करता था। प्रतिभाशाली एन्थोनी अहमद की यह दृढ़ता और निश्चलता देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि चलते समय छाती से लगा लिया और उसे बड़े प्रेम से आशीर्वाद दिया।

जब थायस सात वर्ष की हुई तो अहमद ने उससे ईश्वर-चर्चा करनी शुरू की। उसकी कथा सत्य और असत्य का मिश्रण लेकिन बाल्यहृदय अनुकूल थी।

ईश्वर फिरऊन की भाँति स्वर्ग में, अपने हरम के खेमों और अपने बाग़ के वृक्षों की छाँह में रहता है। वह बहुत प्राचीन काल से वहाँ रहता है, और दुनिया से भी पुराना है। उसके केवल एक ही बेटा है, जिसका नाम प्रभु ईसू है। वह स्वर्ग के दूतों से और रमणी युवतियों से भी सुन्दर है। ईश्वर उसे हृदय से प्यार करता है। उसने एक दिन प्रभु मसीह से कहा—मेरे भवन और हरम, मेरे छुहारे के वृक्षों और मीठे पानी की नदियों को

छोड़कर पृथ्वी पर जाओ और दीन दुखी प्राणियों का कल्याण करो ! वहाँ तुझे छोटे बालक की भाँति रहना होगा। वहाँ दुःख ही तेरा भोजन होगा और तुझे इतना रोना होगा कि तेरी आँसुओं से नदियाँ बह निकलें, जिनमें दीन दुखी जन नहाकर अपनी थकन को भूल जायँ। जाओ प्यारे पुत्र !

प्रभु मसीह ने अपने पूज्य पिता की आज्ञा मान ली और आकर बेथलेहेम नगर में अवतार लिया। वह खेतों और जंगलों में फिरते थे और अपने साथियों से कहते थे—मुबारक हैं वे लोग जो भूखे रहते हैं, क्योंकि मैं उन्हें अपने पिता की मेज पर खाना खिलाऊँगा। मुबारक हैं वे लोग जो प्यासे रहते हैं, क्योंकि वह स्वर्ग की निर्मल नदियों का जल पियेंगे और मुबारक हैं वे जो रोते हैं, क्योंकि मैं अपने दामन से उनके आँसू पोछूँगा !

यही कारण है कि दीन-हीन प्राणी उन्हें प्यार करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं। लेकिन धनी लोग उनसे डरते हैं कि कहीं यह गरीबों को उनसे ज्यादा धनी न बना दें। उस समय क्लियोपेटरा और सीजर पृथ्वी पर सबसे बलवान थे। वे दोनों ही मसीह से जलते थे, इसी लिए पुजारियों और न्यायाधीशों को हुक्म दिया कि प्रभु मसीह को मार डालो। उनकी आज्ञा से लोगों ने एक सलीब खड़ी की और प्रभु को सूली पर चढ़ा दिया। किन्तु प्रभु मसीह ने क़ब्र के द्वार को तोड़ डाला और फिर अपने पिता ईश्वर के पास चले गये।

उसी समय से प्रभु मसीह के भक्त स्वर्ग को जाते हैं। ईश्वर प्रेम से उनका स्वागत करता है और उनसे कहता है—आओ, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ क्योंकि तुम मेरे बेटे को प्यार करते हो। हाथ धोकर मेज पर बैठ जाओ। तब स्वर्ग की अप्सराएँ गाती हैं और जब तक मेहमान लोग भोजन करते हैं, नाच होता रहता है। उन्हें ईश्वर अपनी आँखों की ज्योति से भी अधिक प्यार करता है, क्योंकि वे उसके मेहमान होते हैं और उनके विश्राम के लिए अपने भवन के ग़लीचे और उनके स्वादन के लिए अपने बाग़ का अनार प्रदान करता है।

अहमद इस प्रकार थायस से ईश्वर-चर्चा करता था। वह विस्मित होकर यह कहती थी—मुझे ईश्वर के बाग़ के अनार मिलें तो खूब खाऊँ।

जब यह सत्कार समाप्त हो गया और सब लोग खोह के बाहर निकले तो अहमद ने विशप से कहा—

पूज्य पिता, हमें आज आनन्द मनाना चाहिए, क्योंकि हमने एक आत्मा को प्रभु मसीह के चरणों पर समर्पित किया। आज्ञा हो तो हम आपके शुभ-स्थान पर चलें और शेष रात्रि उत्सव मनाने में काटें।

बिशप ने प्रसन्नता से इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। लोग विशप के घर आये। इसमें केवल एक कमरा था। दो कोच रखे हुए थे और एक फटी हुई दरी बिछी थी। जब यह लोग अन्दर पहुँचे तो बिशप ने नीतिदा से कहा—

चूल्हा और तेल का बोतल लाओ। भोजन बनायें।

यह कहकर उसने कुछ मछलियाँ निकालीं, उन्हें तेल में भूना, तब सबके सब फर्श पर बैठकर भोजन करने लगे। बिशप ने अपनी यन्त्रणाओं का वृत्तान्त कहा और ईसाइयों की विजय पर विश्वास प्रकट किया। उसकी भाषा बहुत ही पेचदार, अलकृत, उलझी हुई थी। तत्त्व कम, शब्दाडम्बर बहुत था। थायस मन्त्रमुग्ध सी बैठी सुनती रही।

भोजन समाप्त हो जाने पर विशप ने मेहमानों को थोड़ी सी शराब पिलाई। नशा चढा तो वे बहक बहककर बातें करने लगे। एक क्षण के बाद अहमद और नीतिदा ने नाचना शुरू किया। यह प्रेत नृत्य था। दोनों हाथ हिला-हिलाकर कभी एक दूसरे की तरफ लपकते, कभी दूर हट जाते। जब सबेरा होने में थोड़ी देर रह गई तो अहमद ने थायस को फिर गोद में उठाया और घर चला आया।

अन्य बालकों की भाँति थायस भी आमोदप्रिय थी। दिन भर वह गलियों में बालकों के साथ नाचती गाती रहती थी। रात को घर आती तब भी वह गीते गाया करती, जिनका सिर-पैर कुछ न होता।

अब उसे अहमद जैसे शान्त, सीधे सादे आदमी की अपेक्षा लड़के-लड़कियों की सगति अधिक रुचिकर मालूम होती। अहमद भी उसके साथ कम दिखाई देता। ईसाइयों पर अब बादशाह की क्रूर दृष्टि न थी, इसलिए वे अबाधरूप से धर्म-सभाएँ करने लगे थे। धर्मनिष्ठ अहमद इन सभाओं

में सम्मिलित होने से कभी न चूकता। उसका धर्मोत्साह दिनों दिन बढ़ने लगा। कभी कभी वह बाजार में ईसाइयों को जमा करके उन्हें आनेवाले सुखों की शुभ सूचना देता। उसकी सूरत देखते ही शहर के भिखारी, मजदूर, गुलाम, जिनका कोई आश्रय न था, जो रातों में सड़क पर सोते थे, एकत्र हो जाते और वह उनसे कहता—गुलामों के मुक्त होने के दिन निकट हैं, न्याय जल्द आनेवाला है, धन के मतवाले चैन की नींद न सो सकेंगे। ईश्वर के राज्य में गुलामों को ताजा शराब और स्वादिष्ट फल खाने को मिलेंगे, और धनी लोग कुत्ते की भाँति दबके हुए मेज के नीचे बैठे रहेंगे और उनका जूठन खायेंगे।

यह शुभ सन्देश शहर के कोने कोने में गूँजने लगता और धनी स्वामियों को शंका होती कि कहीं उनके गुलाम उत्तेजित होकर बग़ावत न कर बैठें। थायस का पिता भी उससे जला करता था। वह कुत्सित भावों को गुप्त रखता।

एक दिन एक चाँदी का नमकदान जो देवताओं के यज्ञ के लिए अलग रखा हुआ था, चोरी हो गया। अहमद ही अपराधी ठहराया गया। अवश्य अपने स्वामी को हानि पहुँचाने और देवताओं का अपमान करने के लिए उसने यह अकर्म किया है। चोरी को साबित करने के लिए कोई प्रमाण न था और अहमद पुकार पुकारकर कहता था—मुझ पर व्यर्थ ही यह दोषारोपण किया जाता है। जिस पर भी वह अदालत में खड़ा किया गया। थायस के पिता ने कहा, यह कभी मन लगाकर काम नहीं करता। न्यायाधीश ने उसे प्राणदण्ड का हुक्म दे दिया। जब अहमद अदालत से चलने लगा तो न्यायाधीश ने कहा—तुमने अपने हाथों से अच्छी तरह काम नहीं लिया इसलिए अब वे सलीब में ठोंक दिये जायँगे।

अहमद ने शान्तिपूर्वक फैसला सुना, दीनता से न्यायाधीश को प्रणाम किया और तब कारागार में बन्द कर दिया गया। उसके जीवन के केवल तीन दिन और थे, और तीनों दिन वह क़ैदियों को उपदेश देता रहा। कहते हैं, उसके उपदेशों का ऐसा असर पड़ा कि सारे क़ैदी और जेल के कर्मचारी मसीह की शरण में आ गये। यह उसके अविचल धर्मानुराग का फल था।

चौथे दिन वह उसी स्थान पर पहुँचाया गया जहाँ से दो साल पहले, थायस

थायस ने कहा—मैं शोक से तुम्हारे साथ चलूँगी और उठकर बुढिया के पीछे शहर के बाहर चली गई।

बुढिया का नाम मीरा था। उसके पास कई लड़के-लड़कियों की एक मण्डली थी। उन्हें उसने नाचना, गाना, नकलें करना सिखाया था। इस मण्डली को लेकर वह नगर नगर घूमती थी, और अमीरों के जलसों में उनका नाचना गाना कराके अच्छा पुरस्कार लिया करती थी।

उसकी चतुर आँखों ने देख लिया कि यह कोई साधारण लड़की नहीं है। उसका उठान कहे देता था कि आगे चलकर वह अत्यन्त रूपवती रमणी होगी। उसने उसे कोड़े मारकर सगीत और पिंगल की शिक्षा दी। जब सितार के तालों के साथ उसके पैर न उठते तो वह उसकी कोमल पिंडलियों में चमड़े के तस्मे से मारती। उसका पुत्र जो हिजड़ा था, थायस से वह द्वेष रखता था जो उसे स्त्री मात्र से था। पर वह नाचने में, नक़ल करने में, भाव बताने में, मनोगत भावों को सकेत, सैन, आकृति द्वारा व्यक्त करने में, प्रेम की घातों के दर्शाने में, अत्यन्त कुशल था। हिजड़ों में यह गुण प्राय ईश्वरदत्त होते हैं। उसने थायस को यह विद्या सिखाई, खुशी से नहीं, बल्कि इस लिए कि इस तरकीब से वह जी भरकर थायस को गालियाँ दे सकता था। जब उसने देखा कि थायस नाचने-गाने में निपुण होती जाती है और रसिक लोग उसके नृत्यगान से जितने मुग्ध होते हैं उतने मेरे नृत्य कौशल से नहीं होते तो उसकी छाती पर साँप लोटने लगा। वह उसके गालों को नोच लेता, उसके हाथ-पैर में चुटकियाँ काटता। पर उसकी जलन से थायस को लेशमात्र भी दुख न होता था। निदय व्यवहार का उसे अभ्यास हो गया था। अन्तयोकस उस समय बहुत आबाद शहर था। मीरा जब इस शहर में आई तो उसने रईसों से थायस की खूब प्रशसा की। थायस का रूप लावण्य देखकर लोगों ने बड़े चाव से उसे अपनी राग रग की मजलिसों मे निमन्त्रित किया और उसके नृत्य, गान पर मोहित हो गये। शनै शनै यही उसका नित्य का काम हो गया। नृत्य गान समाप्त होने पर वह प्राय सेठ साहूकारों के साथ नदी के किनारे, घने कुञ्जों में विहार करती। उस समय तक उसे प्रेम के मूल्य का ज्ञान न था, जो कोई बुलाता

उसके पास जाती, मानों कोई जौहरी का लड़का धनराशि को कौड़ियों की भाँति लुटा रहा हो। उसका एक एक कटाक्ष हृदय को कितना उद्विग्न कर देता है, उसका एक एक करस्पर्श कितना रोमाञ्चकारी होता है, उसके अज्ञात यौवन को विदित न था।

एक रात को उसका मुजरा नगर के सबसे धनी रसिक युवकों के सामने हुआ। जब नृत्य बन्द हुआ तो नगर के प्रधान राज्य कर्मचारी का बेटा, जवानी की उमङ्ग और काम-चेतना से विह्वल होकर उसके पास आया और ऐसे मधुर स्वर में बोला जो प्रेम रस में सनी हुई थी—

थायस, यह मेरा परम सौभाग्य होता यदि तेरे अलकों में गुँथी हुई पुष्पमाला या तेरे कोमल शरीर का आभूषण, अथवा तेरे चरणों की पादुका मैं होता। यह मेरी परम लालसा है कि पादुका की भाँति तेरे सुन्दर चरणों से कुचला जाता, मेरा प्रेमालिंगन तेरे सुकोमल शरीर का आभूषण और तेरी अलकराशि का पुष्प होता। सुन्दरी रमणी, मैं प्राणों को हाथ में लिये तेरी भेंट करने को उत्सुक हो रहा हूँ। मेरे साथ चल और हम दोनों प्रेम में मग्न होकर संसार को भूल जायँ।

जब तक वह बोलता रहा, थायस उसकी ओर विस्मित होकर ताकती रही। उसे ज्ञात हुआ कि उसका रूप मनोहर है। अकस्मात् उसे अपने माथे पर ठण्डा पसीना बहता हुआ जान पड़ा। वह हरी घास की भाँति आर्द्र हो गई। उसके सिर में चक्कर आने लगे आँखों के सामने मेघघटा सी उठती हुई जान पड़ी। युवक ने फिर वही प्रेमाकांक्षा प्रकट की, लेकिन थायस ने फिर इन्कार किया। उसके आतुर नेत्र, उसकी प्रेम याचना सब निष्फल हुई, और जब उसने अधीर होकर उसे अपनी गोद में ले लिया और बलात खींच ले जाना चाहा तो उसने निष्ठुरता से उसे हटा दिया। तब वह उसके सामने बैठकर रोने लगा। पर उसके हृदय में एक नवीन अज्ञात और अलक्षित चैतन्यता उदित हो गई थी। वह अब भी दुराग्रह करती रही।

मेहमानों ने सुना तो बोले—यह कैसी पगली है! लोलस कुलीन, रूपवान, धनी है, और यह नाचनेवाली युवती उसका अपमान करती है!

लोलस उस रात घर लौटा तो प्रेम मद से मतवाला हो रहा था। प्रात

काल वह फिर थायस के घर आया, तो उसका मुख विवर्ण और आँखें लाल थीं। उसने थायस के द्वार पर फूलों की माला चढ़ाई। लेकिन थायस भयभीत और अशान्त थी, और लोलस से मुँह छिपाती रहती थी। फिर भी लोलस की स्मृति एक क्षण के लिए भी उसकी आँखों से न उतरती। उसे वेदना होती थी पर वह इसका कारण न जानती थी। उसे आश्चर्य होता था कि मैं इतनी खिन्न और अन्यमनस्क क्यों हो गई हूँ। वह अन्य सब प्रेमियों से दूर भागती थी। उनसे उसे घृणा होती थी। उसे दिन का प्रकाश अच्छा न लगता, सारे दिन अकेले बिछावन पर पड़ी, तकिये में मुँह छिपाये रोया करती। लोलस कई बार किसी-न-किसी युक्ति से उसके पास पहुँचा, पर उसका प्रेमाग्रह, रोना धोना, एक भी उसे न पिघला सका। उसके सामने वह ताक न सकती, केवल यही कहती—नहीं, नहीं।

लेकिन एक पक्ष के बाद उसकी जिद जाती रही। उसे ज्ञात हुआ कि मैं लोलस के प्रेमपाश में फँस गई हूँ। वह उसके घर गई और उसके साथ रहने लगी। अब उसके आनन्द की सीमा न थी। दिन भर एक दूसरे से आँखें मिलाये बैठे प्रेमालाप किया करते। सन्ध्या को नदी के नीरव निर्जन तट पर हाथ में हाथ डाले टहलते। कभी-कभी अरुणोदय के समय उठकर पहाडियों पर सम्बुल के फूल बटोरने चले जाते। उनकी थाली एक थी, प्याला एक था, मेज एक थी। लोलस उसके मुँह के अँगूर अपने मुँह से निकालकर खा जाता।

तब मीरा लोलस के पास आकर रोने पीटने लगी कि मेरी थायस को छोड़ दो। वह मेरी बेटी है, मेरी आँखों की पुतली! मैंने इसी उदर से उसे निकाला, इसी गोद में उसका लालन पालन किया और अब तू उसे मेरी गोद से छीन लेना चाहता है।

लोलस ने उसे प्रचुर धन देकर बिदा किया, लेकिन जब वह धन तृष्णा से लोलुप होकर फिर आई तो लोलस ने उसे क़ैद करा दिया। न्यायाधिकारियों को ज्ञात हुआ कि वह कुटनी है, भोली लड़कियों को बहका ले जाना ही उसका उद्यम है तो उसे प्राणदण्ड दे दिया और वह जंगली जानवरों के साथ फेंक दी गई।

लोलस अपने अखण्ड, सम्पूर्ण कामना से थायस को प्यार करता था। उसकी प्रेम-कल्पना ने विराट् रूप धारण कर लिया था, जिससे उसकी किशोर चेतना सशक हो जाती। थायस शुद्ध अन्त करण से कहती—

मैंने तुम्हारे सिवाय और किसी से प्रेम नहीं किया।

लोलस जवाब देता—तुम ससार में अद्वितीय हो। दोनों पर छ महीने तक यह नशा सवार रहा। अन्त में टूट गया। थायस को ऐसा जान पडता कि मेरा हृदय शून्य और निर्जन है। वहाँ से कोई चीज ग़ायब हो गई है। लोलस उसकी दृष्टि में कुछ और मालूम होता था। वह सोचती—

'मुझमें सहसा यह अन्तर क्योंकर हो गया? यह क्या बात है कि लोलस अब और मनुष्यों का सा हो गया है, अपना सा नहीं रहा? मुझे क्या हो गया है?'

यह दशा उसे असह्य प्रतीत होने लगी। अखण्ड प्रेम के आस्वादन के बाद अब यह नीरस, शुष्क व्यापार उसकी तृष्णा को तृप्त न कर सका। वह अपने खोये हुए लोलस को किसी अन्य प्राणी में खोजने की गुप्त इच्छा को हृदय में छिपाये हुए लोलस के पास से चली गई। उसने सोचा प्रेम रहने पर भी किसी पुरुष के साथ रहना उस आदमी के साथ रहने से कहीं सुलकर है जिससे अब प्रेम नहीं रहा। वह फिर नगर के विषय भोगियों के साथ उन धर्मोत्सवों में जाने लगी जहाँ वस्त्रहीन युवतियाँ मन्दिरों में नृत्य किया करती थीं। या जहाँ वेश्याओं के गोल के गोल नदी में तैरा करते थे। वह उस विलास प्रिय और रँगीले नगर के राग रग मे दिल खालकर भाग लेने लगी। वह नित्य रगशालाओं में आती जहाँ चतुर गवैये और नर्तक देश-देशान्तरों से आकर अपने करतब दिखाते थे और उत्तेजना के भूखे दर्शक-वृन्द वाह-वाह की ध्वनि से आसमान सिर पर उठा लेते थे।

थायस गायनों, अभिनेताओं, विशेषत उन स्त्रियों के चाल ढाल को बड़े ध्यान से देखा करती थी जो दु खान्त नाटकों में मनुष्य से प्रेम करनेवाली देवियों या देवताओं से प्रेम करनेवाली स्त्रियों का अभिनय करती थीं। शीघ्र ही उसे वह लटके मालूम हो गये, जिनके द्वारा वह पात्रियाँ दर्शकों का मन हर लेती थीं, और उसने सोचा, क्या मैं जो उन सबों से रूपवती हूँ, ऐसा ही

अभिनय करके दर्शकों को प्रसन्न नहीं कर सकती ! वह रंगशाला के व्यवस्थापक के पास गई और उससे कहा कि मुझे भी इस नाट्यमंडली में सम्मिलित कर लीजिए। उसके सौन्दर्य ने उसकी पूर्व शिक्षा के साथ मिलकर उसकी सिफारिश की। व्यवस्थापक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह पहली बार रंग-मंच पर आई।

पहले दर्शकों ने उसका बहुत आशाजनक स्वागत न किया। एक तो वह इस काम में अभ्यस्त न थी, दूसरे उसके प्रशंसा के पुल बाँधकर जनता को पहले ही से उत्सुक न बनाया गया था। लेकिन कुछ दिनों तक गौण चरित्रों का पार्ट खेलने के बाद उसके यौवन ने वह हाथ-पाँव निकाले कि सारा नगर लोट पोट हो गया। रंगशाला में कहीं तिल रखने भर की जगह न बचती। नगर के बड़े बड़े हाकिम, रईस- अमीर, लोकमत के प्रभाव से रंगशाला में आने पर मजबूर हुए। शहर के चौकीदार, पल्लेदार, मेहतर, घाट के मजदूर, दिन-दिन भर उपवास करते थे कि अपनी जगह सुरक्षित करा लें, कविजन उसकी प्रशंसा में कवित्त कहते। लम्बी दाढ़ियोंवाले विज्ञान-शास्त्री व्यायाम-शालाओं में उसकी निन्दा और उपेक्षा करते। जब उसका तामजान सड़क पर से निकलता तो ईसाई पादरी मुँह फेर लेते थे। उसके द्वार की चौखट पुष्पमालाओं से ढकी रहती थी। अपने प्रेमियों से उसे इतना अतुल धन मिलता कि उसे गिनना मुशकिल था। तराजू पर तोल लिया जाता था। कृपण बूढ़ों की संग्रह की हुई समस्त सम्पत्ति उसके ऊपर कौड़ियों की भाँति लुटाई जा रही थी। पर उसे गर्व न था, ऐंठन न थी। देवताओं की कृपा-दृष्टि और जनता की प्रशंसा-ध्वनि से उसके हृदय को गौरव-युक्त आनन्द होता था। सबकी प्यारी बनकर वह अपने को प्यार करने लगी थी।

कई वर्ष तक ऐन्टिओकवासियों के प्रेम और प्रशंसा का सुख उठाने के बाद उसके मन में प्रबल उत्कण्ठा हुई कि इस्कन्द्रिया चलूँ और उस नगर में अपना ठाट-बाट दिखाऊँ जहाँ बचपन में मैं नंगी और भूखी, दरिद्र और दुर्बल, सड़कों पर मारी-मारी फिरती थी। इस्कन्द्रिया आँखें बिछाये उसकी राह देखता था। उसने बड़े हर्ष से उसका स्वागत किया और उस पर मोती

बरसाये। वह क्रीड़ाभूमि में आती तो धूम मच जाती। प्रेमियों और विलासियों के मारे उसे साँस न मिलता, पर वह किसी को मुँह न लगाती। दूसरा लोलस उसे जब न मिला, तो उसने उसकी चिन्ता ही छोड़ दी थी। उस स्वर्ग-सुख की अब उसे आशा न थी।

उसके अन्य प्रेमियों में तत्त्वज्ञानी निसियास भी था जो विरक्त होने का दावा करने पर भी उसके प्रेम का इच्छुक था। वह धनवान् था पर अन्य धनपतियों की भाँति अभिमानी और मन्दबुद्धि न था। उसके स्वभाव में विनय और सौहार्द्र की आभा झलकती थी, किन्तु उसका मधुर हास्य और मृदुकल्पनाएँ उसे रिझाने में सफल न होतीं। उसे निसियास से प्रेम न था, कभी-कभी उसके सुभाषितों से उसे चिढ़ होती थी। उसके शंकावाद से उसका चित्त व्यग्र हो जाता था, क्योंकि निसियास की श्रद्धा किसी पर न थी और थायस की श्रद्धा सभी पर थी। उसे ईश्वर पर, भूत प्रेतों पर, जादू-टोने पर, जन्त्र मन्त्र पर, पूरा विश्वास था। वह इश्वर के अनन्त न्याय पर विश्वास करती थी। उसकी भक्ति प्रभु मसीह पर भी थी, शामवालों की पुनीता देवी पर भी उसे विश्वास था कि रात को जब अमुक प्रेत गलियों में निकलता है तो कुत्तियाँ भूँकती हैं। मारण, उच्चाटन, वशीकरण के विधानों पर और शक्ति पर उसे अटल विश्वास था। उसका चित्त अज्ञात के लिए उत्सुक रहता था। वह देवताओं की मनौतियाँ करती थी और सदैव शुभाशाओं में मग्न रहती थी। भविष्य से वह सशंक रहती थी, फिर भी उसे जानना चाहती थी। उसके यहाँ ओझे, सयाने, तांत्रिक, मन्त्र जगानेवाले, हाथ देखनेवाले जमा रहते थे। वह उनके हाथों नित्य धोखा खाती पर सतर्क न होती थी। वह मौत से डरती थी और उससे सतर्क रहती थी। सुख भोग के समय भी उसे भय होता था कि कोई निर्दय कठोर हाथ उसका गला दबाने के लिए बढ़ा आता है और वह चिल्ला उठती थी।

निसियास कहता था—प्रिये, एक ही बात है, चाहे हम रुग्ण और जर्जर होकर महारात्रि की गोद में समा जायँ, अथवा यहीं बैठे, आनन्द भोग करते, हँसते खेलते, संसार से प्रस्थान कर जायँ। जीवन का उद्देश्य सुख-भोग है। आओ जीवन की बहार लूटें, प्रेम से हमारा जीवन सफल होगा।

इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान है। इसके सिवाय सब मिथ्या है, धोखा है। प्रेम ही से ज्ञान प्राप्त होता है। जिसका हमको ज्ञान नहीं, वह केवल कल्पना है। मिथ्या के लिए अपने जीवन सुख में क्यों बाधा डालें ?

थायस सरोष होकर उत्तर देती—

तुम जैसे मनुष्यों से भगवान बचाये, जिन्हें कोई आशा नहीं, कोई भय नहीं। मैं प्रकाश चाहती हूँ, जिससे मेरा अन्त करण चमक उठे।

जीवन के रहस्य को समझने के लिये उसने दर्शनग्रन्थों को पढना शुरू किया, पर वह उसकी समझ में न आये। ज्यों ज्यों बाल्यावस्था उससे दूर होती जाती थी, त्यों त्यों उसकी याद उसे विकल करती थी। उसे रातो को भेष बदलकर उन सडकों, गलियों, चौराहों पर घूमना बहुत प्रिय मालूम होता जहाँ उसका बचपन इतने दुख से कटा था। उसे अपने माता-पिता के मरने का दु:ख होता था, इस कारण और भी कि वह उन्हें प्यार न कर सकी थी।

जब किसी ईसाई पूजक से उसकी भेंट हो जाती तो उसे अपना बतिसमा याद आता और चित्त अशान्त हो जाता। एक रात को वह एक लम्बा लबादा ओढे, सुन्दर केशों को एक काले टोप से छिपाये, शहर के बाहर विचर रही थी कि सहसा वह एक गिरजाघर के सामने पहुँच गई। उसे याद आया, मैंने इसे पहले भी देखा है। कुछ लोग अन्दर गा रहे थे और दीवार के दरारों से उज्ज्वल प्रकाश-रेखाएँ बाहर झाँक रही थीं। इसमें कोई नवीन बात न थी, क्योंकि इधर लगभग २० वर्षों से ईसाई धर्म के मार्ग में कोई विघ्न बाधा न थी। ईसाई लोग निरापद रूप से अपने धर्मोत्सव करते थे। लेकिन इन भजनों में इतनी अनुरक्त, करुण स्वर्ग-ध्वनि थी, जो मर्मस्थल में चुटकियाँ लेती हुई जान पडती थी। थायस अन्त करण से वशीभूत होकर इस तरह द्वार खोलकर भीतर घुस गई मानों किसी ने उसे बुलाया है। वहाँ उसे बाल, वृद्ध, नर नारियों का एक बड़ा समूह एक समाधि के सामने सिजदा करता हुआ दिखाई दिया। यह क़ब्र केवल पत्थर की एक ताबूत थी, जिस पर अंगूर के गुच्छों और बेलों के आकार बने हुए थे। पर उस पर लोगों की असीम श्रद्धा थी। वह खजूर की टहनियों और

गुलाब की पुष्पमालाओं से ढकी हुई थी। चारों तरफ दीपक जल रहे थे और उसके मलिन प्रकाश में लोबान, ऊद आदि का धुआँ स्वर्ग दूतों के वस्त्रों की तहों से दीखते थे, और दीवार के चित्र स्वर्ग के दृश्यों के से। कई श्वेत वस्त्रधारी पादरी क़ब्र के पैरों पर पेट के बल पड़े हुए थे। उनके भजन दुःख के आनन्द को प्रकट करते थे और अपने शोकोल्लास में दुःख और सुख, हर्ष और शोक का ऐसा समावेश कर रहे थे कि थायस को उनके सुनने से जीवन के सुख और मृत्यु के भय, एक साथ ही किसी जल स्रोत की भाँति अपनी सचिन्त स्नायुओं में बहते हुए जान पड़े।

जब गाना बन्द हुआ तो भक्त-जन उठे और एक कतार में कब्र के पास जाकर उसे चूमा। यह सामान्य प्राणी थे, जो मजूरी करके निर्वाह करते थे। क्या धीरे धीरे पग उठाते, आँखों में आँसू भरे, सिर झुकाये, वे आगे बढ़ते और बारी बारी से कब्र की परिक्रमा करते थे! स्त्रियों ने अपने बालकों को गोद में उठाकर क़ब्र पर उनके ओंठ रख दिये।

थायस ने विस्मित और चिन्तित होकर एक पादरी से पूछा—पूज्य पिता, यह कैसा समारोह है?

पादरी ने उत्तर दिया—क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हम आज सन्त थियोडोर की जयन्ती मना रहे हैं? उनका जीवन पवित्र था। उन्होंने अपने को धर्म की बलिवेदी पर चढ़ा दिया और इसी लिए हम श्वेत वस्त्र पहनकर उनकी समाधि पर लाल गुलाब के फूल चढ़ाने आये हैं।

यह सुनते ही थायस घुटनों के बल बैठ गई और जोर से रो पड़ी। अहमद की अर्ध विस्मृत स्मृतियाँ जाग्रत हो गईं। उस दीन, दुखी, अभागे प्राणी की कीर्ति कितनी उज्ज्वल है! उसके नाम पर दीपक जलते हैं, गुलाब की लपटें आती हैं, हवन के सुगन्धित धुएँ उठते हैं, मीठे स्वरों का नाद होता है और पवित्र आत्माएँ मस्तक झुकाती हैं। थायस ने सोचा—

अपने जीवन में वह पुण्यात्मा था, पर अब वह पूज्य और उपास्य हो गया है! वह अन्य प्राणियों की अपेक्षा क्यों इतना श्रद्धास्पद है? यह कौन सी अज्ञात वस्तु है जो धन और भोग से भी बहुमूल्य है?

वह आहिस्ता से उठी और उस सन्त की समाधि की ओर चली जिसने

उसे गोद में खेलाया था। उसकी अपूर्व आँखों में भरे हुए अश्रुबिन्दु दीपक के आलोक में चमक रहे थे। तब वह सिर झुकाकर, दीन भाव से, कब्र के पास गई और उस पर अपने अधरों से अपनी हार्दिक श्रद्धा अंकित कर दी—उन्हीं अधरों से जो अगणित तृष्णाओं का क्रीड़ा क्षेत्र थे।

जब वह घर आई तो निसियास को बाल सँवारे, वस्त्रों में सुगन्ध मले, कबा के बन्द खोले बैठे देखा। वह उसके इन्तजार में समय काटने के लिए एक नीति-ग्रन्थ पढ रहा था। उसे देखते ही वह बाँहें खोले उसकी ओर बढा और मृदुहास्य से बोला—कहाँ गई थीं, चञ्चला देवी? तुम जानती हो तुम्हारे इन्तजार में बैठा हुआ, मैं इस नीति-ग्रन्थ में क्या पढ रहा था? नीति के वाक्य और शुद्धाचरण के उपदेश? कदापि नहीं। ग्रन्थ के पन्नों पर अक्षरों की जगह अगणित छोटी छोटी थायसें नृत्य कर रही थीं। उनमें से एक भी मेरी उँगली से बडी न थी, पर उनकी छवि अपार थी और सब एक ही थायस का प्रतिबिम्ब थीं। कोई तो रत्नजडित वस्त्र पहने अकडती हुई चलती थी, कोई श्वेत मेघसमूहों के सदृश स्वच्छ आवरण धारण किये हुए थी, कोई ऐसी भी थीं जिनकी नग्नता हृदय में वासना का संचार करती थी। सब के पीछे दो एक ही रंग रूप की थीं। इतनी अनुरूप कि उनमें भेद करना कठिन था। दोनों हाथ में हाथ मिलाये हुए थीं, दोनों ही हँसती थीं। पहली कहती थी—'मैं प्रेम हूँ।' दूसरी कहती थी—'मैं मृत्यु हूँ।'

यह कहकर निसियास ने थायस को अपने करपाश में खींच लिया। थायस की आँखें झुकी हुई थीं। निसियास को यह ज्ञान न हो सका कि उनमें कितना रोष भरा हुआ है। वह इसी भाँति सूक्तियों की वर्षा करता रहा, इस बात से बेखबर कि थायस का ध्यान ही इधर नहीं है। वह कह रहा था—जब मेरी आँखों के सामने यह शब्द आये—'अपनी आत्मशुद्धि के मार्ग में कोई बाधा मत आने दो' तो मैंने पढा 'थायस के अधरस्पर्श अग्नि से दाहक और मधु से मधुर हैं।' इसी भाँति एक पण्डित दूसरे पण्डितों के विचारों को उलट-पलट देता है, और यह तुम्हारा ही दोष है। यह सर्वथा सत्य है कि जब तक हम वही हैं जो हैं, तब तक हम दूसरों के विचारों में अपने ही विचारों की झलक देखते रहेंगे।

वह अब भी इधर मुख़ातिब न हुई। उसकी आत्मा अभी तक हब्शी का क्रब के सामने झुकी हुई थी। सहसा उसे आह भरते देखकर उसने अपनी गर्दन का चुम्बन कर लिया और बोला—प्रिये, संसार में सुख नहीं है जब तक हम संसार को भूल न जायें। आओ, हम संसार से छल करें, छल करके उससे सुख छीन लें—प्रेम में सब कुछ भूल जायें।

लेकिन उसने उसे पीछे हटा दिया और व्यथित होकर बोली—तुम प्रेम का मर्म नहीं जानते! तुमने कभी किसी से प्रेम नहीं किया। मैं तुम्हें नहीं चाहती, ज़रा भी नहीं चाहती। यहाँ से चले जाओ, मुझे तुम्हारी सूरत से नफ़रत है। मुझे उन सब प्राणियों से घृणा है जो धनी हैं, आनन्दभोगी हैं। जाओ, जाओ। दया और प्रेम उन्हीं में है जो अभागे हैं। जब मैं छोटी थी तो मेरे यहाँ एक हब्शी था जिसने सलीब पर जान दी। वह सज्जन था, वह जीवन के रहस्यों को जानता था। तुम उसके चरण धोने योग्य भी नहीं हो। चले जाओ। तुम्हारा स्त्रियों का-सा शृंगार मुझे एक आँख नहीं भाता। फिर मुझे अपनी सूरत मत दिखाना।

यह कहते-कहते वह फ़र्श पर मुँह के बल गिर पड़ी और सारी रात रोकर काटी। उसने संकल्प किया कि मैं सन्त थियोडोर की भाँति दीन और दरिद्र दशा में जीवन व्यतीत करूँगी।

दूसरे दिन वह फिर उन्हीं वासनाओं में लिप्त हो गई जिनकी उसे चाट पड़ गई थी। वह जानती थी कि उसकी रूप-शोभा अभी पूरे तेज पर है, पर स्थायी नहीं, इसी लिए इसके द्वारा जितना सुख और जितनी ख्याति प्राप्त हो सकती थी उसे प्राप्त करने के लिए वह अधीर हो उठी। थियेटर में वह पहले की अपेक्षा और देर तक बैठकर पुस्तकावलोकन किया करती। वह कवियों, मूर्तिकारों और चित्रकारों की कल्पनाओं को सजीव बना देती थी। विद्वानों और तत्त्वज्ञानियों को उसकी गति, अंगविन्यास और उस प्राकृतिक माधुर्य की झलक नज़र आती थी जो समस्त संसार में व्यापक है और उनके विचार में ऐसी अपूर्व शोभा स्वयं एक पवित्र वस्तु थी। दीन, दरिद्र, मूर्ख लोग उसे एक स्वर्गीय पदार्थ समझते थे। कोई किसी रूप में उसकी उपासना करता था, कोई किसी रूप में। कोई उसे भोग्य समझता था, कोई स्तुत्य

और कोई पूज्य। किन्तु इस प्रेम, भक्ति और श्रद्धा की पात्री होकर भी वह दुखी थी, मृत्यु की शका उसे अब और भी अधिक होने लगी। किसी वस्तु से उसे इस शका से निवृत्ति न होती। उसका विशाल भवन और उपवन भी, जिनकी शोभा अकथनीय थी और जो समस्त नगर में जनश्रुति बने हुए थे, उसे आश्वस्त करने में असफल थे।

इस उपवन में ईरान और हिन्दुस्तान के वृक्ष थे, जिनके लाने और पालने में अपरिमित धन व्यय हुआ था। उनकी सिंचाई के लिए एक निर्मल जल धारा बहाई गई थी। समीप ही एक झील बनी हुई थी जिसमें एक कुशल कलाकार के हाथों सजाये हुए स्तम्भ चिह्नों और कृत्रिम पहाड़ियों तथा तट पर की सुन्दर मूर्तियों का प्रतिविम्ब दिखाई देता था। उपवन के मध्य में 'परियों का कुंज' था। यह नाम इसलिए पड़ा था कि उस भवन के द्वार पर तीन पूरे कद की स्त्रियों की मूर्तियाँ खड़ी थीं। वह सशंक होकर पीछे ताक रही थीं कि कोई देखता न हो। मूर्तिकार ने उनकी चितवनों द्वारा मूर्तियों में जान डाल दी थी। भवन में जो प्रकाश आता था वह पानी की पतली चादरों से छनकर मद्धिम और रंगीन हो जाता था। दीवारों पर भाँति भाँति की झालरें, मालाएँ और चित्र लटके हुए थे। बीच में एक हाथी दाँत की परम मनोहर मूर्ति थी जो निसियास ने भेंट की थी। एक तिपाई पर एक काले पाषाण की बकरी की मूर्ति थी, जिसकी आँखें नीलम की बनी हुई थीं। उसके थनों को घेरे हुए छः चीनी के बच्चे खड़े थे, लेकिन बकरी अपने फटे हुए खुर उठाकर ऊपर की पहाड़ी पर उचक जाना चाहती थी। फर्श पर ईरानी कालीनें बिछी हुई थीं, मसनदों पर कैथे के बने हुए सुनहरे बेल-बूटे थे। सोने के धूप-दानों से सुगन्धित धुएँ उठ रहे थे और बड़े बड़े चीनी के गमलों में फूलों से लदे हुए पौदे सजाये हुए थे। सिरे पर, ऊदी छाया में, एक बड़े हिन्दुस्तानी कछुए के सुनहरे नख चमक रहे थे जो पेट के बल उलट दिया गया था। यही थायस का शयनागार था। इसी कछुए के पेट पर लेटी हुई वह इस सुगन्ध और सजावट और सुषमा का आनन्द उठाती थी, मित्रों से बातचीत करती थी और या तो अभिनय-कला का मनन करती थी, या बीते हुए दिनों का।

तीसरा पहर था। थायस परियों के कुञ्ज में शयन कर रही थी। उसने आईने में अपने सौन्दर्य की अवनति के प्रथम चिह्न देखे थे, और उसे इस विचार से पीड़ा हो रही थी कि झुर्रियों और श्वेत बालों का आक्रमण होने-वाला है। उसने इस विचार से अपने को आश्वासन देने की विफल चेष्टा की कि मैं जड़ी बूटियों के हवन करके मन्त्रों द्वारा अपने वर्ण की कोमलता को फिर से प्राप्त कर लूँगी। उसके कानों में इन शब्दों की निर्दय ध्वनि आई—'थायस, तू बुढ़िया हो जायगी!' भय से उसके माथे पर ठण्डा ठण्डा पसीना आ गया। तब उसने पुन अपने को सँभालकर आईने में देखा और उसे ज्ञात हुआ कि म अब भी परम सुन्दरी और प्रेयसी बनने के योग्य हूँ। उसने पुलकित मन से मुसकिराकर मन मे कहा—'आज भी इस्कन्द्रिया में कोई ऐसी रमणी नहा है जो अगों की चपलता और लचक में मुझसे टक्कर ले सके। मेरी बाहों की शोभा अब भी हृदय को खींच सकती है, और यथार्थ में यही प्रेम का पाश है।'

वह इसी विचार में मग्न थी कि उसने एक अपरिचित मनुष्य को अपने सामने आते देखा। उसकी आँखों में ज्वाला थी, दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वस्त्र बहुमूल्य थे। उसके हाथ से आईना छूटकर गिर पड़ा और वह भय से चीख उठी।

पापनाशी स्तम्भित हो गया। उसका अपूर्व सौन्दर्य देखकर उसने शुद्ध अन्त करण से प्राथना की—

'भगवान्, मुझे ऐसी शक्ति दीजिए कि इस स्त्री का मुख मुझे लुब्ध न करे, वरन् तेरे इस दास की प्रतिज्ञा को और भी दृढ करे।'

तब अपने को सँभालकर वह बोला—

थायस, मे एक दूर देश में रहता हूँ, तेरे सौन्दर्य की प्रशसा सुनकर तेरे पास आया हूँ। मैंने सुना था तुमसे चतुर अभिनेत्री और तुमसे मुग्धकर स्त्री ससार में नहीं है। तुम्हारे प्रेम रहस्यों और तुम्हारे धन के विषय में जो कुछ कहा जाता है वह आश्चर्यजनक है, और उससे 'रोडोप' की कथा याद आती है, जिसकी कीर्ति को नील के माँझी नित्य गाया करते हैं। इसलिए मुझे भी तुम्हारे दर्शनों की अभिलाषा हुई, और अब मैं देखता हूँ कि प्रत्यक्ष सुनी सुनाई बातों से कहीं बढकर है। जितना मशहूर है उससे तुम हज़ार

गुनी चतुर और मोहिनी हो। वास्तव में तुम्हारे सामने बिना मतवालों की भाँति डगमगाये आना असम्भव है।

यह शब्द कृत्रिम थे, किन्तु योगी ने पवित्र भक्ति से प्रभावित होकर सच्चे जोश से उनका उच्चारण किया। थायस ने प्रसन्न होकर इस विचित्र प्राणी की ओर ताका जिससे वह पहले भयभीत हो गई थी। उसके अभद्र और उद्दण्ड वेश ने उसे विस्मित कर दिया। उसे अब तक जितने मनुष्य मिले थ, यह उन सबों से निराला था। उसके मन में ऐसे अदभुत प्राणी का जीवन-वृत्तान्त जानने की प्रबल उत्कण्ठा हुई। उसने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा—

महाशय, आप प्रेम-प्रदर्शन में बड़े कुशल मालूम होते हैं। होशियार रहिएगा कि मेरी चितवनें आपके हृदय के पार न हो जायें। मेरे प्रेम के मैदान में जरा सँभालकर कदम रखिएगा।

पापनाशी बोला—

थायश, मुझे तुमसे अगाध प्रेम है, तुम मुझे जीवन और आत्मा से भी प्रिय हो। तुम्हारे लिए मैंने अपना वन्यजीवन छोड़ा है, तुम्हारे लिए मेरे ओठों से, जिन्होंने मौनव्रत धारण किया था, अपवित्र शब्द निकले हैं। तुम्हारे लिए मैंन वह देखा है जो न देखना चाहिए था, वह सुना है जो मेरे लिए वर्जित था। तुम्हारे लिए मेरी आत्मा तड़प रही है, मेरा हृदय अधीर हो रहा है और जलस्रोत की भाँति विचार की धाराएँ प्रवाहित हो रही हैं। तुम्हारे लिए मैं अपने नगे पैर सर्पों और बिच्छुओं पर रखते हुए भी नहीं हिचका हूँ। अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि मुझे तुमसे कितना प्रेम है। लेकिन मेरा प्रेम उन मनुष्यों का सा नहीं है जो वासना की अग्नि से जलते तुम्हारे पास जीवभक्षी व्याघ्रों की, और उन्मत्त साँड़ों की भाँति दौड़े आते हैं। उनका वही प्रेम होता है जो सिंह को मृग शावक से। उनकी पाशविक कामलिप्सा तुम्हारी आत्मा को भी भस्मीभूत कर डालेगी। मेरा प्रेम पवित्र है, अनन्त है, स्थायी है। मैं तुमसे ईश्वर के नाम पर, सत्य के नाम पर प्रेम करता हूँ। मेरा हृदय पतितोद्धार और ईश्वरीय दया के भाव से परिपूर्ण है। मैं तुम्हें पत्तों में ढकी हुई शराब की मस्ती से और एक अल्परात्रि के सुख स्वप्न

से कहीं उत्तम पदार्थों का वचन देने आया हूँ। मैं तुम्हें महाप्रसाद और सुधा रस-पान का निमन्त्रण देने आया हूँ। मैं तुम्हें उस आनन्द का सुख-स्वाद सुनाने आया हूँ जो नित्य, अमर, अखण्ड है। मृत्युलोक के प्राणी यदि उसको देख लें तो आश्चर्य से मर जायँ।

थायस ने कुटिल हास्य करके उत्तर दिया—

मित्र, यदि वह ऐसा अद्भुत प्रेम है तो तुरन्त दिखा दो। एक क्षण भी विलम्ब न करो। लम्बी लम्बी वक्तृताओं से मेरे सौंदर्य का अपमान होगा। मैं आनन्द का स्वाद उठाने के लिए रो रही हूँ। किन्तु जो मेरे दिल की बात पूछो, तो मुझे भय है कि मुझे इस कोरी प्रशंसा के सिवा और कुछ हाथ न आयेगा। वादे करना आसान है, उन्हें पूरा करना मुश्किल है। सभी मनुष्यों में कोई न कोई गुण विशेष होता है। ऐसा मालूम होता है कि तुम वाणी में निपुण हो। तुम एक अज्ञात प्रेम का वचन देते हो। मुझे यह व्यापार करते इतने दिन हो गये और उसका इतना अनुभव हो गया है कि अब उसमें किसी नवीनता की, किसी रहस्य की आशा नहीं रही। इस विषय का ज्ञान प्रेमियों को दार्शनिकों से अधिक होता है।

'थायस, दिल्लगी की बात नहीं है, मैं तुम्हारे लिए अछूता प्रेम लाया हूँ।'

'मित्र, तुम बहुत देर में आये। मैं सभी प्रकार के प्रेमों का स्वाद ले चुकी हूँ।'

'मैं जो प्रेम लाया हूँ, वह उज्ज्वल है, श्रेय है। तुम्हें जिस प्रेम का अनुभव हुआ है वह निन्द्य और त्याज्य है।'

थायस ने गर्व से गर्दन उठाकर कहा—

मित्र, तुम मुँहफट जान पड़ते हो। तुम्हें गृह स्वामिनी के प्रति मुख से ऐसे शब्द निकालने में जरा भी संकोच नहीं होता! मेरी ओर आँख उठाकर देखो और तब बताओ कि मेरा स्वरूप निन्दित और पतित प्राणियों ही का-सा है। नहीं, मैं अपने कृत्यों पर लज्जित नहीं हूँ। अन्य स्त्रियाँ भी जिनका जीवन मेरे ही जैसा है, अपने को नीच और पतित नहीं समझतीं, यद्यपि उनके पास न इतना धन है और न इतना रूप। सुख मेरे पैरों के नीचे आँखें बिछाये रहता है, इसे सारा जगत् जानता है। मैं संसार के मुकुट धारियों को

पैर की धूलि समझती हूँ। उन सबों ने इन्हीं पैरों पर शीश नवाये हैं। आँखें उठाओ। मेरे पैरों की ओर देखो। लाखों प्राणी उनका चुम्बन करने के लिए अपने प्राण भेंट कर देंगे। मेरा डील डौल बहुत बड़ा नहीं है, मेरे लिए पृथ्वी पर बहुत स्थान की जरूरत नहीं। जो लोग मुझे देव मन्दिर के शिखर पर से देखते हैं उन्हें मैं बालू के कण के समान दीखती हूँ, पर इस कण ने मनुष्यों में जितनी ईर्ष्या, जितना द्वेष, जितनी निराशा, जितनी अभिलाषा और जितने पापों का संचार किया है उनके बोझ से अटल पर्वत भी दब जायगा। जब मेरी कीर्ति समस्त संसार में प्रसारित हो रही है तो तुम्हारी लज्जा और निन्दा की बात करना पागलपन नहीं तो और क्या है?

पापनाशी ने अविचलित भाव से उत्तर दिया—

सुन्दरी यह तुम्हारी भूल है। मनुष्य जिस बात की सराहना करते हैं वह ईश्वर की दृष्टि में पाप है। हमने इतने भिन्न-भिन्न देशों में जन्म लिया है कि यदि हमारी भाषा और विचार अनुरूप न हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। लेकिन मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारे पास से जाना नहीं चाहता। कौन मेरे मुख में ऐसे आग्नेय शब्दों को प्रेरित करेगा जो तुम्हें मोम की भाँति पिघला दें कि मेरी उँगलियाँ तुम्हें अपनी इच्छा के अनुसार रूप दे सकें? ओ नारिरत्न! वह कौनसी शक्ति है जो तुम्हें मेरे हाथों में सौंप देगी कि मेरे अन्तःकरण में निहित सद्प्रेरणा तुम्हारा पुनः संस्कार करके तुम्हें ऐसा नया और परिष्कृत सौन्दर्य प्रदान करे कि तुम आनन्द से विह्वल हो पुकार उठो, 'मेरा फिर से नया संस्कार हुआ है!' कौन मेरे हृदय में उस सुधा स्रोत को प्रवाहित करेगा कि तुम उसमें नहाकर फिर अपनी मौलिक पवित्रता लाभ कर सको? कौन मुझे मर्दन की निर्मल धारा में परिवर्तित कर देगा जिसकी लहरों का स्पर्श तुम्हें अनन्त सौन्दर्य से विभूषित कर दे?

थायस का क्रोध शान्त हो गया।

उसने सोचा—'यह पुरुष अनन्त जीवन के रहस्यों से परिचित है, और जो कुछ वह कहता है उसमें ऋषि-वाक्यों की सी प्रतिभा है। यह अवश्य कोई कीमियागर है और ऐसे गुप्त मन्त्र जानता है जो जीर्णावस्था का निवा

रण कर सकते हैं।' उसने अपनी देह को उसकी इच्छाओं को समर्पित करने का निश्चय कर लिया। वह एक सशंक पक्षी की भाँति कई क़दम पीछे हट गई और अपने पलंग की पट्टी पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगी। उसकी आँखें झुकी हुई थीं और लम्बी पलकों की मलिन छाया कपोलों पर पड़ रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि कोई बालक नदी तट के किनारे बैठा हुआ किसी विचार में मग्न है।

किन्तु पापनाशी केवल उसकी ओर टकटकी लगाये ताकता रहा, अपनी जगह से जौ भर भी न हिला। उसकी घुटनियाँ थरथरा रही थीं और मालूम होता था कि वे उसे सँभाल न सकेंगी। उसका तालू सूख गया था, कानों में तीव्र भनभनाहट की आवाज़ आने लगी। अकस्मात् उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया, मानों समस्त भवन मेघाच्छादित हो गया है। उसे ऐसा भासित हुआ कि प्रभु मसीह ने इस स्त्री को छिपाने के निमित्त उसकी आँखों पर परदा डाल दिया है। इस गुप्त करावलम्ब से आश्वस्त और सशक्त होकर उसने ऐसे गम्भीर भाव से कहा जो किसी वृद्ध तपस्वी के यथायोग्य था—

क्या तुम समझती हो कि तुम्हारा यह आत्म हनन ईश्वर की निगाहों से छिपा हुआ है?

उसने सिर हिलाकर कहा—

ईश्वर! ईश्वर से कौन कहता है कि सदैव 'परियों के कुञ्ज' पर आँखें जमाये रखे? यदि हमारे काम उसे नहीं भाते तो वह यहाँ से चला क्यों नहीं जाता? लेकिन हमारे कर्म उसे बुरे लगते ही क्यों हैं? उसी ने हमारी सृष्टि की है, जैसा उसने बनाया है वैसे ही हम हैं। जैसी वृत्तियाँ उसने हमें दी हैं उसी के अनुसार हम आचरण करते हैं। फिर उसे हमसे रुष्ट होने का, अथवा विस्मित होने का क्या अधिकार है? उसकी तरफ़ से लोग बहुत सी मनगढ़त बातें किया करते हैं और उसको ऐसे ऐसे विचारों का श्रेय देते हैं जो उसके मन में कभी न थे। तुमको उसके मन की बातें जानने का दावा है। तुमको उसके चरित्र का यथार्थ ज्ञान है। तुम कौन हो कि उसके वकील बनकर मुझे ऐसी ऐसी आशाएँ दिलाते हो?

पापनाशी ने मॅगनी के बहुमूल्य वस्त्र उतारकर नीचे का मोटा कुरता दिखाते हुए कहा—

मैं धर्माश्रम का योगी हूँ। मेरा नाम पापनाशी है। मैं उसी पवित्र तपाभूमि से आ रहा हूँ। ईश्वर की आज्ञा से मैं एकान्त-सेवन करता हूँ। मैंने संसार से और संसार के प्राणियों से मुँह मोड़ लिया था। इस पापमय संसार में निर्लिप्त रहना ही मेरा उद्दिष्ट मार्ग है। लेकिन तेरी मूर्ति मेरी शान्तिकुटीर में आकर मेरे सम्मुख खड़ी हुई और मैंने देखा कि तू पाप और वासना में लिप्त है, मृत्यु तुझे अपना ग्रास बनाने को खड़ी है। मेरी दया जाग्रत हो गई और तेरा उद्धार करने के लिए आ उपस्थित हुआ हूँ। मैं तुझे पुकारकर कहता हूँ— 'थायस, उठ, अब समय नहीं है।'

योगी के यह शब्द सुनकर थायस भय से थरथर काँपने लगी। उसका मुख श्रीहीन हो गया, वह केश छिटकाये, दोनों हाथ जोड़े, रोती और विलाप करती हुई उसके पैरों पर गिर पड़ी और बोली—

महात्माजी, ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए। आप यहाँ क्यों आये हैं? आपकी क्या इच्छा है? मेरा सर्वनाश न कीजिए। मैं जानती हूँ कि तपोभूमि के ऋषिगण हम जैसी स्त्रियों से घृणा करते हैं, जिसका जन्म ही दूसरों को प्रसन्न रखने के लिए होता है। मुझे भय हो रहा है कि आप मुझसे घृणा करते हैं और मेरा सर्वनाश करने पर उद्यत हैं। कृपया यहाँ से सिधारिए। मैं आपकी शक्ति और सिद्धि के सामने सिर झुकाती हूँ। लेकिन आपका मुझ पर कोप करना उचित नहीं है, क्योंकि मैं अन्य मनुष्यों की भाँति आप लोगों की भिक्षावृत्ति और संयम की निन्दा नहीं करती। आप भी मेरे भोग विलास को पाप न समझिए। मैं रूपवती हूँ और अभिनय करने में चतुर हूँ। मेरा क़ाबू न अपनी दशा पर है, और न अपनी प्रकृति पर। मैं जिस काम के योग्य बनाई गई हूँ वही करती हूँ। मनुष्यों को मुग्ध करने ही के निमित्त मेरी सृष्टि हुई है। आप भी तो अभी कह रहे थे कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। अपनी सिद्धियों से मेरा अनुपकार न कीजिए। ऐसा मन्त्र न चलाइये कि मेरा सौन्दर्य नष्ट हो जाय, या मैं पत्थर तथा नमक की मूर्ति बन जाऊँ। मुझे भयभीत न कीजिए। मेरे तो पहले ही से प्राण सूखे

हुए हैं। मुझे मौत का मुँह न दिखाइए, मुझे मौत से बहुत डर लगता है।

पापनाशी ने उसे उठने का इशारा किया और बोला—बचा डर मत। तेरे प्रति अपमान या घृणा का एक शब्द भी मेरे मुँह से न निकलेगा। मैं उस महान् पुरुष की ओर से आया हूँ, जो पापियों को गले लगाता था, वेश्याओं के घर भोजन करता था, हत्यारों से प्रेम करता था, पतितों को सान्त्वना देता था। मैं स्वयं पापमुक्त नहीं हूँ कि दूसरों पर पत्थर फेकूं। मैंने कितनी ही बार उस विभूति का दुरुपयोग किया है जो ईश्वर ने मुझे प्रदान की है। क्रोध ने मुझे यहाँ आने पर उत्साहित नहीं किया। मैं दया के वशीभूत होकर आया हूँ। मैं निष्कपट भाव से प्रेम के शब्दों में तुझे आश्वासन दे सकता हूँ, क्योंकि मेरा पवित्र धर्मस्नेही मुझे यहाँ लाया है। मेरे हृदय मे वात्सल्य की अग्नि प्रज्वलित हो रही है और यदि मेरी आँखें जो विषय के स्थूल, अपवित्र दृश्यों के वशीभूत हो रही हैं, वस्तुओं को उनके आध्यात्मिक रूप में देखतीं तो तुझे विदित होता कि मैं उस जलती हुई झाड़ी का एक पल्लव हूँ जो ईश्वर ने अपने प्रेम का परिचय देने के लिए मूसा को पर्वत पर दिखाई थी—जो समस्त संसार में व्याप्त है, और जो वस्तुओं को जलाकर भस्म कर देने के बदले, जिस वस्तु में प्रवेश करती है उसे सदा के लिए निर्मल और सुगन्धमय बना देती है।

थायस ने आश्वस्त होकर कहा—

महात्माजी, अब मुझे आप पर विश्वास हो गया। अब मुझे आपसे किसी अनिष्ट या अमंगल की आशंका नहीं है। मैंने धर्माश्रम के तपस्वियों की बहुत चर्चा सुनी है। ऐन्टोनी और पॉल के विषय में बड़ी अद्भुत कथाएँ सुनने में आई हैं। आपके नाम से भी मैं अपरिचित नहीं हूँ और मैंने लोगों को कहते सुना है कि यद्यपि आपकी उम्र अभी कम है, आप धर्मनिष्ठा में उन तपस्वियों से भी श्रेष्ठ हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन ईश्वर आराधना में व्यतीत किया। यद्यपि मेरा आपसे परिचय न था, किन्तु आपको देखते ही मैं समझ गई कि आप कोई साधारण पुरुष नहीं हैं। बताइए आप मुझे वह वस्तु प्रदान कर सकते हैं जो सारे संसार के सिद्ध और साधु, ओझे और सयाने, कापालिक

और वैतालिक नहीं कर सके ? आपके पास मौत की दवा है ? आप मुझे अमर जीवन दे सकते हैं ? यही सासारिक इच्छाओं का सप्तम स्वर्ग है।

पापनाशी ने उत्तर दिया—

कामिनी, अमर जीवन लाभ करना प्रत्येक प्राणी की इच्छा के अधीन है। विषय वासनाओं को त्याग दे, जो तेरी आत्मा का सर्वनाश कर रहे हैं। उस शरीर को पिशाचों के पंजे से छुड़ा ले जिसे ईश्वर ने अपने मुँह के पानी से साना और अपने श्वास से जिलाया, अन्यथा प्रेत और पिशाच उसे बड़ी क्रूरता से जलायेंगे। नित्य के विलास से तेरे जीवन का स्रोत क्षीण हो गया है। आ, और एकान्त के पवित्र सागर में उसे फिर प्रवाहित कर दे। आ, और मरुभूमि मे छिपे हुए सोतों का जल सेवन कर जिनका उफान स्वर्ग तक पहुँचता है। ओ चिन्ताओं में डूबी हुई आत्मा! आ, अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त कर! ओ आनन्द की भूखी स्त्री! आ, और सच्चे आनन्द का आस्वादन कर, दरिद्रता का, विराग का, त्याग का, ईश्वर के चरणों में आत्मसमर्पण का। आ, ओ स्त्री जो आज प्रभु मसीह की द्रोहिणी है, लेकिन कल उसकी प्रेयसी होगी, आ, उसका दर्शन कर, उसे देखते ही तू पुकार उठेगी—'मुझे प्रेम-धन मिल गया!'

थायस भविष्य-चिन्तन में खोई हुई थी। बोली—महात्मा, अगर मैं जीवन के सुखों को त्याग दूँ और कठिन तपस्या करूँ तो क्या यह सत्य है कि मैं स्वर्ग में फिर जन्म लूँगी और मेरे सौन्दर्य को आँच न आयेगी?

पापनाशी ने कहा—थायस, मैं तेरे लिए अनन्त जीवन का सन्देश लाया हूँ। विश्वास कर, मैं जो कुछ कहता हूँ, सर्वथा सत्य है।

थायस—मुझे उसकी सत्यता पर विश्वास क्योंकर आये?

पापनाशी—दाऊद और अन्य नबी उसकी साक्षी देंगे, तुझे अलौकिक दृश्य दिखाई देंगे, वह इसका समर्थन करेंगे।

थायस—योगीजी, आपकी बातों से मुझे बहुत सतोष हो रहा है, क्योंकि वास्तव में मुझे इस संसार में सुख नहीं मिला। मैं किसी रानी से कम नहीं हूँ, किन्तु फिर भी मेरी दुराशाओं और चिन्ताओं का अन्त नहीं है। मैं जीने से उकता गई हूँ। अन्य स्त्रियाँ मुझ पर ईर्षा करती हैं, पर मैं कभी-कभी उस

दु:ख की मारी, पोपली बुढ़िया पर ईर्षा करती हूँ जो शहर के फाटक की छाँह में बैठी तमाशे बेचा करती है। कितनी ही बार मेरे मन में आया है कि ग़रीब ही सुखी, सज्जन और सच्चे होते हैं, और दीन, हीन, निष्प्रभ रहने में चित्त को बड़ी शान्ति मिलती है। आपने मेरी आत्मा में एक तूफ़ान सा पैदा कर दिया है। हा! मैं किसका विश्वास करूँ? मेरे जीवन का क्या अन्त होगा—जीवन ही क्या है?

वह यह बातें कर रही थी कि पापनाशी के मुख पर तेज छा गया, सारा मुख-मंडल अनादि ज्योति से चमक उठा, उसके मुँह से यह प्रतिभाशाली वाक्य निकले—

-कामिनी, सुन! मैंने जब इस घर में क़दम रखा तो मैं अकेला न था। मेरे साथ कोई और भी था और वह अब भी मेरे बगल में खड़ा है। तू अभी उसे नहीं देख सकती, क्योंकि तेरी आँखों में इतनी शक्ति नहीं है। लेकिन शीघ्र ही स्वर्गीय प्रतिभा से तू उसे आलोकित देखेगी और तेरे मुँह से आप ही आप निकल पड़ेगा—'यही मेरा आराध्य देव है।' तूने अभी उसकी अलौकिक शक्ति देखी। अगर उसने मेरी आँखों के सामने अपने दयालु हाथ न फैला दिये होते तो अब तक मैं तेरे साथ पापाचरण कर चुका था, क्योंकि स्वत मैं अत्यन्त दुर्बल और पापी हूँ। लेकिन उसने हम दोनों की रक्षा की। वह जितना ही शक्तिशाली है उतना ही दयालु है, और उसका नाम है 'मुक्तिदाता।' दाऊद और अन्य नबियों ने उसके आने की ख़बर दी थी, चरवाहों और ज्योतिषियों ने हिंडोले में उसके सामने शीश झुकाया था। फ़रीसियों ने उसे सलीब पर चढाया, फिर वह उठकर स्वर्ग को चला गया। तुझे मृत्यु से इतना सशंक देखकर वह स्वयं तेरे घर आया है कि तुझे मृत्यु से बचा ले। प्रभु मसीह! क्या इस समय तुम यहाँ उपस्थित नहीं हो, उसी रूप में जो तुमने गैलिली के निवासियों को दिखाया था? कितना विचित्र समय था कि बैतुलहम के बालक तारागण को हाथ में लेकर खेलते थे जो उस समय धरती के निकट ही स्थित थे। प्रभु मसीह, क्या यह सत्य नहीं है कि तुम इस समय यहाँ उपस्थित हो और मैं तुम्हारी पवित्र देह को प्रत्यक्ष देख रहा हूँ? क्या तेरा दयालु कोमल मुखारविन्द यहाँ नहीं है? और क्या वह

आँसू जो तेरे गालों पर बह रहे हैं, प्रत्यक्ष आँसू नहीं हैं ? हाँ, ईश्वरीय न्याय का कर्ता उन मोतियों के लिए हाथ रोपे रहा है और उन्हीं मोतियों से थायस की आत्मा की मुक्ति होगी। प्रभु मसीह, क्या तू बोलने के लिए ओठ नहीं खोले हुए है ? बोल, मैं सुन रहा हूँ। और थायस, सुलक्षणा थायस, सुन, प्रभु मसीह तुझसे क्या कह रहे हैं—'ऐ मेरी भटकी हुई मेषसुन्दरी, मैं बहुत दिनों से तेरी खोज में हूँ। अन्त में मैं तुझे पा गया। अब फिर मेरे पास से न भागना। आ, मैं तेरा हाथ पकड़ लूँ और अपने कन्धों पर बिठाकर स्वर्ग के बाड़े में ले चलूँ। आ मेरी थायस, मेरी प्रियतमा, आ! और मेरे साथ रो।'

यह कहते कहते पापनाशी भक्ति से विह्वल होकर जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया। उसकी आँखों से आत्मोल्लास की ज्योति-रेखाएँ निकलने लगीं। और थायस को उसके चेहरे पर जीते जागते मसीह का स्वरूप दिखाई दिया।

वह करुणाक्रदन करती हुई बोली—ओ मेरी बीती हुई बाल्यावस्था, ओ मेरे पिता दयालु अहमद! ओ सन्त थियोडोर, मैं क्यों न तेरी गोद में उसी समय मर गई जब तू अरुणोदय के समय मुझे अपनी चादर में लपेटे लिये आता था और मेरे शरीर से *बतिसमा* के पवित्र जल की बूँदें टपक रही थीं!

पापनाशी यह सुनकर चौंक पड़ा मानों कोई अलौकिक घटना हो गई है और दोनों हाथ फैलाते हुए थायस की ओर यह कहते हुए बढ़ा—

भगवान, तेरी महिमा अपार है। क्या तू बतिसमा के जल से प्लावित हो चुकी है ? हे परमपिता, भक्तवत्सल प्रभु, ओ बुद्धि के अगाध सागर! अब मुझे मालूम हुआ कि वह कौन-सी शक्ति थी जो मुझे तेरे पास खींचकर लाई। अब मुझे ज्ञात हुआ कि वह कौनसा रहस्य था जिसने तुझे मेरी दृष्टि में इतनी सुन्दर, इतना चित्ताकर्षक बना दिया था। अब मुझे मालूम हुआ कि मैं तेरे प्रेम-पाश में क्यों इस भाँति जकड़ गया था कि अपना शान्तिवास छोड़ने पर विवश हुआ। इसी बतिसमा जल की महिमा थी जिसने मुझे ईश्वर के द्वार को छुड़ाकर तुझे खोजने के लिए इस विषाक्त वायु से भरे हुए संसार में आने पर बाध्य किया जहाँ माया मोह में फँसे हुए लोग अपना कलुषित जीवन व्यतीत करते हैं। उस पवित्र जल की एक बूँद—केवल एक ही बूँद

मेरे मुख पर छिड़क दी गई है जिसमें तू ने स्नान किया था। आ, मेरी प्यारी बहिन, आ और अपने भाई के गले लग जा जिसका हृदय तेरा अभिवादन करने के लिए तड़प रहा है।

यह कहकर पापनाशी ने वारांगना के सुन्दर ललाट को अपने ओठों से स्पर्श किया।

इसके बाद वह चुप हो गया कि ईश्वर स्वयं मधुर, सान्त्वनाप्रद शब्दों में थायस को अपनी दयालुता का विश्वास दिलाये। और 'परियों के रमणीक कुञ्ज' में थायस की सिसकियों के सिवा, जो जलधारा की कलकल ध्वनि से मिल गई थी, और कुछ न सुनाई दिया।

वह इसी भाँति देर तक रोती रही। अश्रुप्रवाह को रोकने का प्रयत्न उसने न किया यहाँ तक कि उसके हब्शी गुलाम सुन्दर वस्त्र, फूलों के हार और भाँति-भाँति के इत्र लिये आ पहुँचे।

उसने मुसकिराने की चेष्टा करके कहा—

अब रोने का समय बिल्कुल नहीं रहा। आँसुओं से आँखें लाल हो जाती हैं, और उनमें चित्त को विकल करनेवाला पुष्प विकास नहीं रहता, चेहरे का रंग फीका पड़ जाता है, वर्ण की कोमलता नष्ट हो जाती है। मुझे आज कई रसिक मित्रों के साथ भोजन करना है, मैं चाहती हूँ कि मेरा मुखचन्द्र सोलहों कला से चमके, क्योंकि वहाँ कई ऐसी स्त्रियाँ आयेंगी जो मेरे मुख पर चिन्ता या ग्लानि के चिह्न को तुरन्त भाँप जायेंगी और मन में प्रसन्न होंगी कि अब इसका सौन्दर्य्य थोड़े ही दिनों का और मेहमान है, नायिका अब प्रौढ़ा हुआ चाहती है। ये गुलाम मेरा शृंगार करने आये हैं। पूज्य पिता, आप कृपया दूसरे कमरे में जा बैठिए और इन दोनों को अपना काम करने दीजिए। यह अपने काम में बड़े प्रवीण और कुशल हैं। मैं उन्हें यथेष्ट पुरस्कार देती हूँ। वह जो सोने की अँगूठियाँ पहने है और जिसके मोती के से दाँत चमक रहे हैं, उसे मैंने प्रधान मन्त्री की पत्नी से लिया है।

पापनाशी की पहले तो यह इच्छा हुई कि थायस को इस भोज में सम्मिलित होने से यथाशक्ति रोके। पर पुनः विचार किया तो विदित हुआ कि यह उतावली का समय नहीं है। वर्षों का जमा हुआ मनोमालिन्य एक रगड़ से

नहीं दूर हो सकता। रोग का मूलनाश शनैः शनैः, क्रम क्रम से ही होगा। इसलिए उसने धर्मोत्साह के बदले बुद्धिमत्ता से काम लेने का निश्चय किया और पूछा—वहाँ किन किन मनुष्यों से भेंट होगी ?

उसने उत्तर दिया—पहले तो वयोवृद्ध कोटा से भेंट होगी जो यहाँ की जलसेना के सेनापति हैं। उन्हीं ने यह दावत दी है। निसियास और अन्य दार्शनिक भी आयेंगे जिन्हें किसी विषय की मीमांसा करने ही में सबसे अधिक आनन्द प्राप्त होता है। इनके अतिरिक्त कविसमाज भूषण कलिक्रान्त, और देव मन्दिर के अध्यक्ष भी आयेंगे। कई युवक होंगे जिनको घोड़े निकालने ही में परम आनन्द आता है और कई स्त्रियाँ मिलेंगी जिनके विषय में इसके सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता कि वे युवतियाँ हैं।

पापनाशी ने ऐसी उत्सुकता से जाने की सम्मति दी मानों उसे आकाश वाणी हुई है। बोला—

तो अवश्य जाओ थायस, अवश्य जाओ। मैं तुम्हें सहर्ष आज्ञा देता हूँ। लेकिन मैं तेरा साथ न छोड़ूँगा। मैं भी इस दावत में तुम्हारे साथ चलूँगा। इतना जानता हूँ कि कहाँ बोलना और कहाँ चुप रहना चाहिए। मेरे साथ रहने से तुम्हें कोई असुविधा अथवा झेंप न होगी।

दोनों गुलाम अभी उसके आभूषण पहना ही रहे थे कि थायस खिल खिलाकर हँस पड़ी और बोली—

वह धर्माश्रम के एक तपस्वी को मेरे प्रेमियों में देखकर क्या कहेंगे ?

३

जब थायस ने पापनाशी के साथ भोजशाला में पदार्पण किया तो मेहमान लोग पहले ही से आ चुके थे। वह गद्देदार कुरसियों पर तकिया लगाये, एक अर्धचन्द्राकार मेज़ के सामने बैठे हुए थे। मेज़ पर सोने, चाँदी के बरतन जगमगा रहे थे। मेज़ के बीच में एक चाँदी का थाल था जिसके चारों पायों

की जगह चार परियाँ बनी हुई थीं जो कराबों में से एक प्रकार का सिरका उँडेल-उँडेलकर तली हुई मछलियों को उसमें तैरा रही थीं। थायस के अन्दर क़दम रखते ही मेहमानों ने उच्चस्वर से उसकी अभ्यर्थना की—

एक ने कहा—सूक्ष्म कलाओं की देवी को नमस्कार!

दूसरा बोला—उस देवी को नमस्कार जो अपनी मुखाकृति से मन के समस्त भावों को प्रकट कर सकती है!

तीसरा बोला—देवता और मनुष्यों की लाडली को सादर प्रणाम!

चौथे ने कहा—उसको नमस्कार जिसकी सभी आकांक्षा करते हैं!

पाँचवाँ बोला—उसको नमस्कार जिसकी आँखों में विष है और उसका उतार भी!

छठाँ बोला—स्वर्ग के मोती को नमस्कार!

सातवाँ बोला—इस्कन्द्रिया के गुलाब को नमस्कार!

थायस मन में झुँझला रही थी कि अभिवादनों का यह प्रवाह कब शान्त होता है। जब लोग चुप हुए तो उसने गृह स्वामी कोटा से कहा—

लूशियस, मैं आज तुम्हारे पास एक मरुस्थल निवासी तपस्वी लाई हूँ जो धर्माश्रम का अध्यक्ष है। इनका नाम पापनाशी है। यह एक सिद्ध पुरुष हैं जिनके शब्द अग्नि की भाँति उद्दीपक होते हैं।

लूशियस और लियस कोटा ने, जो जलसेना का सेनापति था, खड़े होकर पापनाशी का सम्मान किया और बोला—

ईसाई धर्म के अनुगामी सत पापनाशी का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। मैं स्वय उस मत का सम्मान करता हूँ जो अब साम्राज्य व्यापी हो गया है। श्रद्धेय महाराज कान्सटैनटाइन ने तुम्हारे सहधर्मियों को साम्राज्य के शुभेच्छुकों की प्रथम श्रेणी में स्थान प्रदान किया है। लैटिन जाति की उदारता का कर्तव्य है कि वह तुम्हारे प्रभु मसीह को अपने देवमन्दिर में प्रतिष्ठित करे। हमारे पुरुषाओं का कथन था कि प्रत्येक देवता में कुछ न कुछ अश ईश्वर का अवश्य होता है। लेकिन यह इन बातों का समय नहीं है। आओ, प्याले उठायें और जीवन का सुख भोगें। इसके सिवा और सब मिथ्या है।

लेकिन फिलिना ने ड्रोसिया के ओठों पर उँगली रख दी और बोली—चुप ! प्रणय के रहस्य अभेद्य होते हैं और उनकी खोज करना वर्जित है। लेकिन मुझसे कोई पूछे तो मैं इस अद्भुत मनुष्य के ओठों की अपेक्षा, एटना के जलते हुए, अग्निप्रसारक मुख से चुम्बित होना अधिक पसन्द करूँगी। लेकिन बहिन, इस विषय में तुम्हारा कोई वश नहीं। तुम देवियों की भाँति रूपगुणशीला और कोमलहृदया हो, और देवियों ही की भाँति तुम्हें छोटे बड़े, भले बुरे, सभी का मन रखना पड़ता है, सभी के आँसू पोंछने पड़ते हैं। हमारी तरह केवल सुन्दर सुकुमारों ही की याचना स्वीकार करने से तुम्हारा यह लोकसम्मान कैसे होगा !

थायस ने कहा—

तुम दोनों ज़रा मुँह सँभालकर बातें करो। यह सिद्ध और चमत्कारी पुरुष हैं। कानों में कही हुई बातें ही नहीं, मनोगत विचारों को भी जान लेता है। कहीं उसे क्रोध आ गया तो सोते में हृदय को चीर निकालेगा और उसके स्थान पर एक 'स्पंज' रख देगा। दूसरे दिन जब तुम पानी पियोगी तो दम घुटने से मर जाओगी।

थायस ने देखा कि दोनों युवतियों के मुख वर्णहीन हो गये हैं जैसे उड़ा हुआ रंग। तब वह उन्हें इसी दशा में छोड़कर पापनाशी के समीप एक कुरसी पर जा बैठी। सहसा कोटा की मृदु, पर गर्व से भरी हुई कण्ठध्वनि कनफुसकियों से ऊपर सुनाई दी—

'मित्रो, आप लोग अपने-अपने स्थानों पर बैठ जायँ। ओ गुलामो ! वह शराब लाओ जिसमें शहद मिली है।'

तब भरा हुआ प्याला हाथ में लेकर वह बोला—

पहले देवतुल्य सम्राट, और साम्राज्य के कर्णधार सम्राट कान्सटैनटाइन की शुभेच्छा का प्याला पीयो। देश का स्थान सर्वोपरि है, देवताओं से भी उच्च, क्योंकि देवता भी इसी के उदर में अवतरित होते हैं।

सब मेहमानों ने भरे हुए प्याले ओठों से लगाये, केवल पापनाशी ने न पिया, क्योंकि कान्सटैनटाइन ने ईसाई सम्प्रदाय पर अत्याचार किये थे, इसलिए भी कि ईसाइ मत मर्त्यलोक में अपने स्वदेश का अस्तित्व नहीं मानता।

डोरियन ने प्याला खाली करके कहा—

देश का इतना सम्मान क्यों ? देश है क्या ? एक बहती हुई नदी। किनारे बदलते रहते हैं और जल में नित नई तरंगें उठती रहती हैं।

जलसेना-नायक ने उत्तर दिया—डोरियन, मुझे मालूम है कि तुम नागरिक विषयों की परवा नहीं करते और तुम्हारा विचार है कि ज्ञानियों को इन वस्तुओं से अलग अलग रहना चाहिए। इसके प्रतिकूल मेरा विचार है कि एक सत्यवादी पुरुष के लिए सबसे महान् इच्छा यही होनी चाहिए कि वह साम्राज्य में किसी पद पर अधिकृत हो। साम्राज्य एक महत्त्वशाली वस्तु है।

देवालय के अध्यक्ष हरमोडोरस ने उत्तर दिया—

डोरियन महाशय ने जिज्ञासा की है कि स्वदेश क्या है ? मेरा उत्तर है कि देवताओं की बलिवेदी और पितरों के समाधिस्तूप ही स्वदेश के पर्याय हैं। नागरिकता स्मृतियों और आशाओं के समावेश से उत्पन्न होती है।

युवक एरिस्टोबोलस ने बात काटते हुए कहा—

भाई, ईश्वर जानता है आज मैंने एक सुन्दर घोड़ा देखा। डेमोफ़ून का था। उन्नत मस्तक है, छोटा मुँह और सुदृढ़ टाँगें। ऐसा गरदन उठाकर अलबेली चाल से चलता है जैसे मुर्ग़ा।

लेकिन चेरियास ने सिर हिलाकर शंका की—

'ऐसा अच्छा घोड़ा तो नहीं है एरिस्टोबोलस, जैसा तुम बतलाते हो। उसके सुम पतले हैं और गामचियाँ बहुत छोटी हैं। चाल का सच्चा नहीं, जल्द ही सुम लेने लगेगा, लँगड़े हो जाने का भय है।'

यह दोनों यही विवाद कर रहे थे कि ड्रोसिया ने ज़ोर से चीत्कार किया। उसकी आँखों में पानी भर आया, और वह ज़ोर से खाँसकर बोली—

'कुशल हुई नहीं तो यह मछली का काँटा निगल गई थी। देखो सलाई के बराबर है और उससे भी कहीं तेज़। वह तो कहो मैंने जल्दी से उँगली डालकर निकाल लिया। देवताओं की मुझ पर दया है। वह मुझे अवश्य प्यार करते हैं।

निसियास ने मुसकिराकर कहा—ड्रोसिया, तुमने क्या कहा कि देवगण

यूक्राइटीज—निसियास, तुम मसखरापन करते हो। इसके सिवा तुम्हें और कुछ नहीं आता। लेकिन जैसा तुम कहते हो वही सही। अगर वह बैल जिसका तुमने उल्लेख किया है वास्तव में 'एपिस' * की भाँति देवता है या उस पाताल लोक के बैल के सदृश है जिसके मन्दिर † के अध्यक्ष को हम यहाँ बैठे हुए देख रहे हैं, और उस मेंढक ने सद्प्रेरणा से अपने को उस बैल के समतुल्य बना लिया, तो क्या वह बैल से अधिक श्रेष्ठ नहीं है? यह सम्भव है कि तुम उस नन्हें से पशु के साहस और पराक्रम की प्रशंसा न करो।

चार सेवकों ने एक जंगली सुअर, जिसके अभी तक बाल भी अलग नहीं किये गये थे, लाकर मेज़ पर रखा। चार छोटे-छोटे सुअर जो मैदे के बने हुए थे, मानों उसका दूध पीने के लिए उत्सुक हैं। इससे प्रकट होता था कि सुअर मादा है।

जैनाथेमीज ने पापनाशी की ओर देखकर कहा—

मित्रो, हमारी सभा को आज एक नये मेहमान ने अपने चरणों से पवित्र किया है। श्रद्धेय सन्त पापनाशी, जो मरुस्थल में एकान्त-निवास और तपस्या करते हैं, आज संयोग से हमारे मेहमान हो गये हैं।

कोटा—मित्र जैनाथेमीज, इतना और बता दो कि उन्होंने बिना निमंत्रित हुए यह कृपा की है, इसलिए उन्हीं को सम्मानपद की शोभा बढ़ानी चाहिए।

जैनाथेमीज—इसलिए, मित्रवरो, हमारा कर्तव्य है कि उनके सम्मानार्थ वही बातें करें जो उनको रुचिकर हों। यह तो स्पष्ट है—कि ऐसा त्यागी पुरुष मसालों के गन्ध को उतना रुचिकर नहीं समझता जितना पवित्र विचारों के सुगन्ध को। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जितना आनन्द उन्हें ईसाई धर्म सिद्धान्तों के विवेचन से प्राप्त होगा, जिनके वह अनुयायी हैं, उतना और किसी विषय से नहीं हो सकता। मैं स्वयं इस विवेचन का पक्षपाती हूँ, क्योंकि इसमें कितने ही सर्वाङ्ग-सुन्दर और विचित्र रूपकों का समावेश है जो मुझे अत्यन्त प्रिय हैं। अगर शब्दों से आशय का अनुमान किया जा सकता है, तो ईसाई सिद्धान्तों में सत्य की मात्रा प्रचुर है और ईसाई धर्मग्रन्थ ईश्वरज्ञान

* एक गाय की मूर्ति जिसे प्राचीन मिस्र के लोग पूज्य समझते थे।

† सेरापीज, मृत्यु का देवता, जो बैल के आकार का था।

से परिपूर्ण हैं। लेकिन सन्त पापनाशी, मैं यहूदी धर्मग्रन्थों को इनके समान सम्मान के योग्य नहीं समझता। उनकी रचना ईश्वरीय ज्ञान द्वारा नहीं हुई है, वरन् एक पिशाच द्वारा जो ईश्वर का महान् शत्रु था। इसी पिशाच ने जिसका नाम 'आइवे' था, उन ग्रन्थों को लिखवाया। वह उन भूतात्माओं में से था जो नरकलोक में बसते हैं और उन समस्त विडम्बनाओं के कारण हैं जिनसे मनुष्यमात्र पीड़ित हैं। लेकिन आइवे अज्ञानता, कुटिलता और क्रूरता में उन सबों से बढ़कर था। इसके विरुद्ध, सोने के पर वाला सर्प जो ज्ञान वृक्ष से लिपटा हुआ था, प्रेम और प्रकाश से बनाया गया था। इन दोनों शक्तियों में एक प्रकाश की थी और दूसरी अन्धकार की, विरोध होना अनिवार्य था। यह घटना संसार की सृष्टि के थोड़े ही दिनों पश्चात् घटी। दोनों विरोधी शक्तियों में युद्ध छिड़ गया। ईश्वर अभी अपने कठिन परिश्रम के बाद विश्राम न करने पाये थे, आदम और हौवा, आदि पुरुष आदि स्त्री, अदन के बाग़ में नंगे घूमते और आनन्द से जीवन व्यतीत कर रहे थे। इतने में दुर्भाग्य से आइवे को सूझी कि इन दोनों प्राणियों पर और उनकी आनेवाली सन्तानों पर आधिपत्य जमाऊँ। अपनी इस दुरिच्छा को पूरा करने का प्रयत्न वह करने लगा। वह न गणित में कुशल था, न संगीत में, न उस शास्त्र से परिचित था जो राज्य का संचालन करता है, न उस ललित कला से जो चित्त को मुग्ध करती है। उसने इन दोनों सरल बालकों की सी बुद्धि रखनेवाले प्राणियों को भयंकर पिशाच लीलाओं से, रक्तोत्पादक क्रोध से और मेघगर्जना से भयभीत कर दिया। आदम और हौवा अपने ऊपर उसकी छाया का अनुभव करके एक दूसरे से लिपट गये और भय ने उनके प्रेम को और भी घनिष्ट कर दिया। इस समय इस विराट् संसार में कोई उनकी रक्षा करनेवाला न था। जिधर आँख उठाते थे उधर सन्नाटा दिखाई देता था। सर्प को उनकी यह निस्सहाय दशा देखकर दया आ गई और उसने उनके अन्तःकरण को ज्ञान से प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसमें ज्ञान से सम्पन्न होकर वह मिथ्या भयंकर प्रेत लीलाओं से चिन्तित न हों। किन्तु इस कार्य को पूरा करने के लिए बड़ी सावधानी और कुशलता की आवश्यकता

पति के गर्दन में हाथ डालकर कहा—मैं भी अज्ञानिनी बनी रहूँगी और अपने पति की विपत्ति में उसका साथ दूँगी। विजयी आहवे आदम और हौवा और उनकी भविष्य सन्तानों को भय और कापुरुषता की दशा में रखने लगा। वह बड़ा कलानिधि था। वह बड़े वृहदाकार आकाश-वज्रों के बनाने में सिद्धहस्त था। उसके कलानैपुण्य ने सर्प के शास्त्र को परास्त कर दिया अतएव उसने प्राणियों को मूर्ख, अन्यायी, निर्दय बना दिया और संसार में कुकर्म का सिक्का चला दिया। तब से लाखों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी मनुष्य ने धर्मपथ नहीं पाया। यूनान के कतिपय विद्वानों तथा महात्माओं ने अपने बुद्धिबल से उस मार्ग को खोज निकालने का प्रयत्न किया। फीसा-गोरस, प्लेटो आदि तत्त्वज्ञानियों के हम सदैव ऋणी रहेंगे, लेकिन वह अपने प्रयत्न में सफलीभूत नहीं हुए, यहाँ तक कि थोड़े दिन हुए नासरा के ईसू ने उस पथ को मनुष्यमात्र के लिए खोज निकाला।

डोरियन—अगर मैं आपका आशय ठीक समझ रहा हूँ तो आपने यह कहा है कि जिस मार्ग को खोज निकालने में यूनान के तत्त्वज्ञानियों को सफलता नहीं हुई, उसे ईसू ने किन साधनों द्वारा पा लिया? किन साधनों के द्वारा वह मुक्तिज्ञान प्राप्त कर लिया जो प्लेटो आदि आत्मदर्शी महापुरुषों को न हो सका?

जैनाथेमीज़—महाशय डोरियन, क्या यह बार-बार बतलाना पड़ेगा कि बुद्धि और तर्क विद्याप्राप्ति के साधन हैं, किन्तु पराविद्या आत्मोल्लास द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। प्लेटो, फीसागोरस, अरस्तू आदि महात्माओं में अपार बुद्धि-शक्ति थी, पर वह ईश्वर की उस अनन्य भक्ति से वंचित थे जिसमें ईसू सराबोर थे। उनमें वह तन्मयता न थी जो प्रभु मसीह में थी।

हरमोडोरस—जैनाथेमीज, तुम्हारा यह कथन सर्वथा सत्य है कि जैसे दूब ओस पीकर जीती और फैलती है, उसी प्रकार जीवात्मा का पोषण परम आनन्द द्वारा होता है। लेकिन हम इसके आगे भी जा सकते हैं और यह कह सकते हैं कि केवल बुद्धि ही में परम आनन्द भोगने की क्षमता है। मनुष्य में सर्वप्रधान बुद्धि ही है। पंचभूतों का बना हुआ शरीर तो जड़ है, जीवात्मा यद्यपि अधिक सूक्ष्म है, पर वह भी भौतिक है, केवल बुद्धि ही निर्विकार और

अखण्ड है। जब यह भवनरूपी शरीर से प्रस्थान करके—जो अकस्मात् निर्जन और शून्य हो गया हो—आत्मा के रमणीक उद्यान में विचरण करती हुई, ईश्वर में समाविष्ट हो जाती है तो वह पूर्व निश्चित मृत्यु या पुनर्जन्म के आनन्द उठाती है, क्योंकि जीवन और मृत्यु में कोई अन्तर नहीं। और उस अवस्था में उसे स्वर्गीय पावित्र्य में मग्न होकर परम आनन्द और सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वह उस ऐक्य में प्रविष्ट हो जाती है जो सर्वव्यापी है। उसे परमपद या सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

निसियास—यही ही सुन्दर युक्ति है, लेकिन हरमाडोरस, सच्ची बात तो यह है कि मुझे 'अस्ति' और 'नास्ति' में कोई भिन्नता नहीं दीखती। शब्दों में इस भिन्नता को व्यक्त करने की सामर्थ्य नहीं है। 'अनन्त' और 'शून्य' की समानता कितनी भयावह है। दोनों में से एक भी बुद्धि ग्राह्य नहीं है। मस्तिष्क इन दोनों ही की कल्पना में असमर्थ है। मेरे विचार में तो जिस परमपद या मोक्ष की आपने चर्चा की है वह बहुत ही महँगी वस्तु है। उसका मूल्य हमारा समस्त जीवन नहीं, हमारा अस्तित्व है। उसे प्राप्त करने के लिए हमें पहले अपने अस्तित्व को मिटा देना चाहिए। यह एक ऐसी विपत्ति है जिससे परमेश्वर भी मुक्त नहीं, क्योंकि दर्शनों के ज्ञाता और भक्त उसे सम्पूर्ण और सिद्धि प्रमाणित करने में एड़ी चोटी का ज़ोर लगा रहे हैं। सारांश यह है कि हम 'अस्ति' का कुछ बोध नहीं तो 'नास्ति' से भी हम उतने ही अनभिज्ञ हैं। हम कुछ जानते ही नहीं।

कोटा—मुझे भी दर्शन से प्रेम है। और अवकाश के समय उसका अध्ययन किया करता हूँ। लेकिन इसकी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं। हाँ, 'सिसरो' * के ग्रन्थों में अवश्य इसे खूब समझ लेता हूँ। रासो, कहाँ मर गये, मधु-मिश्रित वस्तु प्यालों में भरो।

कालिकान्त—यह एक विचित्र बात है, लेकिन न जाने क्यों जब मैं क्षुधा

* रूम का सर्वप्रसिद्ध राजनीत्याचार्य। उसके राजनैतिक निबन्ध बड़े ही महत्व के हैं और आदर्श माने जाते हैं। कोटा राजनीति का विद्वान् था। दर्शन का उसे अभ्यास न था। इस शास्त्र से उसे इतना ही प्रेम था कि वह सिसरो के ग्रन्थों को समझ लेता था जिनमें यथास्थान दर्शनों की आलोचना भी की गई है।

देवताओं का सम्मान करेंगे ? कदापि नहीं। हम विनाश की ओर भयंकर गति से फिसलते चले जा रहे हैं। हमारा प्यारा मित्र जो किसी समय संसार का जीवनदाता था, जो भूमण्डल में प्रकाश फैलाता था, उसका समाधिस्तूप बन जायगा। वह स्वयं अन्धकार में लुप्त हो जायगा। मृत्युदेव रासेपीन मानव भक्ति की अन्तिम भेंट पायेगा और मैं अन्तिम देवता का अन्तिम पुजारी सिद्ध हूँगा।

इतने में एक विचित्र मूर्ति ने परदा उठाया और मेहमानों के सम्मुख एक कुबड़ा, नाटा मनुष्य उपस्थित हुआ जिसकी चाँद पर एक बाल भी न था। वह एशिया निवासियों की भाँति एक लाल चोगा और असभ्य जातियों की भाँति लाल पाजामा पहने हुए था जिस पर सुनहरे बूटे बने हुए थे। पापनाशी उसे देखते ही पहचान गया और ऐसा भयभीत हुआ, मानो आकाश से वज्र गिर पड़ेगा। उसने तुरत सिर पर हाथ रख लिये और थर थर काँपने लगा। यह प्राणी मार्कस एरियन था जिसने ईसाई धर्म में नवीन विचारों का प्रचार किया था। वह ईसू के अनादित्व पर विश्वास नहीं करता था। उसका कथन था कि जिसने जन्म लिया, वह कदापि अनादि नहीं हो सकता। पुराने विचार के ईसाई, जिनका मुखपात्र 'नीसा' था, कहते हैं कि यद्यपि मसीह ने देह धारण की किन्तु वह अनन्तकाल से विद्यमान है। अतएव नीसा के भक्त एरियन को विधर्मी कहते थे। और एरियन के अनुयायी ईसा के अनुगामियों को मूर्ख, मन्दबुद्धि, पागल आदि उपाधियाँ देते थे। पापनाशी नीसा का भक्त था। उसकी दृष्टि में ऐसे विधर्मी को देखना भी पाप था। इस सभा को वह पिशाचों की सभा समझता था। लेकिन इस पिशाच सभा में प्रकृतिवादियों के अपवाद, और विज्ञानियों की दुष्कल्पनाओं से भी वह इतना सशंक और चंचल न हुआ था। लेकिन इस विधर्मी की उपस्थिति मात्र ने उसके प्राण हर लिये। वह भागनेवाला ही था कि सहसा उसकी निगाह थायस पर जा पड़ी और उसकी हिम्मत बँध गई। उसने उसके लम्बे, लहराते हुए लहँगे का किनारा पकड़ लिया और मन में प्रभु मसीह की वन्दना करने लगा।

उपस्थित जनों ने उस प्रतिभाशाली विद्वान् पुरुष का बड़े सम्मान से

स्वागत किया जिसे लोग ईसाई धर्म का प्लेटो कहते थे हरमोडोरस सबसे पहले बोला—

परम आदरणीय मार्कस, हम आपको इस सभा में पदार्पण करने के लिए हृदय से धन्यवाद देते हैं। आपका शुभागमन बड़े ही शुभ अवसर पर हुआ है। हमें ईसाई धर्म का उससे अधिक ज्ञान नहीं है, जितना प्रकट रूप से पाठशालाओं में पाठ्य क्रम में रखा हुआ है। आप ज्ञानी पुरुष हैं, आपकी विचार शैली साधारण जनता की विचार शैली से अवश्य ही विभिन्न होगी। हम आपके मुख से उस धर्म के रहस्यों की मीमांसा सुनने के लिए उत्सुक हैं, जिसके आप अनुयायी हैं। आप जानते हैं कि हमारे मित्र जेनाथेमीज़ को नित्य रूपकों और दृष्टान्तों की धुन सवार रहती है, और उन्होंने अभी पापनाशी महोदय से यहूदी ग्रन्थों के विषय में कुछ जिज्ञासा की थी। लेकिन उक्त महोदय ने कोई उत्तर नहीं दिया और हमें इसका कोई आश्चर्य न होना चाहिए क्योंकि उन्होंने मौन व्रत धारण किया है। लेकिन आपने ईसाई धर्म सभाओं में व्याख्यान दिये हैं। बादशाह कान्सटैनटाइन की सभा को भी आपने अपनी अमृतवाणी से कृतार्थ किया है। आप चाहें तो ईसाई धर्म का तात्विक विवेचन और उन गुप्त आशयों का स्पष्टीकरण करके जो ईसाई दन्तकथाओं में निहित हैं, हमें सन्तुष्ट कर सकते हैं। क्या ईसाइयों का मुख्य सिद्धान्त तौहीद (अद्वैतवाद) नहीं है, जिस पर मेरा विश्वास होगा ?

मार्कस—हाँ सुविज्ञ मित्रो, मैं अद्वैतवादी हूँ। मैं उस ईश्वर को मानता हूँ जो न जन्म लेता है, न मरता है, जो अनन्त है, अनादि है,'सृष्टि का कर्ता है।

निसियास—महाशय मार्कस, आप एक ईश्वर को मानते हैं, यह सुनकर हर्ष हुआ। उसी ने सृष्टि की रचना की, यह विकट समस्या है। यह उसके जीवन में बड़ा क्रान्तिकारी समय होगा। सृष्टि रचना के पहले भी वह अनन्तकाल से विद्यमान था। बहुत सोच विचार के बाद उसने सृष्टि को रचने का निश्चय किया। अवश्य ही, उस समय उसकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय रही होगी। अगर सृष्टि की उत्पत्ति करता है तो उसकी अखण्डता, सम्पूर्णता में बाधा पड़ती है। अकर्मण्य बना बैठा रहता है तो उसे अपने अस्तित्व ही

यथ रा न कर दिन मत काटो। वरन तुम्हें जो काम सौंपा गया है उसे यथासाध्य उत्तम रीति से पूरा करो।

निशियास—तब कोई झंझट ही नहीं रहा। लँगड़े को चाहिए कि लँगड़ाये, पागल को चाहिए कि खूब द्वन्द्व मचाये, जितना उत्पात कर सके, करे। कुलटा को चाहिए जितने घर घालते बने घाले, जितने घाटों का पानी पी सके, पिये, जितने हृदयों का नाश कर सके, करे। देश-द्रोही को चाहिए कि देश में आग लगा दे, अपने भाइयों का गला कटवा दे, झूठे को झूठ का ओढना बिछौना बनवाना चाहिए, हत्यारे को चाहिए कि रक्त की नदी बहा दे, और जब अभिनय समाप्त हो जाने पर सभी खिलाड़ी राजा हों या रंक हों, न्यायी हों या अन्यायी, खूनी, जालिम, सती, कामिनियाँ, कुलकलंकिनी स्त्रियाँ, सज्जन, दुर्जन, चोर, साहु सब के सब उन कवि महोदय के प्रशंसापात्र बन जायें, सभी समान रूप से सराहे जायँ। क्या कहना!

यूक्राइटीज—निसियास, तुमने मेरे विचार को बिल्कुल विकृत कर दिया, एक तरुण युवती सुन्दरी को भयकर पिशाचिनी बना दिया। यदि तुम देवताओं की प्रकृति, न्याय और सर्वव्यापी नियमों से इतने अपरिचित हो तो तुम्हारी दशा पर जितना खेद किया जाय, उतना कम है।

जैनाथेमीज—मित्रो, मेरी तो भलाई और बुराई, सुकर्म और अकर्म दोनों ही की सत्ता पर अटल विश्वास है। लेकिन मुझे यह भी विश्वास है कि मनुष्य का एक भी ऐसा काम नहीं है—चाहे वह जूडा का कपट व्यवहार ही क्यों न हो—जिसमें मुक्ति का साधन, बीजरूप में, प्रस्तुत न हो। अधर्म मानवजाति के उद्धार का कारण हो सकता है, और इस हेतु से, वह धर्म का एक अंश है और धर्म के फल का भागी है। ईसाई धर्म-ग्रंथों में इस विषय की बड़ी सुन्दर व्याख्या की गई है। ईसू के एक शिष्य ही ने उनका शान्ति चुम्बन करके उन्हें पकड़ा दिया। किन्तु ईसू के पकड़े जाने का फल क्या हुआ?

वह सलीब पर खींचे गये और प्राणिमात्र के उद्धार की व्यवस्था निश्चित कर दी; अपने रक्त से मनुष्यमात्र के पापों का प्रायश्चित्त कर दिया। अतएव मेरी निगाह में वह तिरस्कार और घृणा सर्वथा अन्यायपूर्ण और निन्दनीय है

को सेन्ट पॉल के शिष्य के प्रति लोग प्रकट करते हैं। वह यह भल जाते हैं कि प्रभु मसीह ने इस चुम्बन के विषय में भविष्यवाणी की थी जो उन्हीं के सिद्धान्तों के अनुसार मानवजाति के उद्धार के लिए आवश्यक था और यदि जूडा ने तीस मुद्राएँ न ली होतीं तो ईश्वरीय व्यवस्था में बाधा पड़ती, पूर्वनिश्चित घटनाओं की शृंखला टूट जाती, दैवी विधानों में व्यतिक्रम उपस्थित हो जाता और संसार में अविद्या, अज्ञान और अधर्म की तूती बोलने लगती।

(अनुवादक—यह माना हुआ सिद्धान्त है कि बुराई से भलाई होती है। कैकेयी को नाहक इतना बदनाम किया जाता है। अगर उसने भी रामचन्द्र को वनवास न दिया होता तो रावण का संहार कैसे होता और पृथ्वी पर से अधर्म का बीज क्योंकर हटता! दुर्योधन को द्रौपदी के चीरहरण के लिए कोसा जाता है पर उसने यह अधर्म न किया होता तो महाभारत क्योंकर होता, अधर्मी कौरवजाति का नाश कैसे होता और संसार को गीता का ज्ञानामृत क्योंकर प्राप्त होता !)

मार्कस—परमात्मा को विदित था कि जूडा, बिना किसी दबाव के, कपट कर जायगा, अतएव उसने जूडा के पाप को मुक्ति के विशाल भवन का एक मुख्य स्तम्भ बना लिया।

जैनायेमीज—मार्कस महोदय, मैंने अभी जो कथन किया है, वह इस भाव से किया है मानों मसीह के सलीब पर चढ़ने से मानवजाति का उद्धार पूर्ण हो गया। इसका कारण यह है कि मैं ईसाइयों ही के ग्रन्थों और सिद्धान्तों से उन लोगों की भाँति सिद्ध करना चाहता था, जो जूडा को धिक्कारने से बाज नहीं आते। लेकिन वास्तव में ईसा मेरी निगाह में तीन मुक्तिदाताओं में से केवल एक था। मुक्ति के रहस्य के विषय में यदि आप लोग जानने के लिए उत्सुक हों तो मैं बताऊँ कि संसार में उस समस्या की पूर्ति क्योंकर हुई।

उपस्थित जनों ने चारों ओर से 'हाँ, हाँ' की। इतने में बारह युवती बालिकाएँ, अनार, अंगूर, सेब आदि से भरे हुए टोकरे सिर पर रखे हुए, एक अलक्षित वीणा के तालों पर पैर रखती हुईं, मन्द गति से सभा में आईं और

टोकरों को मेज पर रखकर उलटे पाँव लौट गई। वीणा बन्द हो गई और जैनाथेमीज ने यह कथा कहनी शुरू की—

'जब ईश्वर की विचार-शक्ति ने, जिसका नाम 'योनिया' है, संसार की रचना समाप्त कर ली तो उसने उसका शासनाधिकार स्वर्गदूतों को दे दिया। लेकिन इन शासकों में वह विवेक न था जो स्वामियों में होना चाहिए। जब उन्होंने मनुष्यों की रूपवती कन्याएँ देखीं तो कामातुर हो गये, सन्ध्या समय कुएँ पर अचानक आकर उन्हें घेर लिया, और अपनी कामवासना पूरी की। इस संयोग से एक अपरड जाति उत्पन्न हुई जिसने संसार में अन्याय और क्रूरता से हाहाकार मचा दिया, पृथ्वी निरपराधियों के रक्त से तर हो गई, बेगुनाहों की लाशों से सड़कें पट गईं। और अपनी सृष्टि की यह दुर्दशा देखकर योनिया अत्यन्त शोकातुर हुई।

उसने वैराग्य से भरे हुए नेत्रों से संसार पर दृष्टिपात किया और लम्बी साँस लेकर कहा—यह सब मेरी करनी है, मेरे पुत्र विपत्ति सागर में डूबे हुए हैं और मेरे ही अविचार से। उन्हें मेरे पापों का फल भोगना पड़ रहा है और मैं इसका प्रायश्चित्त करूँगी। स्वयं ईश्वर, जो मेरे ही द्वारा विचार करता है, उनमें आदिम सत्यनिष्ठा का संचार नहीं कर सकता। जो कुछ हो गया, हो गया, यह सृष्टि अनन्तकाल तक दूषित रहेगी। लेकिन कम से कम मैं अपने बालकों को इस दशा में न छोड़ूँगी। उनकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। यदि मैं उन्हें अपने समान सुखी नहीं बना सकती तो अपने को उनके समान दुखी तो बना सकती हूँ। मैंने ही उन्हें देहधारी बनाया है, जिससे उनका अपकार होता है, अतएव मैं स्वयं उन्हीं की सी देह धारण करूँगी और उन्हीं के साथ जाकर रहूँगी।

यह निश्चय करके योनिया आकाश से उतरी और यूनान की एक स्त्री के गर्भ में प्रविष्ट हुई। जन्म के समय वह नन्हीं सी दुर्बल प्राणहीन शिशु थी, उसका नाम हेलेन रखा गया। उसकी बाल्यावस्था बड़ी तकलीफ़ से कटी, लेकिन युवती होकर वह अतीव सुन्दरी रमणी हुई, जिसकी रूप शोभा अनुपम थी। यही उसकी इच्छा थी, क्योंकि वह चाहती थी कि उसका नश्वर शरीर घोरतम लिप्साओं की परीक्षाग्नि में जले। कामलोलुप और उद्दण्ड मनुष्यों से

अपहरित होकर उसने समस्त संसार के व्यभिचार, बलात्कार और दुष्टता के दण्डस्वरूप, सभी प्रकार की अमानुषीय यातनाएँ सहीं, और अपने सौन्दर्य द्वारा, राष्ट्रों का संहार कर दिया, जिसमें ईश्वर भूमण्डल के कुकर्मों को क्षमा कर दे। और वह ईश्वरीय विचारशक्ति, वह योनिया, कभी इतनी स्वर्गीय शोभा को प्राप्त न हुई थी, जब वह नारिरूप धारण करके योद्धाओं और ग्वालों को यथावसर अपनी शैय्या पर स्थान देती थी। कविजनों ने उसके दैवी महत्त्व का अनुभव करके ही उसके चरित्र का इतना शान्त, इतना सुन्दर, इतना घातक चित्रण किया है और इन शब्दों में उसे सम्बोधन किया है—तेरी आत्मा निश्चल सागर की भाँति शान्त है।

इस प्रकार पश्चात्ताप और दया ने योनिया से नीच-से नीच कर्म कराये, और दारुण दुःख झेलवाया। अन्त में उसकी मृत्यु हो गई और उसकी जन्मभूमि में अभी तक उसकी कब्र मौजूद है। उसका मरना आवश्यक था, जिसमें वह भोग-विलास के पश्चात् मृत्यु की पीड़ा का अनुभव करे और अपने लगाये हुए वृक्ष के कड़ुए फल चखे। लेकिन हेलेन के शरीर को त्याग करने के बाद उसने फिर स्त्री का जन्म लिया और फिर नाना प्रकार के अपमान और कलंक सहे। इसी भाँति जन्म-जन्मान्तरों से वह पृथ्वी का पाप भार अपने ऊपर लेती चली आती है। और उसका यह अनन्त आत्म समर्पण निष्फल न होगा। हमारे प्रेम सूत्र में बँधी हुई वह हमारी दशा पर रोती है, हमारे कष्टों से पीड़ित होती है, और अन्त में वह अपना और अपने साथ हमारा उद्धार करेगी और हमें अपने उज्ज्वल, उदार, दयामय हृदय से लगाये हुए स्वर्ग के शान्तिभवन में पहुँचा देगी।'

हरमोडोरस—यह कथा मुझे मालूम थी। मैंने कहीं पढ़ा या सुना है कि अपने एक जन्म में वह 'सीमन' जादूगर के साथ रही। मैंने विचार किया था कि ईश्वर ने उसे यह दण्ड दिया होगा।

जैनायेमीज—यह सत्य है, हरमोडोरस, कि जो लोग इन रहस्यों का मथन नहीं करते, उनको भ्रम होता है कि योनिया ने स्वेच्छा से यह यन्त्रणा नहीं झेली, वरन् अपने कर्मों का दण्ड भोगा। परन्तु यथार्थ में ऐसा नहीं है।

कलिकान्त—महाराज जैनायेमीज, कोई बतला सकता है कि वह बार-

वार जन्म लेनेवाली हेलेन इस समय किस देश में, किस वेश में किस नाम से रहती है

जनाथेमीज—इस भेद को खोलने के लिए असाधारण बुद्धि चाहिए, और नाराज न होना कलिक्रान्त, कवियों के हिस्से में बुद्धि नहीं आती। उन्हें बुद्धि लेकर करना ही क्या है ? वह तो रूप के ससार में रहते हैं और बालकों की भाँति शब्दों और खिलौनों से अपना मनोरजन करते हैं।

कलिक्रान्त—जैनाथेमीज, जरा जबान सँभालकर बातें करो। जानते हो देवगण कवियों से कितना प्रेम करते हैं ? उसके भक्तों की निन्दा करोगे तो वह रुष्ट होकर तुम्हारी दुर्गति कर डालेंगे। अमर देवताओं ने स्वय आदिम नीति पदों ही में घोषित की और उनकी आकाश वाणियाँ पदों ही में अवतरित होती हैं। भजन उनके कानों को कितने प्रिय हैं। कौन नहीं जानता कि कविजन ही आत्मज्ञानी होते हैं, उनसे कोई बात छिपी नहीं रहती! कौन नबी, कौन पैग़म्बर, कौन अवतार था जो कवि न रहा हो ? मैं स्वय कवि हूँ और कविदेव अपोलो का भक्त हूँ। इसलिए मैं योनिया के वर्तमान रूप का रहस्य बतला सकता हूँ। हेलेन हमारे समीप ही बैठी हुई है। हम सब उसे देख रहे हैं। तुम लोग उसी रमणी को देख रहे हो जो अपनी कुरसी पर तकिया लगाये बैठी हुई है—आँखों में आँसू की बूँदें मोतियों की तरह झलक रही हैं और अधरों पर अतृप्त प्रेम की इच्छा ज्योत्स्ना की भाँति छाई हुई है। यह वही स्त्री है। वही अनुपम सौन्दर्यवाली योनिया, वही विशाल रूप धारिणी हेलेन, इस जन्म में मन मोहिनी थायस है।

फिलिना—कैसी बातें करते हो, कलिक्रान्त ? थायस ट्रौजन की लड़ाई में! क्यों थायस तुमने एशिलीज, अजाक्स, पेरिस आदि शूर-वीरों को देखा था ? उस समय के घोड़े बड़े होते थे ?

एरिस्टाबोलस—घोड़ों की बातचीत कौन करता है ? मुझसे करो। मैं इस विद्या का अद्वितीय ज्ञाता हूँ।

चेरियास ने कहा—मैं बहुत पी गया। और वह मेज़ के नीचे गिर पड़ा।

कलिक्रान्त ने प्याला भरकर कहा—जो पीकर गिर पड़े उस पर देवताओं का कोप हो।

वृद्ध कोटा निद्रा में मग्न थे।

डोरियन थोड़ी देर से बहुत व्यग्र हो रहे थे। आँखें चढ़ गई थीं और नथने फूल गये थे। वह लड़खड़ाते हुए थायस की कुरसी के पास आकर बोले—

थायस, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, शायद प्रेमासक्त होना बड़ी निन्दा की बात है।

थायस—तुमने पहले क्यों मुझ पर प्रेम नहीं किया ?

डोरियन—तब तो पिया ही न था।

थायस—मैंने तो अब तक नहीं पिया, फिर तुम से प्रेम कैसे करूँ ?

डोरियन उसके पास से ड्रोसिया के पास पहुँचा, जिसने उसे इशारे से अपने पास बुलाया था। उसके पास जाते ही उसके स्थान पर ज़ैनाथेमीज आ पहुँचा और थायस के कपोलों पर अपना प्रेम अंकित कर दिया। थायस ने क्रुद्ध होकर कहा—मैं तुम्हें इससे अधिक धर्मात्मा समझती थी।

ज़ैनाथेमीज—मैं सिद्ध हूँ और सिद्ध गण किसी नियम का पालन नहीं करते।

थायस—लेकिन तुम्हें यह भय नहीं है कि स्त्री के आलिंगन से तुम्हारी आत्मा अपवित्र हो जायगी ?

ज़ैनाथेमीज—देह के भ्रष्ट होने से आत्मा भ्रष्ट नहीं होती। आत्मा को पृथक् रखकर, विषयभोग का सुख उठाया जा सकता है।

थायस—तो आप यहाँ से खिसक जाइए। मैं चाहती हूँ कि जो मुझे प्यार करे वह तन मन से प्यार करे। फिलॉसफ़र सभी बुड्ढे बकरे होते हैं। एक एक करके सभी दीपक बुझ गये। उषा की पीली किरणें जो परदों के दरारों से भीतर आ रही थीं मेहमानों की चढ़ी हुई आँखों और सँवलाये हुए चेहरों पर पड़ रही थीं। एरिस्टोबोलस चेरियास की बग़ल में पड़ा खर्राटे ले रहा था। ज़ैनाथेमीज महोदय, जो धर्म और अधर्म की सत्ता के क़ायल थे, फिलिना को हृदय से लगाये पड़े हुए थे। संसार से विरक्त डोरियन महाशय ड्रोसिया के आवरण-हीन वक्ष पर शराब की बूँदें टपकाते थे जो गोरी छाती पर लालों की भाँति नाच रही थीं और वह विरागी पुरुष उन बूँदों को अपने ओंठ से पकड़ने की चेष्टा कर रहा था। ड्रोसिया खिलखिला रही थी और

बूँदे गुदगुदे वक्ष पर छाया की भाँति डोरियन के ओठों के सामने से भागती थीं।

सहसा यूक्राइटीज उठा और निसियास के कन्धे पर हाथ रखकर उसे दूसरे कमरे के दूसरे सिरे पर ले गया।

उसने मुसकिराते हुए कहा—मित्र, इस समय किस विचार में हो, अगर तुम में अब भी विचार करने की सामर्थ्य है।

निसियास ने कहा—

मैं सोच रहा हूँ कि स्त्रियों का प्रेम 'अडानिस' * की वाटिका के समान है।

'उससे तुम्हारा क्या आशय है?'

निसियास—क्यों, तुम्हें मालूम नहीं कि स्त्रियाँ अपने आँगन में वीनस प्रेमी के स्मृतिस्वरूप, मिट्टी के गमलों में छोटे छोटे पौदे लगाती हैं? यह पौदे कुछ दिन हरे रहते हैं, फिर मुरझा जाते हैं।

'इसका क्या मतलब है निसियास? यही कि मुरझानेवाली नश्वर वस्तुओं पर प्रेम करना मूर्खता है?'

निसियास ने गभीर स्वर में उत्तर दिया—

मित्र, यदि सौंदर्य्य केवल छाया मात्र है, तो वासना भी दामिनी की दमक से अधिक स्थिर नहीं। इसलिए सौंदर्य्य की इच्छा करना पागलपन नहीं तो क्या है? यह बुद्धि सगत नहीं है। जो स्वय स्थायी नहीं है उसका भी उसी के साथ अन्त हो जाना, अस्थिर है। दामिनी खिसकती हुई छाँह को निगल जाय, यही अच्छा है।

यूक्राइटीज ने ठण्डी साँस खींचकर कहा—

निसियास, तुम मुझे उस बालक के समान जान पड़ते हो जो घुटनों के बल चल रहा हो। मेरी बात मानो—स्वाधीन हो जाओ। स्वाधीन होकर तुम मनुष्य बन जाते हो।

'यह क्योंकर हो सकता है यूक्राइटीज कि शरीर के रहते हुए मनुष्य मुक्त हो जाय?'

* वीनस यूनान की ललित कलाओं की देवी है और अडानिस उसका प्रेमी है।

'प्रिय पुत्र, तुम्हें यह शीघ्र ही ज्ञात हो जायगा। एक क्षण में तुम कहोगे यूक्राइटीज मुक्त हो गया।'

वृद्ध पुरुष एक संगमरमर के स्तम्भ से पीठ लगाये यह बातें कर रहा था और सूर्योदय की प्रथम ज्योतिरेखाएँ उसके मुख को आलोकित कर रही थीं। हरमोडोरस और मार्कस भी उसके समीप आकर निसियास की बग़ल में खड़े थे और चारों प्राणी, मदिरा-सेवियों के हँसी-ठट्ठे की परवाह न करके ज्ञान चर्चा में मग्न हो रहे थे। यूक्राइटीज का कथन इतना विचारपूर्ण और मधुर था कि मार्कस ने कहा—

तुम सच्चे परमात्मा को जानने के योग्य हो।

यूक्राइटीज ने कहा—

सच्चा परमात्मा सच्चे मनुष्य के हृदय में रहता है।

तब वह लोग मृत्यु की चर्चा करने लगे।

यूक्राइटीज ने कहा—मैं चाहता हूँ कि जब वह आये तो मुझे अपने दोषों को सुधारने और कर्तव्यों का पालन करने में लगा हुआ देखे। उसके सम्मुख मैं अपने निर्मल हाथों को आकाश की ओर उठाऊँगा और देवताओं से कहूँगा—पूज्य देवो, मैंने तुम्हारी प्रतिमाओं का लेशमात्र भी अपमान नहीं किया जो तुमने मेरी आत्मा के मन्दिर में प्रतिष्ठित कर दी हैं। मैंने वहीं अपने विचारों को, पुष्प-मालाओं को, दीपकों को, सुगन्ध को तुम्हारी भेंट किया है। मैंने तुम्हारे ही उपदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत किया है, और अब जीवन से उकता गया हूँ।

यह कहकर उसने अपने हाथों को ऊपर की तरफ़ उठाया और एक पल विचार में मग्न रहा। तब वह आनन्द से उल्लसित होकर बोला—

यूक्राइटीज़, अपने को जीवन से पृथक् कर ले, उस पक्के फल की भाँति जो वृक्ष से अलग होकर ज़मीन पर गिर पड़ता है, उस वृक्ष को धन्यवाद दे जिसने तुझे पैदा किया और उस भूमि को धन्यवाद दे जिसने तेरा पालन किया!

यह कहने के साथ ही उसने अपने वस्त्रों के नीचे से नंगा [illegible] निकाली और अपनी छाती में चुभा ली।

अवसर न था, पर आज का सा असर उसके मन पर कभी न हुआ था। पापनाशी की सदुत्तेजनाओं ने उसके सद्भावों को जगा दिया था। कैसे हृदयशून्य लोग हैं जो स्त्री को अपनी वासनाओं का खिलौना मात्र समझते हैं। कैसी स्त्रियाँ हैं जो अपने देह समर्पण का मूल्य एक प्याले शराब से अधिक नहीं समझतीं। मैं यह सब जानते और देखते हुए भी इसी अन्धकार में पड़ी हुई हूँ। मेरे जीवन को धिक्कार है!

उसने पापनाशी को जवाब दिया—

प्रिय पिता, मुझ में अब जरा भी दम नहीं है। मैं ऐसी अशक्त हो रही हूँ मानों दम निकल रहा है। कहाँ विश्राम मिलेगा, कहाँ एक घड़ी शान्ति से लेटूँ? मेरा चेहरा जल रहा है, आँखों से आँच सी निकल रही है, सिर में चक्कर आ रहा है, और मेरे हाथ इतने थक गये हैं कि यदि आनन्द और शान्ति मेरे हाथों की पहुँच में भी आ जाय तो मुझमें उसके लेने की शक्ति न होगी।

पापनाशी ने उसे स्नेहमय करुणा से देखकर कहा—

प्रिय भगिनी! धैर्य और साहस ही से तेरा उद्धार होगा। तेरी सुख शान्ति का उज्ज्वल और निर्मल प्रकाश इस भाँति निकल रहा है जैसे सागर और वन से भाप निकलती है।

यह सारा बातें करते हुए दोनों घर के समीप आ पहुँचे। सरो और सनौवर के वृक्ष जो 'परियों के कुञ्ज' को घेरे हुए थे, दीवार के ऊपर सिर उठ... [illegible] ...से काँप रहे थे। उनके सामने एक मैदान था। इस सू... [illegible] ...हुआ था। मैदान के चारों तरफ योद्धाओं की मूर्तियाँ [illegible] चारों सिरों पर अर्धचन्द्राकार सगमरमर की चौकियाँ बनी [illegible] की मूर्तियों पर स्थित थीं। थायस एक चौकी पर गिर पड़ी। [illegible] विश्राम लेने के बाद उसने सचिन्त नेत्रों से पापनाशी की ओर [illegible] पूछा—

अ[illegible] मैं कहाँ जाऊँ?

पा[illegible]शी ने उत्तर दिया—

उसके साथ जाना चाहिए जो तेरी खोज में कितनी ही [illegible]

कर आया है। वह तुझे इस भ्रष्ट जीवन से पृथक् कर देगा जैसे अंगूर बटोरनेवाला माली उन गुच्छों को तोड़ लेता है जो पेड़ में लगे लगे सड़ जाते हैं और उसे कोल्हू में ले जाकर सुगंधपूर्ण शराब के रूप में परिणत कर देता है। सुन, इस्कन्द्रियाँ से केवल बारह घण्टे की राह पर, समुद्रतट के समीप बेरागियों का एक आश्रम है जिसके नियम इतने सुन्दर, बुद्धिमत्ता से इतने परिपूर्ण हैं कि उनको पद्य का रूप देकर सितार और तम्बूरे पर गाना चाहिए। यह कहना लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं है कि जो स्त्रियाँ वहाँ पर रहकर उन नियमों का पालन करती हैं उनके पैर धरती पर रहते हैं और सिर आकाश पर। वह धन से घृणा करती हैं जिसमें मसीह उन पर प्रेम करें, लज्जाशील रहती हैं कि वह उन पर कृपादृष्टि-पात करें, सती रहती हैं कि वह उन्हें प्रेयसी बनायें। प्रभु मसीह माली का वेष धारण करके, नंगे पाँव, अपने विशाल बाहु को फैलाये, नित्यप्रति दर्शन देते हैं। उसी तरह उन्होंने माता मरियम को क़ब्र के द्वार पर दर्शन दिये थे। मैं आज तुझे उस आश्रम में ले जाऊँगा, और थोड़े ही दिन पीछे, तुझे इन पवित्र देवियों के सहवास में उनकी अमृतवाणी सुनने का आनन्द प्राप्त होगा। वह बहनों की भाँति तेरा स्वागत करने को उत्सुक हैं। आश्रम के द्वार पर उसकी अध्यक्षिणी माता अलबीना तेरा मुख चूमेंगी और तुझसे सप्रेम स्वर से कहेंगी, बेटी, आ, तुझे गोद में ले लूँ, मैं तेरे लिए बहुत विकल थी।

थायस चकित होकर बोली—

अरे अलबीना! कैसर की बेटी, सम्राट केरस की भतीजी! वह भोग विलास छोड़कर आश्रम में तप कर रही है!

पापनाशी ने कहा—

हाँ हाँ, वही! वही अलबीना, जो महल में पैदा हुई और सुनहरे वस्त्र धारण करती रही, जो संसार के सबसे बड़े नरेश की पुत्री है, उसे प्रभु मसीह की दासी का उच्च पद प्राप्त हुआ है। वह अब झोंपड़े में रहती है, मोटे वस्त्र पहनती है और कई दिन तक उपवास करती है। वह अब तेरी माता होगी और तुझे अपनी गोद में आश्रय देगी।

थायस चौकी पर से उठ बैठी और बोली—

अवसर न था, पर आज का सा असर उसके मन पर कभी न हुआ था। पापनाशी की सदुत्तेजनाओं ने उसके सद्भावों को जगा दिया था। कैसे हृदयशून्य लोग हैं जो स्त्री को अपनी वासनाओं का खिलौना मात्र समझते हैं। कैसी स्त्रियाँ हैं जो अपने देह समर्पण का मूल्य एक प्याले शराब से अधिक नहीं समझतीं। मैं यह सब जानते और देखते हुए भी इसी अन्धकार में पड़ी हुई हूँ। मेरे जीवन को धिक्कार है!

उसने पापनाशी को जवाब दिया—

प्रिय पिता, मुझ में अब जरा भी दम नहीं है। मैं ऐसी अशक्त हो रही हूँ मानों दम निकल रहा है। कहाँ विश्राम मिलेगा, कहाँ एक घड़ी शान्ति से लेटूँ? मेरा चेहरा जल रहा है, आँखों से आँच सी निकल रही है, सिर में चक्कर आ रहा है, और मेरे हाथ इतने थक गये हैं कि यदि आनन्द और शान्ति मेरे हाथों की पहुँच में भी आ जाय तो मुझमें उसके लेने की शक्ति न होगी।

पापनाशी ने उसे स्नेहमय करुणा से देखकर कहा—

प्रिय भगिनी! धैर्य और साहस ही से तेरा उद्धार होगा। तेरी सुख शान्ति का उज्ज्वल और निर्मल प्रकाश इस भाँति निकल रहा है जैसे सागर और वन से भाप निकलती है।

यह सारा बातें करते हुए दोनों घर के समीप आ पहुँचे। सरो और सनौवर के वृक्ष जो 'परियों के कुञ्ज' को घेरे हुए थे, दीवार के ऊपर सि उठाये प्रभात समीर से काँप रहे थे। उनके सामने एक मैदान था। इ समय सन्नाटा छाया हुआ था। मैदान के चारों तरफ योद्धाओं की मूर्ति बनी हुई थीं और चारों सिरों पर अर्धचन्द्राकार संगमरमर की चौकियाँ ब हुई थीं, जो दैत्यों की मूर्तियों पर स्थित थीं। थायस एक चौकी पर गिर पड़ी एक क्षण विश्राम लेने के बाद उसने सचिन्त नेत्रों से पापनाशी की अ देखकर पूछा—

अब मैं कहाँ जाऊँ?

पापनाशी ने उत्तर दिया—

तुझे उसके साथ जाना चाहिए जो तेरी खोज में कितनी ही मंजिलें मा

कर आया है। वह तुझे इस भ्रष्ट जीवन से पृथक् कर देगा जैसे अंगूर बटोरने-वाला माली उन गुच्छों को तोड लेता है जो पेड़ में लगे लगे सड़ जाते हैं और उसे कोल्हू में ले जाकर सुगंधपूर्ण शराब के रूप में परिणत कर देता है। सुन, इस्कन्द्रियों से केवल बारह घण्टे की राह पर, समुद्रतट के समीप वैरागियों का एक आश्रम है जिसके नियम इतने सुन्दर, बुद्धिमत्ता से इतने परिपूर्ण हैं कि उनको पद्य का रूप देकर सितार और तम्बूरे पर गाना चाहिए। यह कहना लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं है कि जो स्त्रियाँ वहाँ पर रहकर उन नियमों का पालन करती हैं उनके पैर धरती पर रहते हैं और सिर आकाश पर। वह धन से घृणा करती हैं जिसमें मसीह उन पर प्रेम करें, लज्जाशील रहती हैं कि वह उन पर कृपादृष्टि पात करें, सती रहती हैं कि वह उन्हें प्रेयसी बनायें। प्रभु मसीह माली का वेष धारण करके, नगे पाँव, अपने विशाल बाहु को फैलाये, नित्यप्रति दर्शन देते हैं। उसी तरह उन्होंने माता मरियम को क़ब्र के द्वार पर दर्शन दिये थे। मैं आज तुझे उस आश्रम में ले जाऊँगा, और थोड़े ही दिन पीछे, तुझे इन पवित्र देवियों के सहवास में उनकी अमृतवाणी सुनने का आनन्द प्राप्त होगा। वह बहनों की भाँति तेरा स्वागत करने को उत्सुक हैं। आश्रम के द्वार पर उसकी अध्यक्षिणी माता अलबीना तेरा मुख चूमेंगी और तुझसे सप्रेम स्वर से कहेगी, बेटी, आ, तुझे गोद में ले लूँ, मैं तेरे लिए बहुत विकल थी।

थायस चकित होकर बोली—

अरे अलबीना! कैसर की बेटी, सम्राट केरस की भतीजी! वह भोग विलास छोड़कर आश्रम में तप कर रही है!

पापनाशी ने कहा—

हाँ हाँ, वही! वही अलबीना, जो महल में पैदा हुई और सुनहरे वस्त्र धारण करती रही, जो संसार के सबसे बड़े नरेश की पुत्री है, उसे प्रभु मसीह की दासी का उच्च पद प्राप्त हुआ है। वह अब झोपड़े में रहती है, मोटे वस्त्र पहनती है और कई दिन तक उपवास करती है। वह अब तेरी माता होगी और तुझे अपनी गोद में आश्रय देगी।

थायस चौकी पर से उठ बैठी और बोली—

सदैव के लिए संसार से लुप्त हो जायेंगी। उनमें से कई इतने सुन्दर रंगों से सुशोभित हैं कि उनकी शोभा अवर्णनीय है, और लोगों ने उन्हें मुझे उपहार देने के लिए अतुल धन व्यय किया था। मेरे पास अमूल्य प्याले, मूर्तियाँ और चित्र हैं। मेरे विचार में उनको जलाना भी अनुचित होगा। लेकिन मैं इस विषय में कोई आग्रह नहीं करती। पूज्य पिता, आपकी जैसी इच्छा हो कीजिए।

यह कहकर वह पापनाशी के पीछे पीछे अपने गृह द्वार पर पहुँची जिस समय अगणित मनुष्यों के हाथों से हारों और पुष्प-मालाओं की भेंट पा चुकी थी, और जब द्वार खुला तो उसने द्वारपाल से कहा कि घर के समस्त सेवकों को बुलाओ। पहले चार भारतवासी आये जो रसोई का काम करते थे। वह सब साँवले रंग के और काने थे। थायस को एक ही जाति के चार गुलाम, और चारों काने, बड़ी मुश्किल से मिले, पर यह उसकी एक दिल्लगी थी और जब तक चारों मिल न गये थे, उसे चैन न आता था। जब वह मेज पर भोज्य पदार्थ चुनते थे तो मेहमानों को उन्हें देखकर बड़ा कुतूहल होता था। थायस प्रत्येक का वृत्तान्त उसके मुख से कहलाकर मेहमानों का मनोरंजन करती थी। इन चारों के बाद उनके सहायक आये। तब बारी-बारी से साईस, शिकारी, पालकी उठानेवाले, हरकारे जिनकी मांसपेशियाँ अत्यन्त सुदृढ थीं, दो कुशल माली, छः भयंकर रूप के हब्शी और तीन यूनानी गुलाम, जिनमें एक वैयाकरणी था, दूसरा कवि और तीसरा गायक सब आकर एक लम्बी कतार में खड़े हो गये। उनके पीछे हब्शिनें आईं जिनकी बड़ी-बड़ी गोल आँखों में शंका, उत्सुकता और उद्विग्नता झलक रही थी, और जिनके मुख कानों तक फटे हुए थे। सबके पीछे छः तरुणी रूपवती दासियाँ, अपनी नक़ाबों को सँभालती और धीरे धीरे बेड़ियों से जकड़े हुए पाँव उठाती आकर उदासीन भाव से खड़ी हुईं।

जब सब के सब जमा हो गये तो थायस ने पापनाशी की ओर उँगली उठाकर कहा—

देखो, तुम्हें यह महात्मा जो आज्ञा दें, उसका पालन करो। यह ईश्वर के ---। जो इनकी अवज्ञा करेगा वह खड़े-खड़े मर जायगा।

उसने सुना था और इस पर विश्वास करती थी कि धर्माश्रम ने सन जिस अभागे पुरुष पर कोप करके छड़ी से मारते थे, उसे निगलने के लिए पृथ्वी अपना मुँह खोल देती थी।

पापनाशी ने यूनानी दासों और दासियों को सामने से हटा दिया, वह से अपने ऊपर उनकी छाया भी न पड़ने देना चाहता था, और शेष सेवकों कहा—

यहाँ बहुत सी लकड़ी जमा करो, उसमें आग लगा दो और जब अग्नि की ज्वाला उठने लगे तो इस घर के सब साज सामान लेकर बहुमूल्य कालीनों तक, सभी मूर्तियाँ, चित्र, गमले, गड्डमड्ड करके इसी चिता में डाल दो, कोई चीज बाकी न बचे।

यह विचित्र आज्ञा सुनकर सबके सब विस्मित हो गये और अपनी स्वामिनी की ओर कातर नेत्रों से ताकते हुए मूर्तिवत् खड़े रह गये। वह अभी इसी अकर्मण्य दशा में अवाक् और निश्चल खड़े थे, और एक दूसरे को कुहनियाँ गड़ाते थे, मानों वह इस हुक्म को दिल्लगी समझ रहे हैं कि पापनाशी ने रौद्ररूप धारण करके कहा—

क्यों विलम्ब हो रहा है?

इसी समय थायस नगे पैर, छिटके हुए केश कन्धों पर लहराती, घर में से निकली। वह भद्दे मोटे वस्त्र धारण किये हुए थी, जो उसके देहस्पर्श मात्र से, स्वर्गीय, कामोत्तेजक सुगन्धि से परिपूरित जान पड़ते थे। उसके पीछे एक माली एक छोटी सी हाथी दाँत की मूर्ति छाती से लगाये लिये जाता था।

पापनाशी के पास आकर थायस ने मूर्ति उसे दिखाई और कहा—

पूज्य पिता, क्या इसे भी आग में डाल दूँ? प्राचीन समय की अद्भुत कारीगरी का नमूना है और इसका मूल्य शतगुण स्वर्ण से कम नहीं। इस क्षति की पूर्ति किसी भाँति न हो सकेगी, क्योंकि संसार में एक भी ऐसा निपुण मूर्तिकार नहीं है जो इतनी सुन्दर * इराॅस मूर्ति बना सके। पिता, यह भी स्मरण रखिए कि यह प्रेम का देवता है, इसके साथ निर्दयता करनी उचित नहीं। पिता, मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि प्रेम का अधर्म से कोई सम्बन्ध नहीं और अगर मैं विषय भोग में लिप्त हुई तो प्रेम की प्रेरणा

* प्रेम का देवता।

से नहीं, बल्कि उसकी अवहेलना करके, उसकी इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करके। मुझे उन बातों के लिए कभी पश्चात्ताप न होगा, जो मैंने उसके आदेश का उल्लंघन करके की हैं। उसकी कदापि यह इच्छा नहीं है कि स्त्रियाँ उन पुरुषों का स्वागत करें जो उसके नाम पर नहीं आते। इस कारण इस देवता की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। देखिए पिताजी, यह छोटा सा 'एरास' कितना मनोहर है। एक दिन निसियास ने, जो उन दिनों मुझ पर प्रेम करता था, इसे मेरे पास लाकर कहा—आज तो यह देवता यहीं रहेगा और तुम्हें मेरी याद दिलायेगा। पर इस नटखट बालक ने मुझे निसियास की याद तो कभी नहीं दिलाई, हाँ, एक युवक की याद नित्य दिलाता रहा जो एन्टिओक में रहता था और जिसके साथ मैंने जीवन का वास्तविक आनन्द उठाया। फिर वैसा पुरुष नहीं मिला, यद्यपि मैं सदैव उसकी खोज मे तत्पर रही। अब इस अग्नि को शान्त होने दीजिए, पिताजी! अतुल धन इसकी भेंट हो चुकी। इस बाल मूर्ति को आश्रय दीजिए और इसे सुरक्षित किसी धर्मशाला में स्थान दिला दीजिए। इसे देखकर लोगों के चित्त ईश्वर की ओर प्रवृत्त होंगे, क्योंकि प्रेम स्वभावत. मन में उत्कृष्ट और पवित्र विचारों को जाग्रत करता है।

थायस मन मे सोच रही थी कि वकालत का अवश्य असर होगा और कम से कम यह मूर्ति तो बच जायगी। लेकिन पापनाशी बाज की भाँति झपटा, माली के हाथ से मूर्ति छीन ली, तुरत उसे चिता में डाल दिया और निर्दय स्वर से बोला—

जब यह निसियास की चीज है और उसने इसे स्पर्श किया है तो मुझसे इसकी सिफारिश करना व्यर्थ है। उस पापी का स्पर्शमात्र समस्त विकारों से परिपूरित कर देने के लिए काफी है!

तब उसने चमकते हुए वस्त्र, भाँति भाँति के आभूषण, सोने की पादुकाएँ, रत्नजटित कंघियाँ, बहुमूल्य आइने, भाँति भाँति के गाने बजाने की वस्तुएँ, सरोद, सितार, वीणा, नाना प्रकार की फानूसें, अँकवारों में उठा-उठाकर झोंकना शुरू किया। इस प्रकार कितना धन नष्ट हुआ, इसका अनुमान करना कठिन है। इधर तो ज्वाला उठ रही थी, चिनगारियाँ उड़ रही थीं,

चटाक पटाक की निरन्तर ध्वनि सुनाई देती थी, उधर हब्शी गुलाम इस विनाशक दृष्टि से उन्मत्त हो, तालियाँ बजा-बजाकर, और भीषण नाद से चिल्ला चिल्लाकर नाच रहे थे। विचित्र दृश्य था, धर्मोत्साह का कितना भयंकर रूप!

इन गुलामों में से कई ईसाई थे। उन्होंने शीघ्र ही इस प्रकार का आशय समझ लिया और घर में ईंधन और आग लाने गये। औरों ने भी उनका अनुकरण किया, क्योंकि यह सब दरिद्र थे और धन से घृणा करते थे और धन से बदला लेने की उनमें स्वाभाविक प्रवृत्ति थी—जो धन हमारे काम नहीं आता, उसे नष्ट ही क्यों न कर डालें! जो वस्त्र हमें पहनने को नहीं मिल सकते, उन्हें जला ही क्यों न डालें। उन्हें इस प्रवृत्ति को शान्त करने का यह अच्छा अवसर मिला। जिन वस्तुओं ने हमें इतने दिनों तक जलाया है, उन्हें आज जला देंगे! चिता तैयार हो रही थी और घर की वस्तुएँ बाहर लाई जा रही थीं कि पापनाशी ने थायस से कहा—

पहले मेरे मन में यह विचार हुआ कि इस्कन्द्रिया के किसी चर्च के कोषाध्यक्ष को लाऊँ। (यदि अभी कोई ऐसा स्थान है जिसे चर्च कहा जा सके, और जिसे एरियन के भ्रष्टाचरण ने भ्रष्ट न कर दिया हो) और उसे तेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति दे दूँ कि वह उन्हें अनाथ विधवाओं और बालकों को प्रदान कर दे और इस भाँति पापोपार्जित धन का पुनीत उपयोग हो जाय। लेकिन एक क्षण में यह विचार जाता रहा, क्योंकि ईश्वर ने इसकी प्रेरणा न की थी। मैं समझ गया कि ईश्वर को कभी मंजूर न होगा कि तेरे पाप की कमाई ईश्वर के प्रिय भक्तों को दी जाय। इससे उनकी आत्मा को घोर दुःख होगा। जो स्वयं दरिद्र रहना चाहते हैं, स्वयं कष्ट भोगना चाहते हैं, इसलिए कि इससे उनकी आत्मा शुद्ध होगी, उन्हें यह कलुषित धन देकर उनकी आत्म-शुद्धि के प्रयत्न को विफल करना उनके साथ बड़ा अन्याय होगा। इसलिए मैं निश्चय कर चुका हूँ कि तेरा सर्वस्व अग्नि का भोजन बन जाये, एक धागा भी बाकी न रहे। ईश्वर को कोटि धन्यवाद देता हूँ कि तेरी नकाबें और चोलियाँ और कुर्तियाँ जिन्होंने समुद्र की लहरों से भी अगण्य चुम्बनों का आस्वादन किया है, आज ज्वाला के मुख और जिह्वा का अनुभव करेंगी।

गुलामो, दौडो, और लकड़ी लाओ और आग लाओ, तेल के कुप्पे लाकर लुढका दो, अगर और कपूर और लोहबान छिड़क दो जिसमें ज्वाला और भी प्रचण्ड हो जाय। और थायस, तू घर में जा, अपने घृणित वस्त्रों को उतार दे, आभूषणों को पैरों तले कुचल दे, और अपने सबसे दीन गुलाम से प्रार्थना कर कि वह तुझे अपना मोटा कुरता दे दे, यद्यपि तू इस दान को पाने योग्य नहीं है, जिसे पहनकर वह तेरे फर्श पर झाड़ू लगाता है।

थायस ने कहा—मैंने इस आज्ञा को शिरोधार्य किया।

जब तक चारों भारतीय काने बैठकर आग झोंक रहे थे, हब्शी गुलामों ने चिता में बडे बडे हाथी दाँत, आबनूस तथा सागौन के सन्दूक डाल दिये जो धमाके से टूट गये और उनमे से बहुमूल्य और रत्नजटित आभूषण निकल पडे। अलाव में से धुएँ के काले-काले बादल उठ रहे थे। तब अग्नि जो अभी तक सुलग रही थी, इतना भीषण शब्द करके धधक उठी, मानों कोई भयंकर बनपशु गरज उठा, और ज्वाल जिह्वा जो सूर्य के प्रकाश में बहुत धुंधली दिखाई देती थी, किसी राक्षस की भाँति अपने शिकार को निगलने लगी। ज्वाला ने उत्तेजित होकर गुलामों को भी उत्तेजित किया। वे दौड़ दौडकर भीतर से चीजें बाहर लाने लगे। कोई मोटी-मोटी कालीनें घसीटे चला आता था, कोई वस्त्र के गट्ठर लिये दौड़ा आता था। जिन नकाबों पर सुनहरा काम किया हुआ था, जिन परदों पर सुन्दर बेल बूटे हुए थे सभी आग में झोंक दिये गये। अग्नि मुँह पर नकाब नहीं डालना चाहती और न उसे परदों से प्रेम है। वह भीषण और नग्न रहना चाहती है। तब लकड़ी के सामानों की बारी आई। भारी मेज, कुरसियाँ, मोटे मोटे गद्दे, सोने की पट्टियों से सुशोभित पलंग गुलामों से उठते ही न थे। तीन बलिष्ठ हब्शी परियों की मूर्त्तियाँ छाती से लगाये हुए लाये। इन मूर्तियों में एक इतनी सुन्दर थी कि लोग उससे स्त्री का सा प्रेम करते थे। ऐसा जान पड़ता था कि तीन जंगली बंदर तीन स्त्रियों को उठाये भागे जाते हैं। और जब यह तीनों सुन्दर नग्न मूर्तियाँ, इन दैत्यों के हाथ से छूटकर गिरीं और टुकड़े टुकड़े हो गई, तो गहरी शोकध्वनि कानों में आई।

यह शोर सुनकर पड़ोसी एक एक करके जागने लगे और आँखें मल-

मझकर देखने लगे कि यह धुआँ कहाँ से आ रहा है। तब उसी अर्धनग्न दशा में बाहर निकल पड़े और अलाव के चारों ओर जमा हो गये।

यह माजरा क्या है? यही प्रश्न एक दूसरे से करता था।

इन लोगों में वह व्यापारी थे जिनसे थायस इत्र, तेल, कपड़े आदि लिया करती थी, और वह सचिन्त भाव से, मुँह लटकाये ताक रहे थे। उनकी समझ में कुछ न आता था कि यह क्या हो रहा है। कई विषयभोगी पुरुष जो रात भर के विलास के बाद सिर पर हार लपेटे, कुरते पहने, अपने गुलामों के पीछे जाते हुए, उधर से निकले तो यह दृश्य देखकर ठिठक गये और जोर जोर से तालियाँ बजाकर चिल्लाने लगे। धीरे-धीरे कुतूहल-वश और लोग आ गये और बड़ी भीड़ जमा हो गई। तब लोगों को ज्ञात हुआ कि थायस धर्माश्रम के तपस्वी पापनाशी के आदेश से अपनी समस्त सम्पत्ति जलाकर किसी आश्रम में प्रवृष्ट होने जा रही है।

दूकानदारों ने विचार किया—

थायस यह नगर छोड़कर चली जा रही है। अब हम किसके हाथ अपनी चीजें बेचेंगे? कौन हमें मुँह माँगे दाम देगा? यह बड़ा घोर अनर्थ है। थायस पागल हो गई है क्या? इस योगी ने अवश्य उस पर कोई मंत्र डाल दिया है, नहीं तो इतना सुख विलास छोड़कर तपस्विनी बन जाना सहज नहीं है। उसके बिना हमारा निर्वाह क्योंकर होगा! वह हमारा सर्वनाश किये डालती है। योगी को क्यों ऐसा करने दिया जाय? आखिर कानून किस लिए है? क्या इस्कन्द्रिया में कोई नगर का शासक नहीं है? थायस को हमारे बाल बच्चों की जरा भी चिन्ता नहीं है। उसे शहर में रहने के लिये मजबूर करना चाहिए। धनी लोग इसी भाँति नगर छोड़कर चले जायँगे,तो हम रह चुके। हम राज्यकर कहाँ से देंगे?

युवकगण को दूसरे प्रकार की चिन्ता थी—

अगर थायस इस भाँति निर्दयता से नगर से जायगी तो नाट्यशालाओं को जीवित कौन रखेगा? शीघ्र ही उनमें सन्नाटा छा जायेगा, हमारे मनोरंजन की मुख्य सामग्री गायब हो जायेगी, हमारा जीवन शुष्क और नीरस हो जायेगा। वह रंगभूमि का दीपक, आनन्द, सम्मान, प्रतिभा और प्राण थी!

जिन्होंने उसके प्रेम का आनन्द नहीं उठाया था, वह उसके दर्शन मात्र ही से कृतार्थ हो जाते थे। अन्य स्त्रियों से प्रेम करते हुए भी वह हमारे नेत्रों के सामने उपस्थित रहती थी। हम विलासियों की तो जीवनाधार थी। केवल यह विचार कि वह इस नगर में उपस्थित है, हमारी वासनाओं को उद्दीप्त किया करता था। जैसे जल की देवी वृष्टि करती है, अग्नि की देवी जलाती है, उसी भाँति यह आनन्द की देवी हृदय में आनन्द का सचार करती थी।

समस्त नगर में हलचल मचा हुआ था। कोई पापनाशी को गालियाँ देता था, कोई ईसाई धर्म को और कोई स्वय प्रभु मसीह को दस बातें सुनाता था और थायस के त्याग की भी बड़ी तीव्र आलोचना हो रही थी। ऐसा कोई समाज न था जहाँ कुहराम न मचा हो।

'यों मुँह छिपाकर जाना लज्जास्पद है!'

'यह कोई भलमनसाहत नहीं है!'

'अजी वह तो हमारे पेट की रोटियाँ छीने लेती है!'

'वह आनेवाली सन्तान को अरसिक बनाये देती है। अब उन्हें रसिकता का उपदेश कौन देगा!'

'अजी, उसने तो अभी हमारे हारों के दाम भी नहीं दिये।'

'मेरे भी ५० जोड़ों के दाम आते हैं।'

'सभी का कुछ न कुछ उस पर आता है।'

'जब वह चली जायेगी तो नायिकाओं का पार्ट कौन खेलेगा!'

'इस क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती।'

'उसका स्थान सदैव रिक्त रहेगा।'

'उसके द्वार बन्द हो जायँगे तो जीवन का आनन्द ही जाता रहेगा।'

'वह इस्कन्द्रिया के गगन का सूर्य थी।'

इतनी देर में नगर भर के भिक्षुक, अपगु, लूले, लँगड़े, कोढ़ी, अन्धे सब उस स्थान पर जमा हो गये और जली हुई वस्तुओं को टटोलते हुए बोले—

अब हमारा पालन कौन करेगा? उसके मेज का जूठन खाकर दो सौ अभागों के पेट भर जाते थे। उसके प्रेमीगण चलते समय हमें मुट्ठियाँ भर पैसे रुपये दान कर देते थे।

चोर चमारों की भी बन आई। वह भी आकर इस भीड में मिल गये और शोर मचा-मचाकर अपने पास के आदमियों को ढकेलने लगे कि दगा हो जाय और उस गोलमाल में हम भी किसी वस्तु पर हाथ साफ करें। यद्यपि बहुत कुछ जल चुका था, फिर भी इतना शेप था कि नगर के सारे चोर-चडाल अयाची हो जाते।

इस हलचल में केवल एक वृद्ध मनुष्य स्थिरचित्त दिखाई देता था। वह थायस के हाथों दूर देशों से बहुमूल्य वस्तुएँ ला लाकर बेचता था और थायस पर उसके बहुत रुपये आते थे। वह सबकी बातें सुनता था, देखता था कि लोग क्या करते हैं। रह रहकर दाढी पर हाथ फेरता था और मन में कुछ सोच रहा था। एकाएक उसने एक युवक को सुन्दर वस्त्र पहने पास खड़े देखा। उसने युवक से पूछा—

तुम थायस के प्रेमियों में नहीं हो?

युवक—हाँ, हूँ तो बहुत दिनों से।

वृद्ध—तो जाकर उसे रोकते क्यों नहीं?

युवक—और क्या तुम समझते हो कि उसे जाने दूँगा? मन में यही निश्चय करके आया हूँ। शेखी तो नहीं मारता, लेकिन इतना तो मुझे विश्वास है कि मैं उसके सामने जाकर खड़ा हो जाऊँगा तो वह इस बँदर-मुँहे पादरी की अपेक्षा मेरी बातों पर अधिक ध्यान देगी!

वृद्ध—तो जल्दी जाओ। ऐसा न हो कि तुम्हारे पहुँचते पहुँचते वह सवार हो जाय।

युवक—इस भीड़ को हटाओ।

वृद्ध व्यापारी ने 'हटो, जगह दो' का गुल मचाना शुरू किया और युवक घूँसों और ठोकरों से आदमियों को हटाता, वृद्धों को गिराता, बालकों को कुचलता, अन्दर पहुँच गया और थायस का हाथ पकड़कर प्यार से बोला—

प्रिये, मेरी ओर देखो। इतनी निष्ठुरता! याद करो, तुमने मुझसे कैसी कैसी बातें की थीं, क्या-क्या वादे किये थे, क्या अपने वादों का गुन जाओगी, क्या प्रेम का बन्धन इतना ढीला हो सकता है!

थायस अभी कुछ जवाब न देने पाई थी कि पापनाशी लपककर उसके और थायस के बीच में खड़ा हो गया और डाटकर बोला—

दूर हट, पापी कहीं का! खबरदार जो उसकी देह को स्पर्श किया। वह अब ईश्वर की है, मनुष्य उसे नहीं छू सकता।

युवक ने कड़ककर कहा—हट यहाँ से, वनमानुष! क्या तेरे कारण अपनी प्रियतमा से न बोलूँ? हट जाओ, नहीं तो यह दाढ़ी पकड़कर तुम्हारी गन्दी लाश को आग के पास खींच ले जाऊँगा और कबाब की तरह भून डालूँगा। इस भ्रम में मत रह कि तू मेरे प्राणाधार को यों चुपके से उठा ले जायगा। उसके पहले मैं तुझे संसार से उठा दूँगा।

यह कहकर उसने थायस के कन्धे पर हाथ रखा। लेकिन पापनाशी ने इतनी जोर से धक्का दिया कि वह कई कदम पीछे लड़खड़ाता हुआ चला गया और बिखरी हुई राख के समीप चारों शाने चित्त गिर पड़ा।

लेकिन वृद्ध सौदागर शान्त न बैठा। वह प्रत्येक मनुष्य के पास जा जाकर, गुलामों के कान खींचता, और स्वामियों के हाथों को चूमता और सभी को पापनाशी के विरुद्ध उत्तेजित कर रहा था कि थोड़ी देर में उसने एक छोटा सा जत्था बना लिया जो इस बात पर कटिबद्ध था कि पापनाशी को कदापि अपने कार्य में सफल न होने देगा। मजाल है कि वह पादरी हमारे नगर की शोभा को भगा ले जाय! गर्दन तोड़ देंगे। पूछो, धर्माश्रम में ऐसी रमणियों की क्या जरूरत? क्या संसार में विपत्ति की मारी बुढ़ियों की कमी है? क्या उनके आँसुओं से इन पादरियों को सन्तोष नहीं होता कि युवतियों को भी रोने के लिये मजबूर किया जाय!

युवक का नाम सिरोन था। वह धक्का खाकर गिरा, किन्तु तुरन्त गर्द झाड़कर उठ खड़ा हुआ। उसका मुँह राख से काला हो गया था, बाल झुनस गया था, क्रोध और धुएँ से दम घुट रहा था। वह देवताओं को गालियाँ देता हुआ उपद्रवियों को भड़काने लगा। पीछे भिखारियों का दल उत्पात पर उद्यत था। एक क्षण में पापनाशी तने हुए घूसों, उठी हुई लाठियों और अपमान सूचक अपशब्दों के बीच में घिर गया।

एक ने कहा—मारकर कौवों को खिला दो!

'नहीं जला दो, जीता आग में डाल दो, जलाकर भस्म कर दो!'

लेकिन पापनाशी जरा भी भयभीत न हुआ। उसने थायस को पकड़कर खींच लिया और मेघ की भाँति गरजकर बोला—

ईश्वरद्रोहियो, इस कपोत को ईश्वरीय बाज के चंगुल से छुड़ाने की चेष्टा मत करो। तुम आप जिस आग में जल रहे हो, उसमें जलने के लिए उसे विवश मत करो। बल्कि उसकी रीस करो और उसी की भाँति अपने खोटे को भी खरा कंचन बना दो। उसका अनुकरण करो, उसके दिखाये हुए मार्ग पर अग्रसर हो, और उस ममता को त्याग दो जो तुम्हें बाँधे हुए है और जिसे तुम समझते हो कि हमारी है। विलम्ब न करो, हिसाब का दिन निकट है और ईश्वर की ओर से वज्राघात होनेवाला ही है। अपने पापों पर पछताओ, उनका प्रायश्चित्त करो, तोबा करो, रोओ और ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करो। थायस के पदचिह्नों पर चलो। अपनी कुवासनाओं से घृणा करो जो उससे किसी भाँति कम नहीं हैं। तुममें से कौन इस योग्य है, चाहे वह धनी हो या कंगाल, दास हो या स्वामी, सिपाही हो या व्यापारी, जो ईश्वर के सम्मुख खड़ा होकर दावे के साथ कह सके कि मैं किसी वेश्या से अच्छा हूँ? तुम सबके सब सजीव दुर्गन्ध के सिवा और कुछ नहीं हो और यह ईश्वर की महान् दया है कि वह तुम्हें एक क्षण में कीचड़ की मोरियाँ नहीं बना डालता।

जब तक वह बोलता रहा, उसकी आँखों से ज्वाला सी निकल रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि उसके मुख से आग व अंगारे बरस रहे हैं। जो लोग वहाँ खड़े थे, इच्छा न रहने पर भी मन्त्र मुग्ध से खड़े उसकी बातें सुन रहे थे।

किन्तु वह वृद्ध व्यापारी ऊधम मचाने में अत्यन्त प्रवीण था। वह अब भी शान्त न हुआ। उसने जमीन से पत्थर के टुकड़े और घोंघे चुन लिये और अपने कुरते के दामन में छिपा लिये, किन्तु स्वयं उन्हें फेंकने का साहस न करके उसने वह सब चीजें भिक्षुकों के हाथों में दे दीं। फिर क्या था? पत्थरों की वर्षा होने लगी और एक घोंघा पापनाशी के चेहरे पर ऐसा आकर बैठा कि घाव हो गया। रक्त की धारा पापनाशी के चेहरे पर बह बहकर त्यागिनी थायस के सिर पर टपकने लगी, मानों उस रक्त के *बतीसमा* से पुन

सत्कृत किया जा रहा था। थायस को योगी ने इतनी जोर से भेंच लिया था कि उसका दम घुट रहा था और योगी के खुरखुरे वस्त्र से उसका शरीर छिला जाता था। इस असमंजस में पड़े हुए, घृणा और क्रोध से उसका मुख लाल हो रहा था।

इतने में एक मनुष्य भड़कीले वस्त्र पहने, जंगली फूलों की एक माला सिर पर लपेटे भीड़ को हटाता हुआ आया और चिल्लाकर बोला—

ठहरो, ठहरो, यह उत्पात क्यों मचा रहे हो? यह योगी मेरा भाई है।

यह निसियास था, जो वृद्ध यूक्राइटीज को कब्र में सुलाकर इस मैदान से होता हुआ अपने घर लौटा जा रहा था। देखा तो अलाव जल रहा है, उसमें भाँति-भाँति की बहुमूल्य वस्तुएँ पड़ी सुलग रही हैं, थायस एक मोटी चादर ओढ़े खड़ी है और पापनाशी पर चारों ओर से पत्थरों की बौछार हो रही है। वह यह दृश्य देखकर विस्मित तो नहीं हुआ, वह आवेशों के वशीभूत न होता था। हाँ, ठिठक गया और पापनाशी को इस आक्रमण से बचाने की चेष्टा करने लगा।

उसने फिर कहा—

मैं मना कर रहा हूँ, ठहरो, पत्थर न फेंको। यह योगी मेरा प्रिय सहपाठी है। मेरे प्रिय मित्र पापनाशी पर अत्याचार मत करो।

किन्तु उसकी ललकार का कुछ असर न हुआ। जो पुरुष नैयायिकों के साथ बैठा हुआ बाल की खाल निकालने में ही कुशल हो, उसमें वह नेतृत्व शक्ति कहाँ जिसके सामने जनता के सिर झुक जाते हैं। पत्थरों और घोंघों की दूसरी बौछार पड़ी, किन्तु पापनाशी थायस को अपनी देह से रक्षित किये हुए पत्थरों की चोटें खाता था और ईश्वर को धन्यवाद देता था जिसकी दयादृष्टि उसके घावों पर मरहम रखती हुई जान पड़ती थी। निसियास ने जब देखा कि यहाँ मेरा कोई नहीं सुनता और मन में यह समझकर कि मैं अपने मित्र की रक्षा न तो बल से कर सकता हूँ न वाक्य चातुरी से, उसने सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दिया। (यद्यपि ईश्वर पर उसे अणुमात्र भी विश्वास न था।) सहसा उसे एक उपाय सूझा। इन प्राणियों को वह इतना नीच समझता था कि उसे अपने उपाय की सफलता पर जरा भी सन्देह न रहा।

उसने तुरन्त अपनी थैली निकाल ली, जिसमें रुपये और अशर्फियाँ भरी हुई थीं। वह बड़ा उदार, विलास प्रेमी पुरुष था, और उन मनुष्यों के समीप जाकर जो पत्थर फेंक रहे थे, उनके कानों के पास मुद्राओं को उसने खनखनाया। पहले तो वे उससे इतने झल्लाये हुए थे, लेकिन शीघ्र ही सोने की झंकार ने उन्हें लुब्ध कर दिया, उनके हाथ नीचे को लटक गये। निसियास ने जब देखा कि उपद्रवकारी उसकी ओर आकर्षित हो गये तो उसने कुछ रुपये और मोहरें उनकी ओर फेंक दीं। उनमें से जो ज्यादा लोभी प्रकृति के थे, वह झुक-झुककर उन्हें चुनने लगे। निसियास अपनी सफलता पर प्रसन्न होकर मुट्ठियाँ भर-भर रुपये आदि इधर-उधर फेंकने लगा। पक्की जमीन पर अशर्फियों के खनकने की आवाज सुनकर पापनाशी के शत्रुओं का दल भूमि पर सिजदे करने लगा। भिक्षुक, गुलाम, छोटे मोटे दुकानदार, सब के सब रुपये लूटने के लिए आपस में धींगामुश्ती करने लगे और सिरान तथा अन्य भद्र समाज के प्राणी दूर से यह तमाशा देखते थे और हँसते हँसते लोट जाते थे। स्वयं सीरोन का क्रोध शान्त हो गया। उसके मित्रों ने लूटनेवाले प्रतिद्वंद्वियों को भड़काना शुरू किया मानों पशुओं को लड़ा रहे हों। कोई कहता था, अब की यह बाजी मारेगा, इस पर शर्त बदता हूँ, कोई किसी दूसरे योद्धा का पक्ष लेता था, और दोनों प्रतिपक्षियों में सैकड़ों की हार-जीत हो जाती थी। एक बिना टाँगोंवाले पंगुल ने जब एक मोहर पाई तो उसके साहस पर तालियाँ बजने लगीं। यहाँ तक कि सबने उस पर फूल बरसाये। रुपये लुटाने का तमाशा देखते-देखते यह युवक इतने खुश हुए कि स्वयं लुटाने लगे और एक क्षण में समस्त मैदान में सिवाय पीठों के उठने और गिरने के और कुछ दिखाई ही न देता था, मानों समुद्र की तरंगें चाँदी-सोने के सिक्कों के तूफान से आन्दोलित हो रही हों। पापनाशी की किसी का सुध ही न रही।

तब निसियास उसके पास लपककर गया, उसे अपने लबादे में छिपा लिया और थायस को उसके साथ एक पास की गली में खींच ले गया जहाँ विद्रोहियों से उनका गला छूटा। कुछ देर तक तो वह चुपचाप दौड़े, लेकिन जब उन्हें मालूम हो गया कि हम काफी दूर निकल आये और इधर कोई

हमारा पीछा करने न आयेगा तो उन्होंने दौड़ना छोड़ दिया। निसियास ने परिहासपूर्ण स्वर में कहा—

लीला समाप्त हो गई। अभिनय का अन्त हो गया। थायस नहीं रुक सकती। वह अपने उद्धार-कर्ता के साथ अवश्य जायगी, चाहे वह उसे जहाँ ले जाय।

थायस ने उत्तर दिया—

हाँ निसियास, तुम्हारा कथन सर्वथा निर्मूल नहीं है। मैं तुम जैसे मनुष्यों के साथ रहते-रहते तंग आ गई हूँ, जो सुगन्ध से बसे, विलास में डूबे हुए, सहृदय आत्मसेवी प्राणी हैं। जो कुछ मैंने अनुभव किया है, उससे मुझे इतनी घृणा हो गई है कि अब मैं अज्ञात आनन्द की खोज में जा रही हूँ। मैंने उस सुख को देखा है जो वास्तव में सुख नहीं था और आज मुझे एक गुरु मिला है जो बतलाता है कि दुख और शोक ही में सच्चा आनन्द है। मेरा उस पर विश्वास है, क्योंकि उसे सत्य का ज्ञान है।

निसियास ने मुसकिराते हुए कहा—

और प्रिये, मुझे तो सम्पूर्ण सत्यों का ज्ञान प्राप्त है। वह केवल एक ही सत्य का ज्ञाता है, मैं सभी सत्यों का ज्ञाता हूँ। इस दृष्टि से तो मेरा पद उसके पद से कहीं ऊँचा है, लेकिन सच पूछो तो इससे न कुछ गौरव प्राप्त होता है न कुछ आनन्द।

तब यह देखकर कि पापनाशी मेरी ओर तापमय नेत्रों से ताक रहा है उसने उसे सम्बोधित करके कहा—

प्रिय मित्र पापनाशी, यह मत सोचो कि मैं तुम्हें निरा बुद्धू, पाखण्डी या अन्धविश्वासी समझता हूँ। यदि मैं अपने जीवन की तुम्हारे जीवन से तुलना करूँ, तो मैं स्वयं निश्चय न कर सकूँगा कि कौन श्रेष्ठ है। मैं ... से जाकर स्नान करूँगा, दासों ने पानी तैयार कर रखा होगा, तब ... पहनकर एक तीतर के डैनों का नाश्ता करूँगा ... आनन्द ... लेटकर कोई कहानी पढ़ूँगा या किसी ... पारों का ... करूँगा। यद्यपि ऐसी कहानियाँ बहुत पढ़ ... योनि

में भी कोई मौलिकता या नवीनता नहीं रही। तुम अपनी कुटी में लौटकर जाओगे और वहाँ किसी सिखाये हुए ऊँट की भाँति झुककर कुछ जुगाली सी करोगे, कदाचित् कोई-एक हजार बार के चबाये हुए शब्दाडम्बर को फिर से चबाओगे और सन्ध्या समय बिना बघारी हुई भाजी खाकर जमीन पर लेट रहोगे। किन्तु बन्धुवर, यद्यपि हमारे और तुम्हारे मार्ग पृथक् हैं, यद्यपि हमारे और तुम्हारे कार्य-क्रम में बड़ा अन्तर दिखाई पड़ता है, लेकिन वास्तव में हम दोनों एक ही मनोभाव के अधीन कार्य कर रहे हैं—वही जो समस्त मानव कृत्यों का एकमात्र कारण है। हम सभी सुख के इच्छुक हैं, सभी एक ही लक्ष्य पर पहुँचना चाहते हैं। सभी का अभिष्ट एक ही है—आनन्द, अप्राप्य आनन्द, असम्भव आनन्द। यह मेरी मूर्खता होगी अगर मैं कहूँ कि तुम गलती पर हो, यद्यपि मेरा विचार है कि मैं सत्य पर हूँ।

और प्रिय थायस, तुमसे भी मैं यही कहूँगा कि जाओ और अपनी जिन्दगी के मजे उठाओ और यदि यह बात असम्भव न हो, तो त्याग और तपस्या में उससे अधिक आनन्द लाभ करो जितना तुमने भोग और विलास में किया है। सभी बातों का विचार करके मैं कह सकता हूँ कि ऊपर लोगों को हसद होता था, क्योंकि यदि पापनाशी ने और मैंने अपने समस्त जीवन में एक ही प्रकार के आनन्द का उपभोग किया है, तो थायस, तुमने अपने जीवन में इतने भिन्न भिन्न प्रकार के आनन्दों का आस्वादन किया है जो विरले ही किसी मनुष्य को प्राप्त हो सकते हैं। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि एक घण्टे के लिए मैं बन्धु पापनाशी की तरह सत हो जाता। लेकिन यह सम्भव नहीं। इसलिए तुमको भी विदा करता हूँ, जाओ जहाँ प्रकृति की गुप्त-शक्तियाँ और तुम्हारा भाग्य तुम्हें ले जाय। जाओ तुम्हारी इच्छा हो, निःश्वास की शुभेच्छाएँ तुम्हारे साथ रहेंगी। मैं जानता हूँ कि इस समय अनर्गल बातें कर रहा हूँ, पर इस असार शुभकामनाओं और निर्मूल पछतावे के सिवाय, मैं उस सुखमय भ्रांति का क्या मूल्य दे सकता हूँ जो तुम्हारे प्रेम के दिनों में मुझ पर छाई रहती थी और जिसकी स्मृति छाया की भाँति मेरे मन में रह गई है! जाओ मेरी देवी, जाओ, तुम परोपकार की मूर्ति हो जिसे अपने अस्तित्व का ज्ञान नहीं, तुम लीलामयी सुषमा हो। नमस्कार है उस सर्वांग

उपहास कर रही है। मृत्यु की कल्पना ही से दु:ख हुआ। इस विवाद को दूर करने के लिए उसने मन में तर्क किया—

इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि काल या समय कोई चीज नहीं। वह हमारी बुद्धि की भ्रांतिमात्र है, धोखा है। तो जब इसकी सत्ता ही नहीं तो वह मेरी मृत्यु को कैसे ला सकता है। क्या इसका यह आशय है कि अनन्तकाल तक मैं जीवित रहूँगा? क्या मैं भी देवताओं की भाँति अमर हूँ? नहीं, कदापि नहीं। लेकिन इससे यह अवश्य सिद्ध होता है कि वह इस समय है, सदैव से है, और सदैव रहेगा। यद्यपि मैं अभी इसका अनुभव नहीं कर रहा हूँ, पर यह मुझमें विद्यमान है और मुझे उससे शङ्का न करनी चाहिए, क्योंकि उस वस्तु के आने से डरना जो पहले ही आ चुकी है हिमाकत है। यह किसी पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ के समान उपस्थित है, जिसे मैंने पढ़ा है, पर अभी समाप्त नहीं कर चुका हूँ।

उसका शेष रास्ता इस वाद मे कट गया, लेकिन उसके चित्त को शान्ति न मिली और जब वह घर पहुँचा तो उसका मन विवादपूर्ण विचारों से भरा हुआ था। उसकी दोनों युवती दासियाँ प्रसन्न, हँस हँसकर टेनिस खेल रही थीं। उनकी हास्य ध्वनि ने अन्त में उसके दिल का बोझ हल्का किया।

पापनाशी और थायस भी शहर से निकलकर समुद्र के किनारे चले। रास्ते म पापनाशी बोला—

थायस, इस विस्तृत सागर का जल भी तेरी कालिमाओं को नहीं धो सकता।

यह कहते कहते उसे अनायास क्रोध आ गया। थायस को धिक्कारने लगा—

तू कुतियों और शूकरियों से भी भ्रष्ट है, क्योंकि तूने उस देह को जो ईश्वर ने तुझे इस हेतु दिया था कि तू उसकी मूर्ति स्थापित करे, विधर्मियों और म्लेच्छों द्वारा दलित कराया है। और तेरा दुराचरण इतना अधिक है कि तू बिना अन्त करण में अपने प्रति घृणा का भाव उत्पन्न किये न ईश्वर की प्रार्थना कर सकती है न वन्दना।

धूप के मारे जमीन से आँच निकल रही थी और थायस अपने नये गुरु के पीछे सिर झुकाये पथरीली सड़कों पर चली जा रही थी। थकान के मारे उसके घुटनों में पीड़ा होने लगी और कंठ सूख गया। लेकिन पापनाशी ने

मन मे दयाभाव का जागना तो दूर रहा, (जो दुरात्माओं को भी नर्म क देता है,) वह उलटे प्राणी के प्रायश्चित्त पर प्रसन्न हो रहा था जिसके पा का वारापार न था। वह धर्मोत्साह से इतना उत्तेजित हो रहा था कि उ देह को लोहे के सागों से छेदने में भी उसे सकोच न होता जिसक सौन्दर्य उसकी कलुषता का मानों उज्वल प्रमाण था। ज्यों ज्यों वह विचा में मग्न होता था, उसका प्रकोप और भी प्रचण्ड होता जाता था। जब उ याद आता था कि निसियास उसके साथ सहवास कर चुका है तो उसव रक्त खौलने लगता था और ऐसा जान पड़ता था कि उसकी छाती फ जायेगी। अपशब्द उसके ओठों पर आ आकर रुक जाते थे और वह केव दाँत पीस पीसकर रह जाता था। सहसा वह उछलकर, विकराल रूप धार किये हुए उसके सम्मुख खड़ा हो गया और उसके मुँह पर थूक दिया उसकी तीव्र दृष्टि थायस के हृदय में चुभी जाती थी।

थायस ने शान्तिपूर्वक अपना मुँह पोंछ लिया और पापनाशी के पी चलती रही। पापनाशी उसकी ओर ऐसी कठोर दृष्टि से ताकता था, मा वह सदेह नरक है। उसे यह चिन्ता हो रही थी कि मैं इससे प्रभु मसीह का बदला क्योंकर लूँ, क्योंकि थायस ने मसीह को अपने कुकृत्यों से इतना उत्पीड़ित किया था कि उन्हें स्वय उसे दण्ड देने का कष्ट उठाना पड़े। अकस्मात् उसे रुधिर की एक बूँद दिखाई दी जो थायस के पैर से बहकर मार्ग पर गिरी थी। उसे देखते ही पापनाशी का हृदय दया से प्लावित हो गया, उसकी कठोर आकृति शान्त हो गई। उसके हृदय में एक ऐसा भाव प्रविष्ट हुआ जिससे वह अभी अनभिज्ञ था, वह रोने लगा, सिसकियों का तार बँध गया, तब वह दौड़कर उसके सामने माथा ठोककर बैठ गया और उसके चरणों पर गिरकर कहने लगा—

बहिन, बहिन, मेरी माता, मेरी देवी—और उसके रक्तप्लावित चरणों को चूमने लगा।

तब उसने शुद्ध हृदय से यह प्रार्थना की—

ऐ स्वर्ग के दूतो! इस रक्त की बूँद को सावधानी से उठाओ और इसे परम पिता के सिंहासन के सम्मुख ले जाओ। ईश्वर की इस पवित्र भूमि पर,

जहाँ यह रक्त बहा है, एक अलौकिक पुष्प वृक्ष उत्पन्न हो, उसमें स्वर्गीय सुगन्ध युक्त फूल खिलें और जिन प्राणियों की दृष्टि उस पर पड़े, और जिनकी नाक में उसकी सुगन्ध पहुँचे, उनके हृदय शुद्ध और उनके विचार पवित्र हो जायें। थायस, परमपूज्या थायस ! तुझे धन्य है ! आज तूने वह पद प्राप्त कर लिया जिसके लिए बड़े-बड़े सिद्ध योगी भी लालायित रहते हैं।

जिस समय वह यह प्रार्थना और शुभाकांक्षा करने में मग्न था, एक लड़का अपने गधे पर सवार जाता हुआ मिला। पापनाशी ने उसे उतरने की आज्ञा दी, थायस को गधे पर बिठा दिया और तब उसकी बागडोर पकड़कर ले चला। सूर्यास्त के समय वे एक नहर पर पहुँचे जिस पर सघन वृक्षों का छाया था। पापनाशी ने गधे को एक छुहारे के वृक्ष से बाँध दिया और एक काई से ढके हुए चट्टान पर बैठकर उसने एक रोटी निकाली और उसे नमक और तेल के साथ दोनों ने खाया, चिल्लू से ताजा पानी पिया और ईश्वरीय विषय पर सम्भाषण करने लगे।

थायस बोली—

पूज्य पिता, मैंने आज तक कभी ऐसा निर्मल जल नहीं पिया और न ऐसी प्राणप्रद, स्वच्छ वायु में साँस लिया, मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि इस समीरण में ईश्वर की ज्योति प्रवाहित हो रही है।

पापनाशी बोला—

प्रिय बहन, देखो सन्ध्या हो रही है। निशा की सूचना देनेवाली श्यामलता पहाड़ियों पर छाई हुई है। लेकिन शीघ्र ही तुझे ईश्वरीय ज्योति ईश्वरीय उषा के सुनहरे प्रकाश में चमकती हुई दिखाई देगी, शीघ्र ही तुझे अनन्त प्रभात के गुलाब-पुष्पों की मनोहर लालिमा आलोकित होती हुई दृष्टिगोचर होगी।

दोनों रात भर चलते रहे। अर्द्धचन्द्र की ज्योति लहरों के उज्ज्वल मुकुट पर जगमगा रही थी, नौकाओं के सुफेद पाल उस शान्तिमय ज्योत्स्ना में दे जान पड़ते थे मानो पुनीत आत्माएँ स्वर्ग को प्रयाण कर रही हैं। दोनों स्तुति और भजन गाते हुए चले जाते थे। थायस के कण्ठ का माधुर्य नाशी की पचम ध्वनि के साथ मिश्रित होकर ऐसा जान पड़ता कि

पर टाट का बसिया कर दिया गया है। जब दिनकर ने अपना प्रकाश फैलाया, तो उनके सामने लाइबिया की मरुभूमि एक विस्तृत सिंहचर्म की भाँति फैली हुई दिखाई दी। मरुभूमि के उस सिरे पर कई छुहारे के वृक्षों के मध्य में कई सुफेद झोपड़ियाँ प्रभात के मन्द प्रकाश में झलक रही थीं।

थायस ने पूछा—

पूज्य पिता, क्या वह ईश्वरीय ज्योति का मन्दिर है?

'हाँ प्रिय बहन, मेरी प्रिय पुत्री, वही मुक्ति गृह है, जहाँ मैं तुझे अपने ही हाथों से बन्द करूँगा।'

एक क्षण में उन्हें कई स्त्रियाँ झोपड़ियों के आसपास कुछ काम करती हुई दिखाई दीं, मानों मधुमक्खियाँ अपने छत्तों के पास भिनभिना रही हों। कई स्त्रियाँ रोटियाँ पकाती थीं, कई शाक भाजी बना रही थीं, बहुत सी स्त्रियाँ ऊन कात रही थीं और आकाश की ज्योति उन पर इस भाँति पड़ रही थी मानों परम पिता की मधुर मुसकान है, और कितनी ही तपस्विनियाँ झाऊ के नीचे बैठी ईश्वरवन्दना कर रही थीं, उनके गोरे-गोरे हाथ दोनों किनारे लटके हुए थे क्योंकि ईश्वर के प्रेम से परिपूर्ण हो जाने के कारण वह हाथों से कोई काम न करती थीं, केवल ध्यान, आराधना और स्वर्गीय आनन्द में निमग्न रहती थीं। इसलिए उन्हें 'माता मरियम की पुत्रियाँ' कहते थे, और वह उज्ज्वल वस्त्र ही धारण करती थीं। जो स्त्रियाँ हाथों से काम धन्धा करती थीं, वह 'माथी की पुत्रियाँ' कहलाती थीं और नीले वस्त्र पहनती थीं। सभी स्त्रियाँ कटोप लगाती थीं, केवल युवतियाँ बालों के दो-चार गुच्छे माथे पर निकाले रहती थीं—सम्भवत वह आप ही-आप बाहर निकल आते थे, क्योंकि बालों को सँवारना या दिखाना नियमों के विरुद्ध था। एक बहुत लम्बी, गोरी, वृद्ध महिला एक कुटी से निकलकर दूसरी कुटी में जाती थी। उसके हाथ में लकड़ी की एक जरीब थी। पापनाशी बड़े अदब के साथ उसके समीप गया, उसके नकाब के किनारों का चुम्बन किया और बोला—

पूज्या अलबीना, परम पिता तेरी आत्मा को शान्ति दें! मैं उस छत्ते के लिए जिसकी तू रानी है, एक मक्खी लाया हूँ, जो पुष्पहीन मैदानों में इधर-उधर भटकती फिरती थी। मैंने इसे अपनी हथेली में उठा लिया और

उसे अपने श्वासोच्छ्वास से पुनर्जीवित किया। मैं इसे तेरी शरण लाया हूँ।

यह कहकर उसने थायस की ओर इशारा किया। थायस तुरन्त क़ैसर की पुत्री के सम्मुख घुटनों के बल बैठ गई।

अलबीना ने थायस पर एक मर्मभेदी दृष्टि डाली, उसे उठने को कहा, उसके मस्तक का चुम्बन किया और तब योगी से बोलीं—

हम इसे 'माता मरियम की पुत्रियों' के साथ रखेंगे।

पापनाशी ने तब थायस के मुक्तिगृह में आने का पूरा वृत्तान्त कह सुनाया। ईश्वर ने कैसे उसे प्रेरणा की, कैसे वह इस्कन्द्रिया पहुँचा और किन-किन उपायों से उसके मन में उसने प्रभु मसीह का अनुराग उत्पन्न किया। इसके बाद उसने प्रस्ताव किया कि थायस को किसी कुटी में बन्द कर दिया जाय, जिससे वह एकान्त में अपने पूर्व जीवन पर विचार करे, आत्मशुद्धि के मार्ग का अवलम्बन करे।

मठ की अध्यक्षिणी इस प्रस्ताव से सहमत हो गई। वह थायस को एक कुटी में ले गई जिसे कुमारी लौटा ने अपने चरणों से पवित्र किया था और जो उसी समय से खाली पड़ी हुई थी। इस तंग कोठरी में केवल एक चारपाई, एक मेज और एक घड़ा था और जब थायस ने उसके अन्दर कदम रखा, तो चौखट को पार करते ही उसे अकथनीय आनन्द का अनुभव हुआ।

पापनाशी ने कहा—

मैं स्वयं द्वार को बन्द करके उस पर एक मुहर लगा देना चाहता हूँ, जिसे प्रभु मसीह स्वयं आकर अपने हाथों से तोड़ेंगे।

वह उसी क्षण पास की जलधारा के किनारे गया, उसमें से मुट्ठी भर मिट्टी ली, उसमें अपने मुँह का थूक मिलाया और उसे द्वार के दरवाज़ों पर मढ़ दिया। तब खिड़की के पास आकर, जहाँ थायस शान्तचित्त और प्रसन्नमुख बैठी हुई थी, उसने भूमि पर सिर झुकाकर तीन बार ईश्वर की वन्दना की।

ओ हो! उस स्त्री के चरण कितने सुन्दर हैं जो सन्मार्ग पर चलती है! और हाँ उसके चरण सुन्दर, कितने कोमल और कितने गौरवशील हैं, और उसका मुख कितना कान्तिमय!

पापनाशी जब अपनी कुटी में सावधान होकर बैठा तो विचार करने लगा—

अन्त में मैं अपने आनन्द और शान्ति के उद्दिष्ट स्थान पर पहुँच गया। मैं अपने सन्तोष के सुरक्षित गढ में प्रविष्ट हो गया, लेकिन यह क्या बात है कि यह तिनकों का झोपड़ा जो मुझे इतना प्रिय है, मुझे मित्रभाव से नहीं देखता और दीवारें मुझसे हर्षित होकर नहीं कहतीं—'तेरा आना मुबारक हो !' मेरी अनुपस्थिति में यहाँ किसी प्रकार का अन्त होता हुआ नहीं देख पड़ता। झोपड़ा ज्यों-का त्यों है, यही पुरानी मेज और मेरी पुरानी खाट है। वह मसालों से भरा सिर है, जिसने कितनी ही बार मेरे मन में पवित्र विचारों की प्रेरणा की है, वह पुस्तक रखी हुई है जिसके द्वारा मैंने सैकड़ों बार ईश्वर का स्वरूप देखा है। तिस पर भी यह सभी चीजें न जाने क्यों मुझे अपरिचित सी जान पड़ती हैं इनका वह स्वरूप नहीं रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी स्वाभाविक शोभा का अपहरण हो गया है, मानों मुझ पर उनका स्नेह ही नहीं रहा और मैं पहली ही बार उन्हें देख रहा हूँ। जब मैं इस मेज और इस पलग पर, जो मैंने किसी समय अपने ही हाथों से बनाये थे, इस मसालों से सुखाई हुई खोपड़ी पर, इन भोज पत्र के पुलिन्दों पर जिन पर ईश्वर के पवित्र वाक्य अंकित हैं, निगाह डालता हूँ तो मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि यह सब किसी मृत प्राणी की वस्तुएँ हैं। इनसे इतना घनिष्ठ सम्बन्ध होने पर भी, इनसे रात-दिन का संग रहने पर भी मैं अब इन्हें पहचान नहीं सकता! आह! यह सब चीजें ज्यों की त्यों हैं, इनमें जरा भी परिवर्तन नहीं हुआ। अतएव मुझमें ही परिवर्तन हो गया है, मैं जो पहले था वह अब नहीं रहा। मैं कोई और ही प्राणी हूँ। मैं ही मृत आत्मा हूँ! हे भगवन्! यह क्या रहस्य है? मुझमें से कौन-सी वस्तु लुप्त हो गई है, मुझमें अब क्या शेष रह गया है? मैं कौन हूँ!

और सबसे बड़ी आशंका की बात यह थी कि मन को बार बार इस शंका की निर्मूलता का विश्वास दिलाने पर भी उसे ऐसा भासित होता था कि उसकी कुटी बहुत तंग हो गई है, यद्यपि धार्मिक भाव से उसे इस स्थान को अनन्त समझना चाहिए था, क्योंकि अनन्त का भाग ही होता है, क्योंकि यहीं बैठकर यह ईश्वर की अनन्तता में विलीन हो जाता था।

उसने इस शका के दमनार्थ धरती पर सिर रखकर ईश्वर की प्रार्थना की और इससे उसका चित्त कुछ शान्त हुआ। उसे प्रार्थना करते हुए एक घटा भी न हुआ होगा कि थायस की छाया उसकी आँखों के सामने से निकल गई। उसने ईश्वर को धन्यवाद देकर कहा—

प्रभु मसीह, तेरी ही कृपा से मुझे उसके दर्शन हुए। यह तेरी असीम दया और अनुग्रह है, इसे मैं स्वीकार करता हूँ। तू उस प्राणी को मेरे सम्मुख भेजकर, जिसे मैंने तेरी भेंट किया है, मुझे सन्तुष्ट, प्रसन्न और आश्वस्त करना चाहता है। तू उसे मेरी आँखों के सामने प्रस्तुत करता है, क्योंकि अब उसकी मुसकान निःशस्त्र, उसका सौन्दर्य निष्कलक और उसके हाव भाव दशहीन हो गये हैं। मेरे दयालु पतितपावन प्रभु, तू मुझे प्रसन्न करने के निमित्त उसे मेरे सम्मुख उसी शुद्ध और परिमार्जित स्वरूप में लाता है जो मैंने तेरी इच्छाओं के अनुकूल उसे दिया है, जैसे एक मित्र प्रसन्न होकर दूसरे मित्र को उसके दिये हुए सुन्दर उपहार की याद दिलाता है। इस कारण मैं इस स्त्री को देख कर आनन्दित होता हूँ, क्योकि तू ही इसका प्रेषक है। तू इस बात को नहीं भूलता कि मैंने उसे तेरे चरणों पर समर्पित किया है। उससे तुझे आनन्द प्राप्त होता है, इसलिए उसे अपनी सेवा में रख और अपने सिवाय किसी अन्य प्राणी को उसके सौन्दर्य से मुग्ध न होने दे।

उसे रात भर नींद नहीं आई, और थायस का उसने उससे भी स्पष्ट रूप से देखा जैसे परियों के कुज मे देखा था। उसने इन शब्दों में अपनी आत्मस्तुति की—

मैंने जो कुछ किया है, ईश्वर ही के निमित्त किया है।

लेकिन इस आश्वासन और प्रार्थना पर भी उसका हृदय विकल था। उसने आह भरकर कहा —

मेरी आत्मा, तू क्यों इतनी शाकासक्त है, और क्यों मुझे यह यातना दे रहा है ?

अब भी उसके चित्त की उद्विग्नता शान्त न हुई। तीन दिन तक वह ऐसे महान् शोक और दु ख की अवस्था मे पड़ा रहा जो एकान्तवासी में गियों की दुस्सह परीक्षाओं का पूर्व लक्षण है। थायस की सूरत आठों पहर उसकी

आँखों के आगे फिरा करती। वह इसे अपनी आँखों के सामने से हटाना भी न चाहता था, क्योंकि अब तक वह समझता था कि यह मेरे ऊपर ईश्वर की विशेष कृपा है और वास्तव मे यह एक योगिनी की मूर्ति है। लेकिन एक दिन प्रभात की सुषुप्तावस्था में उसने थायस को स्वप्न में देखा। उसके केशों पर पुष्पों का मुकुट विराज रहा था और उसका माधुर्य भयावह ज्ञात होता था, कि वह भीत होकर चीख उठा और जागा तो ठण्डे पसीने से तर था, मानों बर्फ के कुण्ड मे से निकला हो। उसकी आँखें भय की निद्रा से भारी हो रही थीं कि उसे अपने मुख पर गर्म-गर्म श्वासों के चलने का अनुभव हुआ। एक छोटा सा गीदड उसकी चारपाई की पट्टी पर दोनों अगले पैर रखे हाँप हाँपकर अपनी दुर्गन्धयुक्त साँसें उसके मुख पर छोड रहा था और उसे दाँत निकाल निकालकर दिखा रहा था।

पापनाशी को अत्यन्त विस्मय हुआ। उसे ऐसा जान पड़ा, मेरे पैरों के नीचे की जमीन धँस गई। और वास्तव मे वह पतित हो गया था। कुछ देर तक तो उसमें विचार करने की शक्ति ही न रही और जब वह फिर सचेत भी हुआ तो ध्यान और विचार से उसकी अशान्ति और भी बढ गई।

उसने सोचा—इन दो बातों में से एक बात है, या तो यह स्वप्न की भाँति ईश्वर का प्रेरित किया हुआ था और शुभ स्वप्न था, और यह मेरी स्वाभाविक दुर्बुद्धि है जिसने उसे यह भयकर रूप दे दिया है जैसे गन्दे प्याले में अगूर का रस खट्टा हो जाता है। मैंने अपने अज्ञानवश ईश्वरीय आदेश को ईश्वरीय तिरस्कार का रूप दे दिया और इस गीदड-रूपी शैतान ने मेरी शकान्वित दशा से लाभ उठाया, अथवा इस स्वप्न का प्रेरक ईश्वर नहीं, पिशाच था। ऐसी दशा में यह शका होती है कि पहले के स्वप्नों को देवकृत समझने में मेरी भ्रान्ति थी। साराश यह कि इस समय मुझमें वह धर्माधर्म का ज्ञान नहीं रहा जो तपस्वी के लिए परमावश्यक है और जिसके बिना उसके पग पग पर ठोकर खाने की आशका रहती है कि ईश्वर मेरे साथ नहीं रहा—जिसके कुफल मैं भोग रहा हूँ, यद्यपि उसके कारण नहीं निश्चित कर सकता।

इस भाँति तर्क करके उसने बड़ी ग्लानि के साथ जिज्ञासा की—दयालु

पिता ! तू अपने भक्त से क्या प्रायश्चित्त कराना चाहता है, यदि उसकी भावनाएँ ही उसकी आँखों पर परदा डाल दें, जब दुर्भावनाएँ ही उसे व्यथित करने लगें ! तू क्यों ऐसे लक्षणों का स्पष्टीकरण नहीं कर देता, जिसके द्वारा मुझे मालूम हो जाया करे कि तेरी इच्छा क्या है और क्या तेरे प्रतिपक्षी की ?

किन्तु अब ईश्वर ने, जिसकी माया अभेद्य है, अपने इस भक्त की इच्छा पूरी न की और उसे आत्मज्ञान न प्रदान किया, तो उसने शंका और भ्रान्ति के वशीभूत होकर निश्चय किया कि अब मैं थायस की ओर मन को जाने ही न दूँगा। लेकिन उसका यह प्रयत्न निष्फल हुआ। उससे दूर रहकर भी थायस नित्य उसके साथ रहती थी। जब वह कुछ पढता था, ईश्वर का ध्यान करता था, तो वह सामने बैठी उसकी ओर ताकती रहती, वह जिधर निगाह डालता, उसे उसी की मूर्ति दिखाई देती, यहाँ तक कि उपासना के समय भी वह उससे जुदा न होती। ज्यों ही वह पापनाशी के कल्पना क्षेत्र में पदार्पण करती, तो योगी के कानों में कुछ धीमी आवाज सुनाई देती, जैसी स्त्रियों के चलने के समय, उनके वस्त्रों से निकलती है, और इन छायाओं में यथार्थ से भी अधिक स्थिरता होती थी। स्मृति चित्र अस्थिर, आंशिक और अस्पष्ट होता है। इसके प्रतिकूल एकान्त में जो छाया उपस्थित होती है, वह स्थिर और सुदीर्घ होती है। वह नाना प्रकार के रूप बदलकर उसके सामने आती—कभी मलिनवदन, केशों में अपनी अन्तिम पुष्पमाला गूँधे, वही सुन्दर काम के वस्त्र धारण किये जो उसने इस्कन्द्रिया में 'कोटा' के प्रीति भोज के अवसर पर पहने थे, कभी महीन वस्त्र पहने, परियों के कुञ्ज में बैठी हुई, कभी मोटा कुरता पहने, विरक्त और आध्यात्मिक आनन्द से विकसित, कभी शोक में डूबी आँखें मृत्यु की भयकर आशकाओं से डबडबाई हुई, अपना आवरणहीन हृदयस्थल खोले, जिस पर आहत हृदय से रक्तधारा प्रवाहित होकर जम गई थी। इन छाया मूर्तियों में उसे जिस बात का सबसे अधिक खेद और विस्मय होता था वह यह थी कि वह पुष्पमालाएँ, वह सुन्दर वस्त्र, वह महीन चादरें, वह जरी के काम की कुर्तियाँ जो उसने जला डाली थीं, फिर कैसे लौट आई। उसे अब यह विदित होता था कि इन

वस्तुओं में भी कोई अविनाशी आत्मा है और उसने अन्तर्वेदना से विकल होकर कहा—

कैसी विपत्ति है कि थायस के असंख्य पापों की असंख्य आत्माएँ यों मुझ पर आक्रमण कर रही हैं।

जब उसने पीछे की ओर देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि थायस खड़ी है, और इससे उसकी अशान्ति और भी बढ़ गई। असह्य आत्मवेदना होने लगी। लेकिन चूँकि इन सब शंकाओं और दुष्कल्पनाओं में भी उसकी छाया और मन दोनों ही पवित्र थे, इसलिए उसे ईश्वर पर विश्वास था, अतएव वह इन करुण शब्दों में अनुनय विनय करता था—

भगवन्, तेरी मुझ पर यह अकृपा क्यों? यदि मैं उसकी खोज में विधर्मियों के बीच गया, तो तेरे लिए, अपने लिए नहीं। क्या यह अन्याय नहीं है कि मुझे उन कर्मों का दण्ड दिया जाय जो मैंने तेरा माहात्म्य बढ़ाने के निमित्त किये हैं? प्यारे मसीह, आप इस घोर अन्याय से मेरी रक्षा कीजिए। मेरे दाता, मुझे बचाइए। देह मुझ पर जो विजय प्राप्त न कर सकी, वह विजयकीर्ति उसकी छाया को न प्रदान कीजिए। मैं जानता हूँ कि मैं इस समय महासंकटों में पड़ा हुआ हूँ। मेरा जीवन इतना शंकामय कभी न था। मैं जानता हूँ और अनुभव करता हूँ कि स्वप्न में प्रत्यक्ष से अधिक शक्ति है और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि स्वप्न स्वयं आत्मिक वस्तु होने के कारण भौतिक वस्तुओं से उच्चतर है। स्वप्न वास्तव में वस्तुओं की आत्मा है। प्लेटो यद्यपि मूर्तिवादी था, तथापि उसने विचारों के अस्तित्व को स्वीकार किया है। नरपिशाचों के उस भोज में जहाँ तू मेरे साथ था, मैंने मनुष्यों को—वह पापमलिन अवश्य थे किन्तु कोई उन्हें विचार और बुद्धि से रहित नहीं कर सकता—इस बात पर सहमत होते सुना कि योगियों को एकान्त, ध्यान और परम आनन्द की अवस्था में प्रत्यक्ष वस्तुएँ दिखाई देती हैं। पर पिता, अपने पवित्र ग्रन्थ में कितनी ही बार स्वप्न के गुणों को और छाया मूर्तियों को चाहे वह तेरी ओर से हो या तेरे शत्रु की ओर से, स्पष्ट और कई स्थानों पर स्वीकार किया है। फिर यदि मैं भ्रान्ति में जा पड़ा तो मुझे क्यों इतना कष्ट दिया जा रहा है?

पहले पापनाशी ईश्वर से तर्क न करता था। वह निरापद भाव से उसके आदेशों का पालन करता था। पर अब उसमें एक नये भाव का विकास हुआ—उसने ईश्वर से प्रश्न और शंकाएँ करनी शुरू कीं, किन्तु ईश्वर ने उसे वह प्रकाश न दिखाया जिसका वह इच्छुक था। उसकी रातें एक दीर्घ स्वप्न होती थीं और उसके दिन भी इस विषय में रातों ही के सदृश होते थे। एक रात वह जागा तो उसके मुख से ऐसी पश्चात्ताप पूर्ण आहें निकल रही थीं, जैसी चाँदनी रात में पापाहत मनुष्यों की कब्रों से निकला करती हैं। थायस आ पहुँची थी और उसके जख्मी पैरों से खून बह रहा था। किन्तु पापनाशी रोने लगा कि वह धीरे से उसकी चारपाई पर लेट गई। अब कोई सन्देह न रहा, सारी शंकाएँ निवृत्त हो गई। थायस की छाया वासनायुक्त थी। उसके मन में घृणा की एक लहर उठी। वह अपनी अपवित्र शैया से झपटकर नीचे कूद पड़ा और अपना मुँह दोनों हाथों से छिपा लिया कि सूर्य का प्रकाश न पड़ने पाये। दिन की घड़ियाँ गुजरती जाती थीं, किन्तु उसकी लज्जा और ग्लानि शान्त न होती थी। कुटी में पूरी शान्ति थी। आज बहुत बहुत दिनों के पश्चात् प्रथम बार थायस को एकान्त मिला। आखिर में छाया ने भी उसका साथ छोड़ दिया और अब उसकी विलीनता भी भयकर प्रतीत होती थी। इस स्वप्न को विस्मृत करने के लिए, इस विचार से उसके मन को हटाने के लिए अब कोई अवलम्ब, कोई साधन, कोई सहारा नहीं था। उसने अपने को धिक्कारा—

मैंने क्यों उसे भगा न दिया! मैंने अपने को उसके घृणित आलिंगन और तापमय करों से क्यों न छुड़ा लिया? अब वह उस भ्रष्ट चारपाई के समीप ईश्वर का नाम लेने का भी साहस न कर सकता था, और उसे यह भय होता था कि कुटी के अपवित्र हो जाने के कारण पिशाचगण स्वेच्छानुसार अन्दर प्रविष्ट हो जायँगे, उनके रोकने का मेरे पास अब कौन सा मन्त्र रहा! और उसका भय निर्मूल न था। वह सातों गीदड़ जो कभी उसकी चौखट के भीतर न जा सके थे, अब कतार बाँधकर आये और भीतर आकर उसके पलंग के नीचे छिप गये। सन्ध्या प्रार्थना के समय एक और आठवाँ गीदड़ भी आया, जिसकी दुर्गन्ध असह्य थी। दूसरे दिन नवाँ गीदड़ भी

उनमें आ मिला और उनकी संख्या बढते-बढ़ते ३० से ६० और ६० से ८० तक पहुँच गई। जैसे जैसे उनकी संख्या बढती थी, उनका आकार छोटा होता जाता था, यहाँ तक कि वह चूहों के बराबर हो गये और सारी कुटी में फैल गये—पलग, मेज, तिपाई, फर्श, एक भी उनसे खाली न बचा। उनमें से एक मेज पर कूद गया और उसके तकिये पर चारों पैर रखकर पापनाशी के मुख की ओर जलती हुई आँखों से देखने लगा। नित्य नये नये गीदड़ आने लगे।

अपने स्वप्न के भीषण पाप का प्रायश्चित्त करने और भ्रष्ट विचारों से बचने के लिए पापनाशी ने निश्चय किया कि अपनी कुटी से निकल जाऊँ जो अब पाप का बसेरा बन गई है और मरुभूमि में दूर जाकर कठिन से कठिन तपस्याएँ करूँ, ऐसी ऐसी सिद्धियों में रत हो जाऊँ जो किसी ने सुनी भी न हों, परोपकार और उद्धार के पथ पर और भी उत्साह से चलूँ। लेकिन इस निश्चय को कार्यरूप में लाने से पहले, वह सन्त पालम के पास उससे परामर्श करने गया।

उसने पालम को अपने बगीचे में पौधों को सींचते हुए पाया। सन्ध्या हो गई थी। नील नदी की नीली धारा ऊँचे पर्वतों के दामन में बह रही थी। वह सात्विक हृदय वृद्ध साधु धीरे-धीरे चल रहा था कि कहीं वह कबूतर चौंककर उड़ न जाये जो उसके कन्धे पर आ बैठा था।

पापनाशी को देखकर उसने कहा—

भाई पापनाशी को नमस्कार करता हूँ। देखो, परम पिता कितना दयालु है, वह मेरे पास अपने रचे हुए पशुओं को भेजता है कि मैं उनके साथ उनका कीर्तिगान करूँ और हवा में उड़नेवाले पक्षियों को देखकर उनकी अनन्त लीला का आनन्द उठाऊँ। इस कबूतर को देखो, उसकी गर्दन के बदलते हुए रगों को देखो, क्या यह ईश्वर की सुन्दर रचना नहीं है? लेकिन तुम तो मेरे पास किसी धार्मिक विषय पर बातें करने आये हो न? यह लो, मैं अपना डोल रखे देता हूँ और तुम्हारी बातें सुनने को तैयार हूँ।

पापनाशी ने वृद्ध साधु से अपनी इस्कन्द्रिया की यात्रा, थायस के उद्धार, वहाँ से लौटने—दिनों की दूषित कल्पनाओं और रातों के दुःस्वप्नों का सारा

वृत्तान्त कह सुनाया—उस रात के पापस्वप्न और गीदड़ों के झुण्ड की बात भी न छिपाई और तब उससे पूछा—

पूज्य पिता, क्या आपका यह विचार नहीं है कि मुझे कहीं रेगिस्तान में शरण लेनी चाहिए और ऐसी ऐसी असाधारण योग-क्रियाएँ करनी चाहिएँ कि प्रेतराज भी चकित हो जायें!

पालम सन्त ने उत्तर दिया—

भाई पापनाशी, मैं क्षुद्र पापी पुरुष हूँ और अपना सारा जीवन बगीचे में हिरनों, कबूतरों और खरहों के साथ व्यतीत करने के कारण, मुझे मनुष्यों का बहुत कम ज्ञान है। लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारी दुश्चिन्ताओं का कारण कुछ और ही है। तुम इतने दिनों तक व्यावहारिक संसार में रहने के बाद यकायक निर्जन शान्ति में आ गये हो। ऐसे आकस्मिक परिवर्तनों से आत्मा का स्वास्थ्य बिगड़ जाय तो आश्चर्य की बात नहीं। बन्धुवर, तुम्हारी दशा उस प्राणी की सी है जो एक ही क्षण में अत्यधिक ताप से अत्यधिक शीत में आ पहुँचे। उसे तुरन्त खाँसी और ज्वर घेर लेते हैं। बन्धु, तुम्हारे लिए मेरी यह सलाह है कि किसी निर्जन मरुस्थान में जाने के बदले, मनबहलाव के ऐसे काम करो जो तपस्वियों और साधुओं के सर्वथा योग्य हैं। तुम्हारी जगह मैं होता तो समीपवर्ती धर्माश्रमों की सैर करता। इनमें से कई देखने के योग्य हैं, लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। सिरेपियन के मठ में एक हजार चार सौ बत्तीस कुटियाँ बनी हुई हैं, और तपस्वियों को उतने वर्गों में विभक्त किया गया है जितने अक्षर यूनानी लिपि में हैं। मुझसे लोगों ने यह भी कहा है कि इस वर्गीकरण में अक्षर, आकार और साधकों की मनोवृत्तियों में एक प्रकार की अनुरूपता का ध्यान रखा जाता है। उदाहरणत वह लोग जो Z वर्ग के अन्तर्गत रखे जाते हैं चचल प्रकृति के होते हैं, और जो लोग शान्तप्रकृति के हैं वह I के अन्तर्गत रखे जाते हैं। बन्धुवर, तुम्हारी जगह मैं होता तो अपनी आँखों से इस रहस्य को देखता और जब तक ऐसे अद्भुत स्थान की सैर न कर लेता, चैन न लेता। क्या तुम इसे अद्भुत नहीं समझते! किसी की मनोवृत्तियों का अनुमान कर लेना कितना कठिन है और जो लोग निम्न श्रेणी में रखा जाना स्वीकार कर लेते हैं, वह वास्तव

उनमें आ मिला और उनकी सख्या बढते बढते ३० से ६० और ६० से ८० तक पहुँच गई। जैसे-जैसे उनकी सख्या बढ़ती थी, उनका आकार छोटा होता जाता था, यहाँ तक कि वह चूहों के बराबर हो गये और सारी कुटी में फैल गये—पलग, मेज, तिपाई, फर्श, एक भी उनसे खाली न बचा। उनमें से एक मेज पर कूद गया और उसके तकिये पर चारों पैर रखकर पापनाशी के मुख की ओर जलती हुई आँखों से देखने लगा। नित्य नये नये गीदड़ आने लगे।

अपने स्वप्न के भीषण पाप का प्रायश्चित्त करने और भ्रष्ट विचारों से बचने के लिए पापनाशी ने निश्चय किया कि अपनी कुटी से निकल जाऊँ जो अब पाप का बसेरा बन गई है और मरुभूमि में दूर जाकर कठिन से कठिन तपस्याएँ करूँ, ऐसी ऐसी सिद्धियों में रत हो जाऊँ जो किसी ने सुनी भी न हों, परोपकार और उद्धार के पथ पर और भी उत्साह से चलूँ। लेकिन इस निश्चय को कार्यरूप में लाने से पहले, वह सन्त पालम के पास उससे परामर्श करने गया।

उसने पालम को अपने बगीचे में पौधों को सींचते हुए पाया। सन्ध्या हो गई थी। नील नदी की नीली धारा ऊँचे पर्वतों के दामन में बह रही थी। वह सात्विक हृदय वृद्ध साधु धीरे-धीरे चल रहा था कि कहीं वह कबूतर, चौंककर उड़ न जाये जो उसके कन्धे पर आ बैठा था।

पापनाशी को देखकर उसने कहा—

भाई पापनाशी को नमस्कार करता हूँ। देखो, परम पिता कितना दयालु है, वह मेरे पास अपने रचे हुए पशुओं को भेजता है कि मैं उनके साथ उनका कीर्तिगान करूँ और हवा में उड़नेवाले पक्षियों को देखकर उनकी अनन्त लीला का आनन्द उठाऊँ। इस कबूतर को देखो, उसकी गर्दन के बदलते हुए रगों को देखो, क्या यह ईश्वर की सुन्दर रचना नहीं है! लेकिन तुम तो मेरे पास किसी धार्मिक विषय पर बातें करने आये हो न! यह लो, मैं अपना डोल रखे देता हूँ और तुम्हारी बातें सुनने को तैयार हूँ।

पापनाशी ने वृद्ध साधु से अपनी इस्कन्द्रिया की यात्रा, थायस के उद्धार, वहाँ से लौटने—दिनों की दूषित कल्पनाओं और रातों के दु:स्वप्नों का सारा

वृत्तान्त वह सुनाया—उस रात के पापस्वप्न और गीदड़ों के झुण्ड की बात भी न छिपाई और तब उससे पूछा—

पूज्य पिता, क्या आपका यह विचार नहीं है कि मुझे कहीं रेगिस्तान में शरण लेनी चाहिए और ऐसी ऐसी असाधारण योग-क्रियाएँ करनी चाहिएँ कि प्रेतराज भी चकित हो जायें।

पालम सन्त ने उत्तर दिया—

भाई पापनाशी, मैं क्षुद्र पापी पुरुष हूँ और अपना सारा जीवन बगीचे में हिरनों, कबूतरों और खरहों के साथ व्यतीत करने के कारण, मुझे मनुष्यों का बहुत कम ज्ञान है। लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारी दुश्चिन्ताओं का कारण कुछ और ही है। तुम इतने दिनों तक व्यावहारिक संसार में रहने के बाद यकायक निर्जन शान्ति में आ गये हो। ऐसे आकस्मिक परिवर्तनों से आत्मा का स्वास्थ्य बिगड़ जाय तो आश्चर्य की बात नहीं। बन्धुवर, तुम्हारी दशा उस प्राणी की सी है जो एक ही क्षण में अत्यधिक ताप से अत्यधिक शीत में आ पहुँचे। उसे तुरन्त खाँसी और ज्वर घेर लेते हैं। बन्धु, तुम्हारे लिए मेरी यह सलाह है कि किसी निर्जन मरुस्थान में जाने के बदले, मनबहलाव के ऐसे काम करो जो तपस्वियों और साधुओं के सर्वथा योग्य हैं। तुम्हारी जगह मैं होता तो समीपवर्ती धर्माश्रमों की सैर करता। इनमें से कई देखने के योग्य हैं, लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। सिरैपियन के आश्रम में एक हजार चार सौ बत्तीस कुटियाँ बनी हुई हैं, और तपस्वियों को उतने दलों में विभक्त किया गया है जितने अक्षर यूनानी लिपि में हैं। मुझसे लोगों ने यह भी कहा है कि इस वर्गीकरण में अक्षर, आकार और साधकों की मनोवृत्तियों में एक प्रकार की अनुरूपता का ध्यान रखा जाता है। उदाहरणत. वह लोग जो Z वर्ग के अन्तर्गत रखे जाते हैं चंचल प्रकृति के होते हैं, और जो शान्तप्रकृति के हैं वह I के अन्तर्गत रखे जाते हैं। बन्धुवर, तुम्हारी जगह मैं होता तो अपनी आँखों से इस रहस्य को देखता और जब तक ऐसे अद्भुत स्थान की सैर न कर लेता, चैन न लेता। ... किसी की मनोवृत्तियों का अनुमान कर लेना ... है और ... कौन निम्न श्रेणी में रखा जाना स्वीकार कर लेगे ... कितना कठिन

वह रात और दिन अविश्रान्त चलता रहा। यहाँ तक कि वह उस मंदिर में जा पहुँचा, जो प्राचीन काल में मूर्तिपूजकों ने बनाई थी और जिसमें वह अपनी विचित्र पूर्वयात्रा में एक रात सोया था। अब इस मन्दिर का भग्नावशेष मात्र रह गया था और सर्प, बिच्छू, चमगादड़ आदि जन्तुओं के अतिरिक्त प्रेत भी इसमें अपना अड्डा बनाये हुए थे। दीवारें जिन पर जादू के चिह्न बने हुए थे, अभी तक खड़ी थीं। तीस वृहदाकार स्तम्भ जिनके शिखरों पर मनुष्य के सिर अथवा कमल के फूल बने हुए थे, अभी तक एक भारी चबूतरे को उठाये हुए थे। लेकिन मन्दिर के एक सिरे पर एक स्तम्भ इस चबूतरे के नीचे से सरक गया था और अब अकेला खड़ा था। इसका कलश एक स्त्री का मुसकराता हुआ मुख-मण्डल था। उसकी आँखें लम्बी थीं, कपोल भरे हुए, और मस्तक पर गाय की सींगें थीं।

पापनाशी इस स्तम्भ को देखते ही पहचान गया कि यह वह स्तम्भ है जिसे उसने स्वप्न में देखा था और उसने अनुमान किया कि इसकी ऊँचाई बत्तीस हाथों से कम न होगी। वह निकट गाँव में गया और उतनी ही ऊँची एक सीढी बनवाई और जब सीढी तैयार हो गई तो वह स्तम्भ से लगाकर खड़ी की गई। वह उस पर चढा और शिखर पर जाकर उसने भूमि पर मस्तक नवाकर यों प्रार्थना की—

भगवान्, यही वह स्थान है जो तूने मेरे लिये बताया है। मेरी परम इच्छा है कि मैं यहीं तेरी दया की छाया में जीवन-पर्यन्त रहूँ।

वह अपने साथ भोजन की सामग्रियाँ न लाया था। उसे भरोसा था कि ईश्वर मेरी सुध अवश्य लेगा और यह आशा थी कि गाँव के भक्तिपरायण जन मेरे खाने पीने का प्रबन्ध कर देंगे और ऐसा ही हुआ भी। दूसरे दिन तीसरे पहर स्त्रियाँ अपने बालकों के साथ रोटियाँ, छुहारे और ताजा पानी लिये हुए आईं, जिसे बालकों ने स्तम्भ के शिखर पर पहुँचा दिया।

स्तम्भ का कलश इतना चौड़ा न था कि पापनाशी उस पर पैर फैलाकर लेट सकता, इसी लिए वह पैरों को नीचे-ऊपर किये, सिर छाती पर रखकर सोता था और निद्रा जाग्रत रहने से भी अधिक कष्टदायक थी। प्रातःकाल

उकाब अपने परों से उसे स्पर्श करता था और वह निद्रा, भय तथा अंग-वेदना से पीड़ित उठ बैठता था।

संयोग से जिस बढ़ई ने यह सीढ़ी बनाई थी, वह ईश्वर का भक्त था। उसे यह देखकर चिन्ता हुई कि योगी को वर्षा और धूप से कष्ट हो रहा है और इस भय से कि कहीं निद्रा में वह नीचे न गिर पड़े, इस पुण्यात्मा पुरुष ने स्तम्भ के शिखर पर छत और कठघरा बना दिया।

थोड़े ही दिनों में उस असाधारण व्यक्ति की चर्चा गाँवों में फैलने लगी और रविवार के दिन श्रमजीवियों के दल के दल अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ उसके दर्शनार्थ आने लगे। पापनाशी के शिष्यों ने जब सुना कि गुरुजी ने इस विचित्र स्थान में शरण ली है तो वह चकित हुए और उसकी सेवा में उपस्थित होकर उससे स्तम्भ के नीचे अपनी कुटियाँ बनाने की आज्ञा प्राप्त की। नित्यप्रति प्रातःकाल वह आकर अपने स्वामी के चारों ओर खड़े हो जाते और उसके सदुपदेश सुनते थे।

वह उन्हें सिखाता था—

प्रिय पुत्रो, उन्हीं नन्हें बालकों के समान बने रहो जिन्हें प्रभु मसीह प्यार किया करते थे। यही मुक्ति का मार्ग है। वासना ही सब पापों का मूल है। वह वासना से उसी भाँति उत्पन्न होते हैं जैसे सन्तान पिता से। अहंकार, लोभ, आलस्य, क्रोध और ईर्ष्या उसकी प्रिय सन्तान हैं। मैंने इस्कन्द्रिया में यही कुटिल व्यवहार देखा। मैंने धन सम्पन्न पुरुषों को कुचेष्टाओं में प्रवाहित होते देखा जो उस नदी की बाढ़ की भाँति हैं जिसमें मैला जल भरा हो। वह उन्हें दुःख की खाड़ी में बहा ले जाता है।

एफरायम और सिरावियन के अधिष्ठाताओं ने उस अद्भुत तपस्या का समाचार सुना तो उसके दर्शनों से अपने नेत्रों को कृतार्थ करने की इच्छा प्रकट की। उनकी नौका के त्रिकोण पालों को दूर से नदी में आते देखकर पापनाशी के मन में अनिवार्यतः यह विचार उत्पन्न हुआ कि ईश्वर ने मुझे एकान्त सेवी योगियों के लिये आदर्श बना दिया है। दोनों महात्माओं ने जब उसे देखा तो उन्हें बड़ा कुतूहल हुआ और आपस में परामर्श

प्रलोभनों और दुरिच्छाओं के निवारण के लिए है जो सर्वत्र मुझे घेरे रहते हैं और जिनकी सख्या तथा शक्ति को देखकर मैं दहल उठता हूँ। मनुष्य का बाह्यरूप बहुत ही सूक्ष्म और स्वल्प होता है। इस ऊँचे शिखर पर से मैं मनुष्यों को चीटियों के समान जमीन पर रेंगते देखता हूँ। किन्तु मनुष्य को अन्दर से देखो तो वह अनन्त और अपार है। वह ससार के समाकार है क्योंकि ससार उसके अन्तर्गत है। मेरे सामने जो कुछ है—यह आश्रम, यह अतिथिशालाएँ, नदी पर तैरनेवाली नौकाएँ, यह ग्राम, खेत, वन-उपवन, नदियाँ, नहरें, पर्वत, मरुस्थल, वह उसकी तुलना नहीं कर सकते जो मुझमें है। मैं अपने अन्तस्तल में असख्य नगरों और सीमा शून्य पर्वतों को छिपाये हुए हूँ और इस विराट् अन्तस्तल पर इच्छाएँ उसी भाँति आच्छादित हैं जैसे निशा पृथ्वी पर आच्छादित हो जाती है। मैं, केवल मैं, अविचार का एक जगत् हूँ।

सातवें महीने में इस्कन्द्रियाँ से 'बुबेस्तीस' और 'सायम' नाम की दो वध्या स्त्रियाँ, इस लालसा में आईं कि महात्मा के आशीर्वाद और स्तम्भ के अलौकिक गुणों से उनको सतान होगी। अपनी ऊसर देह को पत्थर से रगड़ा। इन स्त्रियों के पीछे, जहाँ तक निगाह पहुँचती थी, रथों, पालकियों और डोलियों का एक जलूस चला आता था जो स्तम्भ के पास आकर रुक गया और इस देव-पुरुष के दर्शन के लिए धक्कम-धक्का करने लगा। इन सवारियों में से ऐसे रोगी निकले जिनको देखकर हृदय काँप उठता था। माताएँ ऐसे बालकों को लाई थीं जिनके अग टेढे हो गये थे, आँखें निकल आई थीं और गले बैठ गये थे। पापनाशी ने उनकी देह पर अपना हाथ रखा। तब अन्धे, हाथों से टटोलते, पापनाशी की ओर दो रक्तमय छिद्रों से ताकते हुए आये। पक्षाघात पीड़ित प्राणियों ने अपने गतिशून्य सूखे तथा सकुचित अगों को पापनाशी के सम्मुख उपस्थित किया। लँगड़ों ने अपनी टाँगें दिखाईं। कर्कुट के रोगवाली स्त्रियाँ दोनों हाथों से अपनी छाती को दबाये हुए आईं और उसके सामने अपने जर्जर वक्ष खोल दिये। जलोदर के रोगी, शराब के पीपों की भाँति फूले हुए, उसके सम्मुख भूमि पर लेटाये गये। पापनाशी ने इन समस्त रोगी प्राणियों को आशीर्वाद दिया। पोलनाँव से

पीड़ित हब्शी सँभल सँभलकर चलते हुए आये और उसकी ओर करुण नेत्रों से ताकने लगे। उसने उनके ऊपर सलीब का चिह्न बना दिया। एक युवती बड़ी दूर से डोली में लाई गई थी। रक्त उगलने के बाद तीन दिन से उसने आँखें न खोली थीं। वह एक मोम की मूर्ति की भाँति दीखती थी और उसके माता-पिता ने उसे मुर्दा समझकर उसकी छाती पर खजूर की एक पत्ती रख दी थी। पापनाशी ने ज्यों ही ईश्वर की प्रार्थना की, युवती ने सिर उठाया और आँखें खोल दीं।

यात्रियों ने अपने घर लौटकर इन सिद्धियों की चर्चा की तो मिरगी के रोगी भी दौड़े। मिस्र के सभी प्रान्तों से अगणित रोगी आकर जमा हो गये। ज्यों ही उन्होंने यह स्तम्भ देखा तो मूर्छित हो गये, जमीन पर लोटने लगे और उनके हाथ पैर अकड़ गये। यद्यपि यह किसी को विश्वास न आयेगा, किन्तु वहाँ जितने आदमी मौजूद थे, सबके सब बौखला उठे और रोगियों की भाँति कुलाचें खाने लगे। पण्डित और पुजारी, स्त्री और पुरुष सबके-सब तले-ऊपर लोटने पोटने लगे। सबों के अंग अकड़े हुए थे, मुँह से फिचकुर बहता था, मिट्टी से मुट्ठियाँ भर भरकर फाँकते और अनर्गल शब्द मुँह से निकालते थे।

पापनाशी ने शिखर पर से यह कुतूहल जनक दृश्य देखा तो उसके समस्त शरीर में एक विप्लव सा होने लगा। उसने ईश्वर से प्रार्थना की—

भगवन्, मैं ही छोड़ा हुआ बकरा हूँ, और मैं अपने ऊपर इन सारे प्राणियों के पापों का भार लेता हूँ और यही कारण है कि मेरा शरीर प्रेतों और पिशाचों से भरा हुआ है।

जब कोई रोगी चंगा होकर जाता था तो लोग उसका स्वागत करते थे, उसका जलूस निकालते थे, बाजे बजाते, फूल उड़ाते उसे उसके घर तक पहुँचाते थे और लाखों कंठों से यह ध्वनि निकलती थी—

'हमारे प्रभु मसीह फिर अवतरित हुए!'

बैसाखियों के सहारे चलनेवाले दुर्बल रोगी जब आरोग्य लाभ कर लेते [अ]पनी बैसाखियाँ इसी स्तम्भ में लटका देते थे। हजारों बैसाखियाँ [ल]टकी हुई दिखाई देती थीं और प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ती ही जाती [थी।] मुराद पानेवाली स्त्रियाँ फूल की माला लटका देती थीं। कितने

प्रलोभनों और दुरिच्छाओं के निवारण के लिए है जो सर्वत्र मुझे घेरे रहते हैं और जिनकी संख्या तथा शक्ति को देखकर मैं दहल उठता हूँ। मनुष्य का वाह्यरूप बहुत ही सूक्ष्म और स्वल्प होता है। इस ऊँचे शिखर पर से मैं मनुष्यों को चींटियों के समान जमीन पर रेंगते देखता हूँ। किन्तु मनुष्य को अन्दर से देखो तो वह अनन्त और अपार है। वह संसार के समाकार है क्योंकि संसार उसके अन्तर्गत है। मेरे सामने जो कुछ है—यह आश्रम, यह अतिथिशालाएँ, नदी पर तैरनेवाली नौकाएँ, यह ग्राम, खेत, वन-उपवन, नदियाँ, नहरें, पर्वत, मरुस्थल, वह उसकी तुलना नहीं कर सकते जो मुझमें है। मैं अपने अन्तस्तल में असंख्य नगरों और सीमा-शून्य पर्वतों को छिपाये हुए हूँ और इस विराट् अन्तस्तल पर इच्छाएँ उसी भाँति आच्छादित हैं जैसे निशा पृथ्वी पर आच्छादित हो जाती है। मैं, केवल मैं, अविचार का एक जगत् हूँ।

सातवें महीने में इस्कन्द्रियाँ से 'बुनेस्तीस' और 'सायम' नाम की दो बन्ध्या स्त्रियाँ, इस लालसा में आई कि महात्मा के आशीर्वाद और स्तम्भ के अलौकिक गुणों से उनको संतान होगी। अपनी ऊसर देह को पत्थर से रगड़ा। इन स्त्रियों के पीछे, जहाँ तक निगाह पहुँचती थी, रथों, पालकियों और डोलियों का एक जलूस चला आता था जो स्तम्भ के पास आकर रुक गया और इस देव-पुरुष के दर्शन के लिए धक्कम-धक्का करने लगा। इन सवारियों में से ऐसे रोगी निकले जिनको देखकर हृदय काँप उठता था माताएँ ऐसे बालकों को लाई थीं जिनके अंग टेढे हो गये थे, आँखें निकल आई थीं और गले बैठ गये थे। पापनाशी ने उनकी देह पर अपना हाथ रखा। तब अन्धे, हाथों से टटोलते, पापनाशी की ओर दो रक्तमय छिद्रों से ताकते हुए आये। पक्षाघात पीड़ित प्राणियों ने अपने गतिशून्य सूखे तथा सङ्कुचित अंगों को पापनाशी के सम्मुख उपस्थित किया। लँगड़ों ने अपनी टाँगें दिखाई। बछुई के रोगवाली स्त्रियाँ दोनों हाथों से अपनी छाती को दबाये हुए आईं और उसके सामने अपने जर्जर वक्ष खोल दिये। जलोदर के रोगी, शराब के पीपों की भाँति फूले हुए, उसके सम्मुख भूमि पर लेटाये गये। पापनाशी ने इन समस्त रोगी प्राणियों को आशीर्वाद दिया। पीलपाँव से

पीड़ित हब्शी सँभल सँभलकर चलते हुए आये और उसकी ओर करुण नेत्रों से ताकने लगे। उसने उनके ऊपर सलीब का चिह्न बना दिया। एक युवती बड़ी दूर से डोली में लाई गई थी। रक्त उगलने के बाद तीन दिन से उसने आँखें न खोली थीं। वह एक मोम की मूर्ति की भाँति दीखती थी और उसके माता पिता ने उसे मुर्दा समझकर उसकी छाती पर खजूर की एक पत्ती रख दी थी। पापनाशी ने ज्यों ही ईश्वर की प्रार्थना की, युवती ने सिर उठाया और आँखें खोल दीं।

यात्रियों ने अपने घर लौटकर इन सिद्धियों की चर्चा की तो मिरगी के रोगी भी दौड़े। मिस्र के सभी प्रान्तों से अगणित रोगी आकर जमा हो गये। ज्यों ही उन्होंने यह स्तम्भ देखा तो मूर्छित हो गये, जमीन पर लोटने लगे और उनके हाथ पैर अकड़ गये। यद्यपि यह किसी को विश्वास न आयेगा, किन्तु वहाँ जितने आदमी मौजूद थे, सबके-सब बौखला उठे और रोगियों की भाँति कुलाचें खाने लगे। पण्डित और पुजारी, स्त्री और पुरुष सबके सब तले ऊपर लोटने पोटने लगे। सबों के अंग अकड़े हुए थे, मुँह से फिचकुर बहता था, मिट्टी से मुट्ठियाँ भर भरकर फाँकते और अनर्गल शब्द मुँह से निकालते थे।

पापनाशी ने शिखर पर से यह कुतूहल-जनक दृश्य देखा तो उसके समस्त शरीर में एक विप्लव सा होने लगा। उसने ईश्वर से प्रार्थना की—

भगवन्, मैं ही छोड़ा हुआ बकरा हूँ, और मैं अपने ऊपर इन सारे प्राणियों के पापों का भार लेता हूँ और यही कारण है कि मेरा शरीर प्रेतों और पिशाचों से भरा हुआ है।

जब कोई रोगी चंगा होकर जाता था तो लोग उसका स्वागत करते थे, उसका जलूस निकालते थे, बाजे बजाते, फूल उड़ाते उसे उसके घर तक पहुँचाते थे और लाखों कंठों से यह ध्वनि निकलती थी—

'हमारे प्रभु मसीह फिर अवतरित हुए!'

बैसाखियों के सहारे चलनेवाले दुर्बल रोगी जब आरोग्य लाभ कर लेते थे तो अपनी बैसाखियाँ इसी स्तम्भ में लटका देते थे। हजारों बैसाखियाँ लटकती हुई दिखाई देती थीं और प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ती ही जाती थी। अपनी मुराद पानेवाली स्त्रियाँ फूल की माला लटका देती थीं। कितने

अकेला, स्थिर, अटल स्तम्भ खड़ा था। उसका गोरूपी कलश प्रकाश की छाया में मुँह फैलाये दिखाई देता था और उसके ऊपर पृथ्वी आकाश के मध्य में पापनाशी अकेला बैठा हुआ यह दृश्य देख रहा था। इतने में चाँद ने नील के अचल में से सिर निकाला, पहाड़ियाँ नीले प्रकाश से चमक उठीं और पापनाशी को ऐसा भाषित हुआ मानों थायस की सजीव मूर्ति नाचते हुए जल के प्रकाश में चमकती, नीले गगन में निरालम्ब खड़ी है।

दिन गुजरते जाते थे और पापनाशी ज्यों का त्यों स्तम्भ पर आसन जमाये हुए था। वर्षाकाल आया तो आकाश का जल लकड़ी की छत से टपक-टपककर उसे भिगोने लगा। इससे सरदी खाकर उसके हाथ-पाँव अकड़ उठे, हिलना डोलना मुश्किल हो गया। उधर दिन को धूप की जलन और रात को ओस की शीत खाते-खाते उसके शरीर की खाल फटने लगी और समस्त देह में घाव, छाले और गिल्टियाँ पड़ गई। लेकिन थायस की इच्छा अब भी उसके अत करण में व्याप्त थी, और वह अतर्वेदना से पीड़ित होकर चिल्ला उठता था—

'भगवान! मेरी और भी साँसत कीजिए, और भी यातनाएँ दीजिए। इतना काफी नहीं है। अब भी इच्छाओं से गला नहीं छूटा, भ्रष्ट कल्पनाएँ अभी पीछे पड़ी हुई हैं, विनाशक वासनाएँ अभी तक मन का मथन कर रही हैं। भगवान, मुझ पर प्राणीमात्र की विषय वासनाओं का भार रख दीजिए, मैं उन सबों का प्रायश्चित्त करूँगा। यद्यपि यह असत्य है कि एक यूनानी कुतिये ने समस्त ससार का पाप भार अपने ऊपर लिया था, जैसा मैंने किसी समय एक मिथ्यावादी मनुष्य को कहते सुना था, लेकिन उस कथा में कुछ आशय अवश्य छिपा हुआ है जिसकी सचाई अब मेरी समझ में आ रही है, क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जनता के पाप धर्मात्माओं की आत्माओं में प्रविष्ट होते हैं और वह इस भाँति विलीन हो जाते हैं, मानों कुएँ में गिर पड़े हो। यही कारण है कि पुण्यात्माओं के मन में जितना मल भरा रहता है, उतना पापियों के मन में कदापि नहीं रहता। इसलिए भगवान, मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ कि तूने मुझे ससार का मल-कुण्ड बना दिया है।'

एक दिन उस पवित्र नगर में यह खबर उड़ी, और पापनाशी के कानों

में भी पहुँची कि एक उच्च राज्यपदाधिकारी, जो इस्कन्द्रिया की जल-सेना का अध्यक्ष था, शीघ्र ही उस शहर की सैर करने आ रहा है—नहीं, बल्कि रवाना हो चुका है।

यह समाचार सत्य था। वयोवृद्ध कोटा, जो उस साल नील सागर की नदियों और जलमार्गों का निरीक्षण कर रहा था, कई बार इस महात्मा और इस नगर को देखने की इच्छा प्रकट कर चुका था। इस नगर का नाम पापनाशी ही के नाम पर 'पापमोचन' रखा गया था। एक दिन प्रभातकाल इस पवित्र भूमि के निवासियों ने देखा कि नील नदी श्वेत पालों से आच्छन्न हो गई है। कोटा एक सुनहरी नौका पर जिस पर बैंगन रंग के पाल लगे हुए थे, अपनी समस्त नाविक शक्ति के आगे आगे निशान उड़ाता चला आता है। घाट पर पहुँचकर वह उतर पड़ा और अपने मन्त्री तथा अपने वैद्य अरिस्टीयस के साथ नगर की तरफ चला। मन्त्री के हाथ में नदी के मानचित्र आदि थे। और वैद्य से कोटा स्वयं बातें कर रहा था। वृद्धावस्था में उसे वैद्यराज की बातों में आनन्द मिलता था।

कोटा के पीछे सहस्रों मनुष्यों का जुलूस चला और जलतट पर सैनिकों की वर्दियाँ और राज्य कर्मचारियों के चुगे ही चुगे दिखाई देने लगे। इन चुगों में चौड़ी, बैंगनी रंग की गाँठ लगी थी, जो रोम की व्यवस्थापक सभा के सदस्यों का सम्मान चिह्न थी। कोटा उस पवित्र स्तम्भ के समीप रुक गया और महात्मा पापनाशी को ध्यान से देखने लगा। गरमी के कारण अपने चुगे के दामन से मुँह पर का पसीना वह पोंछता था। वह स्वभाव से विचित्र अनुभवों का प्रेमी था, और अपनी जल-यात्राओं में उसने कितनी ही अद्भुत बातें देखी थीं। वह उन्हें स्मरण रखना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि अपना वर्तमान इतिहास ग्रन्थ समाप्त करने के बाद अपनी समस्त यात्राओं का वृत्तान्त लिखे और जो जो अनोखी बातें देखी हैं उनका उल्लेख करे। यह दृश्य देखकर उसे बहुत दिलचस्पी हुई।

उसने खाँसकर कहा—विचित्र बात है! और यह पुरुष मेरा मेहमान था! मैं अपने यात्रा वृत्तान्त में यह अवश्य लिखूँगा। हाँ, गतवर्ष इस

पुरुष ने मेरे यहाँ दावत खाई थी और उसके एक ही दिन बाद एक वेश्या को लेकर भाग गया था।

फिर अपने मन्त्री से बोला—

पुत्र, मेरे पत्रों पर इसका उल्लेख कर दो। इस स्तम्भ की लम्बाई-चौड़ाई भी दर्ज कर देना। देखना, शिखर पर जो गाय की मूर्ति बनी हुई है उसे न भूलना।

तब फिर अपना मुँह पोंछकर बोला—

मुझसे विश्वस्त प्राणियों ने कहा है कि इस योगी ने साल भर से एक क्षण के लिए भी नीचे कदम नहीं रखा। क्यों अरिस्टीयस, यह सम्भव है! कोई पुरुष पूरे साल भर तक आकाश में लटका रह सकता है!

अरिस्टीयस ने उत्तर दिया—

किसी अस्वस्थ या उन्मत्त प्राणी के लिए जो बात सम्भव है, वह स्वस्थ प्राणी के लिए, जिसे कोई शारीरिक या मानसिक विकार न हो, असम्भव है। आपको शायद यह बात न मालूम होगी कि कतिपय शारीरिक और मानसिक विकारों से इतनी अद्भुत शक्ति आ जाती है जो तन्दुरुस्त आदमियों में कभी नहीं आ सकती। क्योंकि यथार्थ में अच्छा स्वास्थ्य या बुरा स्वास्थ्य स्वयं कोई वस्तु नहीं है। वह शरीर के अंग-प्रत्यंग की भिन्न-भिन्न दशाओं का नाममात्र है। रोगों के निदान से मैंने यह बात सिद्ध की है कि वह भी जीवन की आवश्यक अवस्थाएँ हैं। मैं बड़े प्रेम से उनकी मीमांसा करता हूँ इसलिए कि उनपर विजय प्राप्त कर सकूँ। उनमें से कई बीमारियाँ प्रशंसनीय हैं और उनमें बहिर्विकार के रूप में अद्भुत आरोग्य-वर्द्धक शक्ति छिपी रहती है। उदाहरणतः कभी कभी शारीरिक विकारों से बुद्धि-शक्तियाँ प्रखर हो जाती हैं, बड़े वेग से उनका विकास होने लगता है। आप सीरोन को तो जानते हैं। जब वह बालक था तो वह तुतलाकर बोलता था और मन्दबुद्धि था। लेकिन जब एक सीढ़ी पर से गिर जाने के कारण उसकी कपालक्रिया हो गई तो वह उच्च श्रेणी का वकील निकला, जैसा आप स्वयं देख रहे हैं। इस योगी का कोई गुप्त अंग अवश्य ही विकृत हो गया है। इसके अतिरिक्त इस अवस्था में जीवन व्यतीत करना इतनी असाधारण बात नहीं है जितनी आप समझ

रहे हैं। आपको भारतवर्ष के योगियों की याद है? वहाँ के योगीगण इस भाँति बहुत दिनों तक निश्चल रह सकते हैं—एक दो वर्ष नहीं, बल्कि २०, ३०, ४० वर्षों तक। कभी कभी इससे भी अधिक। यहाँ तक कि मैंने तो सुना है कि वह निर्जल, निराहार सौ सौ वर्षों तक समाधिस्थ रहते हैं।

'' कोटा ने कहा—ईश्वर की सौगन्ध से कहता हूँ, मुझे यह दशा अत्यन्त कुतूहलजनक मालूम हो रही है। यह निराले प्रकार का पागलपन है। मैं इसकी प्रशंसा नहीं कर सकता, क्योंकि मनुष्य का जन्म चलने और काम करने के निमित्त हुआ है। और उद्योगहीनता साम्राज्य के प्रति असभ्य अत्याचार है। मुझे ऐसे किसी धर्म का ज्ञान नहीं है जो ऐसी आपत्तिजनक क्रियाओं का आदेश करता हो। सम्भव है एशियाई सम्प्रदायों में इसकी व्यवस्था हो। जब मैं शाम (सीरिया) का सूबेदार था तो मैंने 'हेरा' नगर के द्वार पर ऊँचा चबूतरा बना हुआ देखा। एक आदमी साल में दो बार उस पर चढ़ता था और वहाँ सात दिनों तक चुपचाप बैठा रहता था। लोगों को विश्वास था कि यह प्राणी देवताओं से बातें करता था और शाम देश को धन धान्यपूर्ण रखने लिए उनसे विनय करता था। मुझे यह प्रथा निरर्थक सी जान पड़ी, किन्तु मैंने उसे उठाने की चेष्टा नहीं की। क्योंकि मेरा विचार है कि राज्य-कर्मचारियों को प्रजा के रीति रिवाजों में हस्तक्षेप न करना चाहिए, बल्कि इनको मर्यादित रखना उसका कर्तव्य है। शासकों की यह नीति कदापि न होनी चाहिए कि वह प्रजा को किसी विशेष मत की ओर खींचे, बल्कि उनको उसी मत की रक्षा करनी चाहिए जो प्रचलित हो, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, क्योंकि देश, काल और जाति की परिस्थिति के अनुसार ही उसका जन्म और विकास हुआ है। अगर शासन किसी मत को दमन करने की चेष्टा करता है, तो वह अपने को विचारों में क्रान्तिकारी और व्यवहारों में अत्याचारी सिद्ध करता है, और प्रजा उससे घृणा करे तो सर्वथा क्षम्य है। फिर आप जनता के मिथ्या विचारों का सुधार क्योंकर कर सकते हैं। अगर आप उनको समझने और उन्हें निरपेक्ष भाव से देखने में असमर्थ हैं? अरिस्टीयस, मेरा विचार है कि इस पक्षियों के बनाये हुए मेघनगर को आकाश में लटका रहने दूँ। उस पर नैसर्गिक शक्तियों का कोप ही क्या कम है कि

मैं भी उसके उजाड़ने में अग्रसर बनूँ। उसके उजाड़ने से मुझे अपयश के सिवा और कुछ हाथ न लगेगा। हाँ, इस आकाश-निवासी योगी के विचारों और विश्वासों को लेखबद्ध करना चाहिए।

यह कहकर उसने फिर खाँसा और अपने मन्त्री के कन्धे पर हाथ रख-कर बोला—

पुत्र, नोट कर लो कि ईसाई सम्प्रदाय के कुछ अनुयायियों के मतानुसार स्तम्भों के शिखर पर रहना और वेश्याओं को ले भागना सराहनीय कार्य है। इतना और बढ़ा दो कि यह प्रथाएँ सृष्टि करनेवाले देवताओं की उपासना के प्रमाण हैं। ईसाई धर्म ईश्वरवादी होकर देवताओं के प्रभाव को अभी तक नहीं मिटा सका। लेकिन इस विषय में हमें स्वयं इस योगी ही से जिज्ञासा करनी चाहिए।

तब सिर उठाकर और धूप से आँखों को बचाने के लिए हाथों का आड़ करके उसने उच्च स्वर में कहा—

इधर देखो पापनाशी! अगर तुम अभी यह नहीं भूले हो कि तुम एक बार मेरे मेहमान रह चुके हो तो मेरी बातों का उत्तर दो। तुम वहाँ आकाश पर बैठे क्या कर रहे हो? तुम्हारे वहाँ जाने का और रहने का क्या उद्देश्य है? क्या तुम्हारा विचार है कि इस स्तम्भ पर चढ़कर तुम देश का कुछ कल्याण कर सकते हो?

पापनाशी ने कोटा को केवल प्रतिमावादी समझकर तुच्छ दृष्टि से देखा और उसे कुछ उत्तर देने योग्य न समझा। लेकिन उसका शिष्य फ्लेवियन समीप आकर बोला—

मान्यवर, यह ऋषि समस्त भूमण्डल के पापों को अपने ऊपर लेता और रोगियों को आरोग्य प्रदान करता है।

कोटा—कसम खुदा की, यह तो बड़ी दिल्लगी की बात है। सुनते हो अरिस्टीयस, यह आकाशवासी महात्मा चिकित्सा करता है। यह तो तुम्हारा प्रतिवादी निकला। तुम ऐसे आकाशारोही वैद्य से क्योंकर पेश पा सकोगे?

अरिस्टीयस ने सिर हिलाकर कहा—

यह बहुत सम्भव है कि यह बाजे बाजे रोगों की चिकित्सा करने में मुझ

कुशल हो, उदाहरणतः मिरगी ही को ले लीजिए। गँवारी बोलचाल में लोग इसे 'देवरोग' कहते हैं, यद्यपि सभी रोग दैवी हैं, क्योंकि उनके सृजन करनेवाले तो देवगण ही हैं। लेकिन इस विशेष रोग का कारण अशत कल्पना-शक्ति में है और आप यह स्वीकार करेंगे कि यह योगी इतनी ऊँचाई पर और एक देवी के मस्तक पर बैठा हुआ, रोगियों की कल्पना पर जितना प्रभाव डाल सकता है, उतना मैं अपने चिकित्सालय में सरल और दस्ते से औषधियाँ घोटकर कदापि नहीं डाल सकता। महाशय, कितनी ही गुप्त शक्तियाँ हैं जो शास्त्र और बुद्धि से कहीं बढ़कर प्रभावोत्पादक हैं।

कोटा—वह कौन शक्तियाँ हैं?

अरिस्टीयस—मूर्खता और अज्ञान।

कोटा—मैंने अपनी बड़ी बड़ी यात्राओं में भी इससे विचित्र दृश्य नहीं देखा, और मुझे आशा है कि कभी कोई सुयोग्य इतिहास-लेखक 'मोचननगर' की उत्पत्ति का सविस्तार वर्णन करेगा। लेकिन हम जैसे बहुधन्धी मनुष्यों को किसी वस्तु के देखने में चाहे वह कितना ही कुतूहलजनक क्यों न हो, अपना बहुत समय न गँवाना चाहिए। चलिए, अब नहरों का निरीक्षण करें। अच्छा पापनाशी, नमस्कार। फिर कभी आऊँगा लेकिन अगर तुम फिर कभी पृथ्वी पर उतरो और इस्कन्द्रिया आने का संयोग हो तो मुझे न भूलना। मेरे द्वार तेरे स्वागत के लिए नित्य खुले हैं। मेरे यहाँ आकर अवश्य भोजन करना।

हजारों मनुष्यों ने कोटा के यह शब्द सुने। एक ने दूसरे से कहा। ईसाइयों ने और भी नमक मिर्च लगाया। जनता किसी की प्रशंसा बड़े अधिकारियों के मुँह से सुनती है तो उसकी दृष्टि में उस प्रशंसित मनुष्य का आदर सम्मान शतगुण अधिक हो जाता है। पापनाशी की और भी ख्याति होने लगी। सरल हृदय मतानुरागियों ने इन शब्दों को और भी परिमार्जित और अतिशयोक्तिपूर्ण रूप दे दिया। किंवदन्तियाँ होने लगीं कि महात्मा पापनाशी ने स्तम्भ के शिखर पर बैठे बैठे, जलसेना के अध्यक्ष को ईसाई धर्म का अनुगामी बना लिया। उनके उपदेशों में यह चमत्कार है कि सुनते ही बड़े-बड़े नास्तिक भी मस्तक झुका देते हैं। कोटा के अन्तिम शब्दों में भक्तों को गुप्त आशय छिपा हुआ प्रतीत हुआ। जिस स्वागत को उस उच्च

अधिकारी ने सूचना दी थी वह साधारण स्वागत नहीं था। वह वास्तव में एक आध्यात्मिक भोज, एक स्वर्गीय सम्मेलन, एक पारलौकिक संयोग का निमन्त्रण था। उस सम्भाषण की कथा का बड़ा अद्भुत और अलङ्कृत विस्तार किया गया। और जिन जिन महानुभावों ने यह रचना की उन्होंने स्वयं पहले उस पर विश्वास किया। कहा जाता था कि जब कोटा ने विपद तर्क वितर्क के पश्चात् सत्य को अंगीकार किया और प्रभु मसीह की शरण में आया तो एक स्वर्ग दूत आकाश से उसके मुँह का पसीना पोंछने आया। यह भी कहा जाता था कि कोटा के साथ उसके वैद्य और मन्त्री ने भी ईसाई धर्म स्वीकार किया। मुख्य ईसाई संस्थाओं के अधिष्ठाताओं ने यह अलौकिक समाचार सुना तो ऐतिहासिक घटनाओं में उसका उल्लेख किया। इतने ख्यातिलाभ के बाद यह कहना किंचित् मात्र भी अतिशयोक्ति न थी कि सारा संसार पापनाशी के दर्शनों के लिए उत्कंठित हो गया। प्राच्य और पाश्चात्य दोनों ही देशों के ईसाइयों की विस्मित आँखें उनकी ओर उठने लगीं। इटली के प्रधान नगरों ने उसके नाम अभिनन्दन-पत्र भेजे और रोम के कैसर कान्स्टेनटाइन ने जो ईसाई धर्म का पक्षपाती था, उसके पास एक पत्र भेजा। ईसाई दूत इस पत्र को बड़े आदर-सम्मान के साथ पापनाशी के पास लाये। लेकिन एक रात को जब यह नवजात नगर हिम की चादर ओढ़े सो रहा था, पापनाशी के कानों में यह शब्द सुनाई दिये—

'पापनाशी, तू अपने कर्मों से प्रसिद्ध, और अपने शब्दों से शक्तिशाली हो गया है। ईश्वर ने अपनी कीर्ति को उज्ज्वल करने के लिए तुझे इस सर्वोच्च पद पर पहुँचाया है। उसने तुझे अलौकिक लीलाएँ दिखाने, रोगियों को आरोग्य प्रदान करने, नास्तिकों को सन्मार्ग पर लाने, पापियों का उद्धार करने, एरियन के मतानुयायियों के मुख में कालिमा लगाने और ईसाई जगत में शान्ति और सुख का साम्राज्य स्थापित करने के लिए नियुक्त किया है।'

पापनाशी ने उत्तर दिया—ईश्वर की जैसी आज्ञा!

फिर आवाज आई—

'पापनाशी, उठ जा, और विधर्मी कान्सटेन्स को उसके राज्य प्रासाद में सन्मार्ग पर ला, जो अपने पूज्य बन्धु कान्सटेनटाइन का अनुकरण न करके

एरियस और मार्कस के मिथ्यावाद में फँसा हुआ है। जा, विलम्ब न कर। अष्टधातु के फाटक तेरे पहुँचते ही आप ही आप खुल जायेंगे, और तेरी पादुकाओं की ध्वनि, कैसरों के सिंहासन के सम्मुख, सजे भवन की स्वर्णभूमि पर प्रतिध्वनित होगी और तेरी प्रतिभामय वाणी कान्सटेनटाइन के पुत्र के हृदय को परास्त कर देगी। संयुक्त और अखण्ड ईसाई साम्राज्य पर राज्य करेगा। और जिस प्रकार जीव देह पर शासन करता है, उसी प्रकार ईसाई धर्म साम्राज्य पर शासन करेगा। धनी, रईस, राज्याधिकारी, राज्यसभा के सभासद् सभी तेरे अधीन हो जायेंगे। तू जनता को लोभ से मुक्त करेगा और असभ्य जातियों के आक्रमणों का निवारण करेगा। वृद्ध कोटा जो इस समय नौका विभाग का प्रधान है, तुझे शासन का कर्णधार बना हुआ देख कर तेरे चरण धोयेगा। तेरे शरीरान्त होने पर तेरी मृतदेह इस्कन्द्रिया जायेगी और वहाँ का प्रधान मठधारी उसे एक ऋषि का स्मारक-चिह्न समझकर उसका चुम्बन करेगा। जा!'

पापनाशी ने उत्तर दिया—ईश्वर की जैसी आज्ञा!

यह कहकर उसने उठकर खड़े होने की चेष्टा की, किन्तु उस आवाज़ ने उसकी इच्छा को ताड़कर कहा—

सबसे महत्त्व की बात यह है कि तू सीढ़ी द्वारा मत उतर। यह तो साधारण मनुष्यों की सी बात होगी। ईश्वर ने तुझे अद्भुत शक्ति प्रदान की है। तुझ जैसे प्रतिभाशाली महात्मा को वायु में उड़ना चाहिए। नीचे कूद पड़, स्वर्ग के दूत तुझे सँभालने के लिए खड़े हैं, तुरन्त कूद पड़!

पापनाशी ने उत्तर दिया—

ईश्वर की इस संसार में उसी भाँति विजय हो जैसे स्वर्ग में है!

अपनी विशाल बाहें फैलाकर, मानों किसी वृहदाकार पक्षी ने अपने छिदरे पंख फैलाये हों, वह नीचे कूदनेवाला ही था कि सहसा एक डरावनी, उपहास-सूचक हास्य ध्वनि उसके कानों में आई। भीत होकर उसने पूछा—यह कौन हँस रहा है?

उस आवाज़ ने उत्तर दिया—

चौंकते क्यों हो? अभी तो हमारी मित्रता का आरम्भ हुआ है। एक

दिन ऐसा आयेगा जब मुझसे तुम्हारा परिचय घनिष्ठ हो जायगा। मित्रव मैने ही तुझे इस स्तम्भ पर चढने की प्रेरणा की थी और जिस निरापद्भा से तुमने मेरी आज्ञा शिरोधार्य की उससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। पापनाशी, तुमसे बहुत खुश हूँ।

पापनाशी ने भयभीत होकर कहा—

प्रभू, प्रभू! मैं तुझे अब पहचान गया, खूब पहचान गया! तू ही व प्राणी है जो प्रभू मसीह को मन्दिर के कलश पर ले गया था और भूमण्ड के समस्त साम्राज्यों का दिग्दर्शन कराया था।

तू शैतान है! भगवान्, तुम मुझसे क्यों पराङ्मुख हो?

वह थर थर काँपता हुआ भूमि पर गिर पड़ा और सोचने लगा—

मुझे पहले इसका ज्ञान क्यों न हुआ? मैं उस नेत्रहीन, बधिर और अपग मनुष्यों से भी अभागा हूँ जो नित्य मेरी शरण आते हैं। मेरी अन्तर्दृ सर्वथा ज्योतिहीन हो गई है, मुझे दैवी घटनाओं का अब लेशमात्र भी ज्ञान नहीं होता और अब मैं उन भ्रष्ट बुद्धि पागलों की भाँति हूँ जो मिट्टी फाँकते हैं और मुर्दों की लाशें घसीटते हैं। मैं अब नरक के अमगल और स्वर्ग के मधुर शब्दों में भेद करने के योग्य नहीं रहा। मुझमें अब उस नवजात शिशु का नैसर्गिक ज्ञान भी नहीं रहा जो माता के स्तनों के मुँह से निकल जाने पर रोता है, उस कुत्ते का सा भी, जो अपने स्वामी के पद-चिन्हों की गन्ध पहचानता है, उस पौधे (सूर्यमुखी) का सा भी जो सूर्य की ओर अपना मुख फेरता रहता है। मैं प्रेतों और पिशाचों के परिहास का केन्द्र हूँ। यह सब मुझ पर तालियाँ बजा रहे हैं, तो अब ज्ञात हुआ, कि शैतान ही मुझे यहाँ खींचकर लाया। जब उसने मुझे इस स्तम्भ पर चढ़ाया तो वासना और अहकार दोनों ही मेरे साथ चढ आये! मैं केवल अपनी इच्छाओं के विस्तार ही से शकायमान नहीं होता। एन्टोनी भी अपनी पर्वत-गुफा में ऐसे ही प्रलोभनों से पीड़ित हैं। मैं चाहता हूँ कि इन समस्त [illegible] तलवार मेरी देह को छेद डाले, स्वर्गदूतों के सम्मुख मेरी [illegible] अब मैं अपनी यातनाओं से प्रेम कर[illegible] नहीं बोलता, उसका एक शब्द भी[illegible]

निर्दय मौन, यह कठोर निस्तब्धता आश्चर्यजनक है। उसने मुझे त्याग दिया है—मुझे, जिसका उसके सिवाय और कोई अवलम्ब न था। वह मुझे इस आफ़त में अकेला, निस्सहाय छोड़े हुए है। वह मुझसे दूर भागता है, घृणा करता है। लेकिन मैं उसका पीछा नहीं छोड़ सकता। यहाँ मेरे पैर जल रहे हैं, मैं दौड़कर उसके पास पहुँचूँगा।

यह कहते ही उसने वह सीढ़ी थाम ली जो स्तम्भ के सहारे खड़ी थी, उस पर पैर रखे और एक डण्डा नीचे उतरा कि उसका मुख गोरूपी कलश के सम्मुख आ गया। उसे देखकर यह गोमूर्ति विचित्र रूप से मुसकराई। उसे अब इसमें कोई सन्देह न था कि जिस स्थान को उसने शान्ति-लाभ और सत्कीर्ति के लिए पसन्द किया था, वह उसके सर्वनाश और पतन का सिद्ध हुआ। वह बड़े वेग से उतरकर ज़मीन पर आ पहुँचा। उसके पैरों को अब खड़े होने का भी अभ्यास न था, वे डगमगाते थे। लेकिन अपने ऊपर इस पैशाचिक स्तंभ की परछाईं पड़ते देखकर वह जबरदस्ती दौड़ा, मानों कोई कैदी भागा जाता हो। संसार निद्रा में मग्न था। वह सबसे छिपा हुआ उस चौक से होकर निकला जिसके चारों ओर शराब की दुकानें, सराएँ, धर्मशालाएँ बनी हुई थीं और एक गली में घुस गया, जो लाइबिया की पहाड़ियों की ओर जाती थी। विचित्र बात यह थी कि एक कुत्ता भी भूँकता हुआ इसका पीछा कर रहा था और जब तक मरुभूमि के किनारे तक उसे दौड़ा न ले गया, उसका पीछा न छोड़ा। पापनाशी ऐसे देहातों में पहुँच गया जहाँ सड़कें या पगडण्डियाँ न थीं, केवल वनजन्तुओं के पैरों के निशान थे। इस निर्जन देश में वह एक दिन और एक रात लगातार अकेला भागता चला गया।

अन्त में जब वह भूख, प्यास और थकन से इतना बेदम हो गया कि पाँव लड़खड़ाने लगे, ऐसा जान पड़ने लगा कि अब जीता न बचूँगा तो वह एक नगर में पहुचा जो दायें बायें इतनी दूर तक फैला हुआ था कि उसकी सीमाएँ नीले क्षितिज में विलीन हो जाती थीं। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी, किसी प्राणी का नाम न था। मकानों की कमी न थी, पर वह दूर दूर पर बने हुए थे, और उन मिस्री मीनारों की भाँति दीखते थे जो बीच

किया तो उसे चारों ओर सामाजिक दृश्य अंकित दिखाई दिये। जीवन की साधारण घटनाएँ जीती-जागती मूर्तियों द्वारा प्रकट की गई थीं। यह बड़े प्राचीन समय की चित्रकारी थी और इतनी उत्तम कि जान पड़ता कि मूर्तियाँ अब बोला ही चाहती हैं। चित्रकार ने उनमें जान डाल दी थी। कहीं कोई नानबाई रोटियाँ बना रहा था और गालों को कुप्पी की तरह फुलाकर आग फूँकता था, कोई बतख़ों के पर नोच रहा था और कोई पतीलियों में मांस पका रहा था। ज़रा और हटकर एक शिकारी कन्धों पर हिरन लिये जाता था जिसकी देह में बाण चुभे दिखाई देते थे। एक स्थान पर किसान खेती का काम काज करते थे। कोई बोता था, कोई काटता था। कोई अनाज बखारों में भर रहा था। दूसरे स्थान पर कई स्त्रियाँ वीणा, बाँसुरी और तम्बूरों पर नाच रही थीं। एक सुन्दर युवती सितार बजा रही थी। उसके केशों में कमल का पुष्प शोभा दे रहा था। केश बड़ी सुन्दरता से गूँथे हुए थे। उसके स्वच्छ महीन कपड़ों से निर्मल अंगों की आभा झलकती थी। उसके मुख और वक्षस्थल की शोभा अद्वितीय थी। उसका मुख एक ओर को फिरा हुआ था, पर कमलनैन सीधे ही ताक रहे थे। सर्वाङ्ग अनुपम, अद्वितीय, मुग्धकर था। पापनाशी ने उसे देखते ही आँखें नीची कर लीं और उस आवाज़ को उत्तर दिया—

तू मुझे इन तसवीरों का अवलोकन करने का आदेश क्यों देता है! इसमें तेरी क्या इच्छा है? यह सत्य है कि इन चित्रों में उस मतिमावादी पुरुष ने सांसारिक जीवन का अंकन किया गया है जो यहाँ मेरे पैरों के नीचे, * एक कुएँ की तह में, काले पत्थर के सन्दूक में बन्द, गड़ा हुआ है। उनसे एक मरे हुए प्राणी की याद आती है, और यद्यपि उनके रूप बहुत चमकीले हैं, पर यथार्थ में वह केवल छाया नहीं, छाया की छाया हैं, क्योंकि मानव जीवन स्वयं छाया मात्र है। मृत देह का इतना महत्त्व! इतना गर्व है!

उस आवाज़ ने उत्तर दिया—

अब वह मर गया है लेकिन एक दिन जीवित था। लेकिन तू एक दिन

* मिस्र के प्राचीन निवासी मुर्दों को तहख़ानों के अन्दर, कुँओं के नीचे गाड़ते थे।

वासिनी आत्मा उस ऊँचे स्थान पर बैठे हुए देखेगी कि मेरी ही देह की क्या छीछालेदर हो रही है? स्वयं ईश्वर जिसने हिसाब के दिन के बाद तुम्हें अनन्तकाल तक के लिए यह देह लौटा देने का वचन दिया है, चक्कर में पड़ जायगा कि क्या करूँ। वह उस मानव शरीर को स्वर्ग के पवित्र धाम में कैसे स्थान देगा जिसमें एक प्रेत का निवास है और जिससे एक जादूगरनी की माया लिपटी हुई है? तुमने उस कठिन समस्या का विचार नहीं किया। न ईश्वर ही ने उस पर विचार करने का कष्ट उठाया। तुमसे कोई परदा नहीं। हम तुम दोनों एक ही हैं, ईश्वर बहुत विचारशील नहीं जान पड़ता। कोई साधारण जादूगर उसे धोखे में डाल सकता है, और यदि उसके पास आकाश, वज्र और मेघों की जलसेना न होती तो देहाती लौंडे उसकी दाढी नोचकर भाग जाते, उससे कोई भयभीत न होता, और उसकी वस्तृत सृष्टि का अन्त हो जाता, यथार्थ में उसका पुराना शत्रु सर्प उससे कहीं चतुर और दूरदर्शी है। सर्पराज के कौशल का पारावार नहीं है। वह कलाओं में प्रवीण है। यदि मैं ऐसी सुन्दरी हूँ तो इसका कारण यह है कि उसने मुझे अपने ही हाथों से रचा और यह शोभा प्रदान की। उसी ने मुझे बालों का गूँथना, अर्ध कुसुमित अधरों से हँसना और आभूषणों से अंगों को सजाना सिखाया। तुम अभी तक उसका माहात्म्य नहीं जानते। जब तुम पहली बार इस कुटी में आये तो तुमने अपने पैरों से उन सर्पों को भगा दिया जो यहाँ रहते थे और उनके अंडों को कुचल डाला। तुम्हें इसकी लेशमात्र भी चिन्ता न हुई कि यह सर्प उसी सर्पराज के आत्मीय हैं। मित्र, मुझे भय है कि इस अविचार का हमको कड़ा दण्ड मिलेगा। सर्पराज तुमसे बदला लिये बिना न रहेगा। तिस पर भी तुम इतना तो जानते ही [illegible] वह संगीत निपुण और प्रेम कला में सिद्धहस्त है। तुमने [illegible] अवज्ञा की। कला और सौन्दर्य दोनों ही से झगड़ा कर[illegible] पाँव तले कुचलने की चेष्टा की। [illegible] अब तुम आतंकों से ग्रस्त हो रहे हो। [illegible] क्यों करता? उसके लिए यह अस[illegible] आकार के समान ही है, इसलिए [illegible] ही

असम्भव को सम्भव मान लें, तो उसकी भूमडलव्यापी देह के किंचिन्मात्र हिलने पर सारी सृष्टि अपनी जगह से खिसक जायगी, संसार का नाम ही न रहेगा। तुम्हारे सर्वज्ञाता ईश्वर ने अपनी सृष्टि में अपने को क़ैद कर रखा है।

पापनाशी को मालूम था कि जादू द्वारा बड़े बड़े अनैसर्गिक कार्य सिद्ध हो जाया करते हैं। यह विचार करके उसको बड़ी घबराहट हुई—

शायद वह मृत पुरुष जो मेरे पैरों के नीचे समाधिस्थ है उन मन्त्रों को याद रखे हुए है जो 'गुप्त ग्रन्थ' में प से लिखे हुए हैं। वह ग्रन्थ अवश्य ही किसी बादशाह की क़ब्र के नीचे कहीं न कहीं छिपा रखा होगा। वह स्थान यहाँ से दूर नहीं हो सकता। किसी बादशाह की क़ब्र निकट होगी। उन मन्त्रों के बल से मुर्दे वही देह धारण कर लेते हैं जो उन्होंने इस लोक मे धारण किया था और फिर सूर्य के प्रकाश और रमणियों की मन्द मुसकान का आनन्द उठाते हैं।

उसको सबसे अधिक भय इस बात का था कि कहीं वह सितार बजानेवाली सुन्दरी और वह मृत पुरुष निकल न आयें और उसके सामने उसी भाँति समोग न करने लगें जैसे वह अपने जीवन में किया करते थे। कभी-कभी उसे ऐसा मालूम होता था, कि चुम्बन का शब्द सुनाई दे रहा है।

वह मानसिक ताप से जला जाता था और अब ईश्वर की दयादृष्टि से वञ्चित होकर उसे विचारों से उतना ही भय लगता था, जितना भावों से। न जाने मन में कब क्या भाव जाग्रत हो जाय!

एक दिन सन्ध्या समय जब वह अपने नियमानुसार औंधे मुँह पड़ा सिजदा कर रहा था, किसी अपरिचित प्राणी ने उससे कहा—

पापनाशी, पृथ्वी पर उससे कितने ही अधिक और कितने ही विचित्र प्राणी बसते हैं जितना तुम अनुमान कर सकते हो और यदि मैं तुम्हें यह सब दिखा सकूँ जिसका मैंने अनुभव किया है तो तुम आश्चर्य से मर जाओगे। संसार में ऐसे मनुष्य भी हैं जिनके ललाट के मध्य में केवल एक ही आँख होती है और वह जीवन का सारा काम उसी एक आँख से करते हैं। ऐसे प्राणी भी देखे गये हैं जिनके एक ही टाँग होती है और वह उछल उछलकर चलते हैं। इन एकटंगों से एक पूरा प्रान्त बसा हुआ है। ऐसे प्राणी भी हैं जो इच्छा-

नुसार स्त्री या पुरुष बन जाते हैं। उनमें लिंगभेद ही नहीं होता। इतना ह सुनकर न चकराओ, पृथ्वी पर मानववृक्ष हैं जिनकी जड़ें जमीन में फैलत हैं, बिना सिरवाले मनुष्य हैं जिनकी छाती में मुँह, दो आँखें और एक नाक रहती है। क्या तुम शुद्ध मन से विश्वास करते हो कि प्रभु मसीह ने इ प्राणियों की मुक्ति के निमित्त ही शरीर-त्याग किया? अगर उसने इ दुखियों को छोड़ दिया है तो यह किसकी शरण जायेंगे, कौन इनकी मुक्ति का दायी होगा?

इसके कुछ समय बाद पापनाशी को एक स्वप्न हुआ। उसने निर्मल प्रकाश में एक चौड़ी सड़क, बहते हुए नाले और लहलहाते हुए उद्या देखे। सड़क पर अरिस्टोबोलस और चेरियास अपने अरबी घोड़ों को सरप दौड़ाये चले जाते थे और इस चौगान दौड़ से उनका चित्त इतना उल्लसि हो रहा था कि उनके मुँह अरुणवर्ण हुए जाते थे। उनके समीप ही के ए पेशताक़ में खड़ा कवि कलिक्रान्त अपने कवित्त पढ़ रहा था। सफल ग उसके स्वर में काँपता था और उसकी आँखों में चमकता था। उद्यान जेनात्थमीज़ पके हुए सेब चुन रहा था और एक सर्प को थपकियाँ दे था जिसके नीले पर थे। हरमोडोरस श्वेत वस्त्र पहने, सिर पर एक रत्नजटि मुकुट रखे, एक वृक्ष के नीचे ध्यान में मग्न बैठा था। इस वृक्ष में फूलों व जगह छोटे छोटे सिर लटक रहे थे जो मिस्र देश की देवियों की भाँति गिद्ध बाज या उज्ज्वल चन्द्र मण्डल का मुकुट पहने हुए थे। पीछे की ओर ए जलकुण्ड के समीप बैठा हुआ निसियास नक्षत्रों की अनन्त गति का अवलोक कर रहा था।

तब एक स्त्री मुँह पर नक़ाब डाले और हाथ में मेंहदी की एक टह लिये पापनाशी के पास आई और बोली—

पापनाशी, इधर देख! कुछ लोग ऐसे हैं जो अनन्त सौन्दर्य के लि लालायित रहते हैं और अपने नश्वर जीवन को अमर समझते हैं। कुछ प्राणी भी हैं जो जड़ और विचार शून्य हैं, जो कभी जीवन के तत्वों विचार ही नहीं करते। लेकिन दोनों ही केवल जीवन के नाते प्रकृति की आज्ञाओं का पालन करते हैं, यह केवल इतने ही से सन्तुष्ट और ?

हैं कि हम जीते हैं और संसार के अद्वितीय कलानिधि का गुणगान करते हैं क्योंकि मनुष्य ईश्वर की मूर्तिमान स्तुति है। प्राणीमात्र का विचार है कि सुख एक निष्पाप, विशुद्ध वस्तु है, और सुखभोग मनुष्य के लिए वर्जित नहीं है। अगर इन लोगों का विचार सत्य है तो पापनाशी, तुम कहीं के न रहे। तुम्हारा जीवन नष्ट हो गया। तुमने प्रकृति के दिये हुए सर्वोत्तम पदार्थ को तुच्छ समझा। तुम जानते हो, तुम्हें इसका क्या दण्ड मिलेगा?

पापनाशी की नींद टूट गई।

इस भाँति पापनाशी को निरन्तर शारीरिक तथा मानसिक प्रलोभनों का सामना करना पड़ता था। यह दुष्प्रेरणाएँ उसे सर्वत्र घेरे रहती थीं। शैतान एक पल के लिए भी उसे चैन न लेने देता। उस निर्जन कुटी में किसी बड़े नगर की सड़कों से भी अधिक प्राणी बसे हुए जान पड़ते थे। भूत पिशाच हँस हँसकर शोर मचाया करते और अगणित प्रेत, चुड़ैल आदि और नाना प्रकार की दुरात्माएँ जीवन का साधारण व्यवहार करती रहती थीं। सन्ध्या समय जब वह जलधारा की ओर जाता तो परियाँ और चुड़ैल उसके चारों ओर एकत्र हो जातीं और उसे अपने कामोत्तेजक नृत्यों में खींच ले जाने की चेष्टा करतीं। पिशाचों को अब उससे ज़रा भी भय न होता था। वे उसका उपहास करते, उस पर अश्लील व्यंग करते और बहुधा उस पर मुष्टिप्रहार भी कर देते। वह इन अपमानों से अत्यन्त दुःखी होता था। एक दिन एक पिशाच, जो उसकी बाँह से बड़ा नहीं था, उस रस्सी को चुरा ले गया जो वह अपनी कमर में बाँधे था। अब वह बिल्कुल नगा था। आवरण की छाया भी उसकी देह पर न थी। यह सबसे घोर अपमान था जो एक तपस्वी का हो सकता था।

पापनाशी ने सोचा--

मन तू मुझे कहाँ लिये जाता है?

उस दिन से उसने निश्चय किया कि अब हाथों से श्रम करेगा जिसमें विचारेन्द्रियों को वह शान्ति मिले जिसकी उन्हें बड़ी आवश्यकता थी। आलस्य का सबसे बुरा फल कुप्रवृत्तियों को उकसाना है।

जलधारा के निकट, छुहारे के वृक्षों के नीचे कई केले के पौधे थे जिनकी

पत्तियाँ बहुत बड़ी बडी थीं। पापनाशी ने उनके तने काट लिये और उन्हें कब्र के पास लाया। इन्हें उसने एक पत्थर से कुचला और उनके रेशे निकाले। रस्सी बनानेवालों को उसने केले के तार निकालते देखा था। वह उस रस्सी की जगह कमर मे लपेटने के लिए दूसरी रस्सी बनाना चाहता था जो एक पिशाच चुरा ले गया था। प्रेतों ने उसकी दिनचर्या में यह परिवर्तन देखा तो क्रुद्ध हुए। किन्तु उसी क्षण से उनका शोर बन्द हो गया और सितारवाली रमणी ने भी अपनी अलौकिक सगीत कला को वन्द कर दिया और पूर्ववत् दीवार से जा मिली और चुपचाप खड़ी हो गई।

पापनाशी ज्यों ज्यो केले के तनों को कुचलता था, उसका आत्म विश्वास, धैर्य और धर्मबल बढता जाता था।

उसने मन में विचार किया—

ईश्वर की इच्छा है तो अब भी इन्द्रियों का दमन कर सकता हूँ। रही आत्मा, उसकी धर्मनिष्ठा अभी तक निश्चल और अभेद्य है। ये प्रेत, पिशाच गण, और वह कुलटा स्त्री, मेरे मन में ईश्वर के सम्बन्ध में भाँति-भाँति की शकाएँ उत्पन्न करते रहते हैं। मैं ऋषि जॉन के शब्दों में उनको यह उत्तर दूँगा—

'आदि में शब्द था और शब्द भी निराकार ईश्वर था। यह मेरा अटल विश्वास है, और यदि मेरा विश्वास मिथ्या और भ्रममूलक है तो मैं दृढ़ता से उस पर विश्वास करता हूँ। वास्तव में इसे मिथ्या ही होना चाहिए। यदि ऐसा न होता तो मैं 'विश्वास' करता, केवल ईमान न लाता, बल्कि 'अनुभव' करता, जानता। अनुभव से अनन्त जीवन नहीं प्राप्त होता। ज्ञान हमें मुक्ति नहीं दे सकता। उद्धार करनेवाला केवल विश्वास है। अत हमारे उद्धार की भित्ति मिथ्या और असत्य है।'

यह सोचते सोचते वह रुक गया। तर्क उसे न जाने किधर लिये जाता था।

वह इन बिखरे हुए रेशों को दिन भर धूप में सुखाता और रात भर ओस में भीगने देता। दिन में कई बार वह रेशों को फेरता था कि कहीं सड़

न जायें। अब उसे यह अनुभव करके परम आनन्द होता था कि वह बालकों के समान सरल और निष्कपट हो गया है।

रस्सी बट चुकने के बाद उसने चटाइयाँ और टोकरियाँ बनाने के लिए नरकट काटकर जमा किया। वह समाधि कुटी एक टोकरी बनानेवाले की दूकान बन गई। और अब पापनाशी जब चाहता ईश प्रार्थना करता, जब चाहता काम करता, लेकिन इतना संयम और यत्न करने पर भी ईश्वर की उस पर दयादृष्टि न हुई। एक रात को वह एक ऐसी आवाज सुनकर जाग पड़ा जिसने उसका एक एक रोआँ खड़ा कर दिया। यह उसी मरे हुए आदमी की आवाज थी जो उस क़ब्र के अन्दर दफन था। और कौन बोलनेवाला था?

आवाज़ सायँ सायँ करती हुई जल्दी जल्दी यों पुकार रही थी—

'हेलेन, हेलेन, आओ, मेरे साथ स्नान करो!'

एक स्त्री ने, जिसका मुँह पापनाशी के कानों के समीप ही जान पड़ता था, उत्तर दिया—

प्रियतम, मैं उठ नहीं सकती। मेरे ऊपर एक आदमी सोया हुआ है।

सहसा पापनाशी को ऐसा मालूम हुआ कि वह अपना गाल किसी स्त्री के हृदयस्थल पर रखे हुए है। वह तुरन्त पहचान गया कि यही सितार बजाने वाली युवती है। वह ज्यों ही ज़रा सा खिसका तो स्त्री का बोझ कुछ हलका हो गया और उसने अपनी छाती ऊपर उठाई। पापनाशी तब कामोन्मत्त होकर, उस कोमल, सुगंधमय, गर्म शरीर से चिमट गया और दोनों हाथों से उसे पकड़कर भेंच लिया। सर्वनाशी दुर्दमनीय वासना ने उसे परास्त कर दिया। गिड़गिड़ाकर वह कहने लगा—

ठहरो, ठहरो, प्रिये, ठहरो, मेरी जान!

लेकिन युवती एक छलाँग में क़ब्र के द्वार पर जा पहुँची। पापनाशी को दोनों हाथ फैलाये देखकर वह हँस पड़ी और उसकी मुसकराहट शशि की उज्ज्वल किरणों में चमक उठी।

उसने निष्ठुरता से कहा—

मैं क्यों ठहरूँ? ऐसे प्रेमी के लिए जिसकी भावनाशक्ति इतनी सजीव

और प्रखर हो, छाया ही काफी है।। फिर तुम अब पतित हो गये, तुम्हारे पतन में अब कोई कसर नहीं रही। मेरी मनोकामना पूरी हो गई, अब मेरा तुमसे क्या नाता!

पापनाशी ने सारी रात रो-रोकर काटी और उषाकाल हुआ तो उस प्रभु मसीह की वंदना की जिसमें भक्ति-पूर्ण व्यंग भरा हुआ था—

ईसू, प्रभु ईसू, तूने क्यों मुझसे आँखें फेर लीं? तू देख रहा है कि कितनी भयानक परिस्थितियों में घिरा हुआ हूँ। मेरे प्यारे मुक्तिदाता, आ मेरी सहायता कर। तेरा पिता मुझसे नाराज है, मेरी अनुनय विनय कुछ नहीं सुनता, इसलिए याद रख कि तेरे सिवाय मेरा अब कोई नहीं है। तेरे पिता से अब मुझे कोई आशा नहीं है, मैं उसके रहस्य को समझ नहीं सकता और न उसे मुझ पर दया आती है। किन्तु तूने एक स्त्री के गर्भ से जन्म लिया है, तूने माता का स्नेह भोग किया है और इसलिए तुझ पर मेरी श्रद्धा है। याद रख कि तू भी एक समय मानव देहधारी था। मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ, इस कारण नहीं कि तू ईश्वर का ईश्वर, ज्योति की ज्योति, परम पिता का परम पिता है, बल्कि इस कारण कि तूने इस लोक में, जहाँ अब मैं नाना यातनाएँ भोग रहा हूँ, दरिद्र और दीन प्राणियों का-सा जीवन व्यतीत किया है, इस कारण कि शैतान ने तुझे भी कुवासनाओं के भँवर में डालने की चेष्टा की है, और मानसिक वेदना ने तेरे मुख को भी पसीने से तर किया है। मेरे मसीह, मेरे बन्धु मसीह, मैं तेरी दया का, तेरी मनुष्यता का प्रार्थी हूँ।

जब वह अपने हाथों को मल मलकर यह प्रार्थना कर रहा था, तो अट्टहास की प्रचण्ड ध्वनि से कब्र की दीवारें हिल गईं और वही आवाज, जो स्तम्भ के शिखर पर उसके कानों में आई थी, अपमान सूचक शब्दों में बोली—

'यह प्रार्थना तो विधर्मी मार्कस के मुख से निकलने के योग्य है। पापनाशी भी मार्कस का चेला हो गया, वाह वाह! क्या कहना! पापनाशी विधर्मी हो गया!'

पापनाशी पर मानों वज्राघात हो गया। वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

❀ ❀ ❀

जब उसने फिर आँखें खोलीं तो उसने देखा कि तपस्वी काले कन्टोप पहने उसके चारों ओर खड़े हैं, उसके मुख पर पानी के छींटे दे रहे हैं और उसकी झाड़ फूँक, यन्त्र मन्त्र में लगे हुए हैं। कई और आदमी हाथों में खजूर की डालियाँ लिये बाहर खड़े हैं।

उनमें से एक ने कहा—

हम लोग इधर से होकर जा रहे थे तो हमने इस क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ निकलती हुई सुनी और जब अन्दर आये तो तुम्हें पृथ्वी पर अचेत पड़े देखा। निस्सन्देह प्रेतों ने तुम्हें पछाड़ दिया था और हमको देखकर भाग खड़े हुए।

पापनाशी ने सिर उठाकर क्षीण स्वर में पूछा—

बन्धुवर्ग, आप लोग कौन हैं? आप लोग क्यों खजूर की डालियाँ लिये हुए हैं? क्या मेरी मृतक क्रिया करने तो नहीं आये हैं?

उनमें से एक तपस्वी बोला—

बन्धुवर, क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि हमारे पूज्य पिता एन्टोनी, जिनकी अवस्था अब एक सौ पाँच वर्षों की हो गई है, अपने अन्तिम काल की सूचना पाकर उस पर्वत से उतर आये हैं जहा वह एकान्त सेवन कर रहे थे? उन्होंने अपने अगणित शिष्यों और भक्तों को जो उनकी आध्यात्मिक सन्तानें हैं, आशीर्वाद देने के निमित्त यह कष्ट उठाया है। हम खजूर की डालियाँ लिये (जो शान्ति की सूचक हैं) अपने पिता को अभ्यर्थना करने जा रहे हैं। लेकिन बन्धुवर, यह क्या बात है कि तुमको ऐसी महान् घटना की ख़बर नहीं? क्या यह सम्भव है कि कोई देवदूत यह सूचना लेकर इस क़ब्र में नहीं आया?

पापनाशी बोला—

आह! मेरी कुछ न पूछो। मैं अब इस कृपा के योग्य नहीं हूँ और इस यमपुरी में प्रेतों और पिशाचों के सिवा और कोई नहीं रहता। मेरा

पापनाशी है जो एक धर्माश्रम का अध्यक्ष था। प्रभु के सेवकों में मुझसे अधिक दुःखी और कोई न होगा।

पापनाशी का नाम सुनते ही सब योगियों ने खजूर की डालियाँ हिलाई और एक स्वर से उसकी प्रशंसा करने लगे। वह तपस्वी जो पहले बोला था विस्मय से चौंककर बोला—

क्या तुम वही सन्त पापनाशी हो जिसकी उज्ज्वल कीर्ति इतनी विख्यात हो रही है कि लोग अनुमान करने लगे थे कि किसी दिन वह पूज्य ऐन्टोनी की बराबरी करने लगेगा ? श्रद्धेय पिता, तुम्हीं ने थायस नाम की वेश्या को ईश्वर के चरणों में रत किया ? तुम्हीं को तो देवदूत उठाकर एक उच्च स्तम्भ के शिखर पर बिठा आये थे, जहाँ तुम नित्य प्रभु मसीह के भोज में सम्मिलित होते थे। जो लोग उस समय स्तम्भ के नीचे खड़े थे, उन्होंने अपने नेत्रों से तुम्हारा स्वर्गोत्थान देखा। देवदूतों के पर श्वेत मेघावरण की भाँति तुम्हारे चारों ओर मण्डल बनाये हुए थे और तुम दाहना हाथ फैलाये मनुष्यों को आशीर्वाद देते जाते थे। दूसरे दिन जब लोगों ने तुम्हें वहाँ न पाया तो उनकी शोक-ध्वनि उस मुकुटहीन स्तम्भ के शिखर तक जा पहुँची। चारों ओर हाहाकार मच गया। लेकिन तुम्हारे शिष्य फ्लेवियन ने तुम्हारे आत्मोत्सर्ग की कथा कही और तुम्हारी जगह पर आश्रम का अध्यक्ष बनाया गया। किन्तु वहाँ पॉल नाम का एक मूर्ख भी था। शायद वह भी तुम्हारे शिष्यों में था। उसने जन सम्मति का विरोध करने की चेष्टा की। उसका कहना था कि उसने स्वप्न में देखा है कि पिशाच उन्हें पकड़े लिये जाता है। जनता को यह सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने उसको पत्थरों से मारना चाहा। चारों ओर से लोग दौड़ पड़े। ईश्वर ही जाने कैसे उस मूर्ख की जान बची। हाँ, वह बच अवश्य गया। मेरा नाम जोज़ीमस है। मैं इन तपस्वियों का अध्यक्ष हूँ जो इस समय तुम्हारे चरणों पर गिरे हुए हैं। अपने शिष्यों की भाँति मैं भी तुम्हारे चरणों पर सिर रखता हूँ कि पुत्रों के साथ पिता को भी तुम्हारे शुभ-शब्दों का फल मिल जाये। हम लोगों को अपने आशीर्वाद से शान्ति दीजिए, उसके बाद उन अलौकिक कृत्यों का भी वर्णन कीजिए जो ईश्वर आपके द्वारा पूरा

करना चाहता हूँ। हमारा परम सौभाग्य है कि आप जैसे महान पुरुष के दर्शन हुए।

पापनाशी ने उत्तर दिया—

बन्धुवर, तुमने मेरे विषय में जो धारणा बना रखी है वह यथार्थ से कोसों दूर है। ईश्वर की मुझ पर कृपादृष्टि होनी तो दूर की बात है, मैं उसके हाथों कठोरतम यातनाएँ भोग रहा हूँ। मेरी जो दुर्गति हुई है उसका वृत्तान्त सुनाना व्यर्थ है। मुझे स्तम्भ के शिखर पर देवदूत नहीं ले गये थे। यह लोगों की मिथ्या कल्पना है। वास्तव में मेरी आँखों के सामने एक पर्दा पड़ गया है और मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता। मैं स्वप्नवत् जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। ईश्वर-विमुख होकर मानव-जीवन स्वप्न के समान है। जब मैंने इस्कन्द्रिया की यात्रा की थी तो थोड़े ही समय में मुझे कितने ही वादों के सुनने का अवसर मिला और मुझे ज्ञात हुआ कि भ्रान्ति की सेना गणना से परे है। वह नित्य मेरा पीछा किया करती है और मेरे चारों तरफ संगीनों की दीवार खड़ी है।

जोज़ीमस ने उत्तर दिया—

पूज्य पिता, आपको स्मरण रखना चाहिए कि सतगण और मुख्यत एकान्तसेवी सन्तगण भयंकर यातनाओं से पीड़ित होते रहते हैं। अगर यह सत्य नहीं है कि देवदूत तुम्हें ले गये तो अवश्य ही यह सम्मान तुम्हारी मूर्ति अथवा छाया का हुआ होगा, क्योंकि फ्लेवियन, तपस्वीगण और दर्शकों ने अपनी आँखों से तुम्हे विमान पर ऊपर जाते देखा।

पापनाशी ने सन्त ऐन्टोनी के पास जाकर उनसे आशीर्वाद लेने का निश्चय किया। बोला—

बन्धु जोजीमस, मुझे भी खजूर की एक डाली दे दो और मैं भी तुम्हारे साथ पिता ऐन्टोनी का दर्शन करने चलूँगा।

जोजीमस ने कहा—

बहुत अच्छी बात है। तपस्वियों के लिए सैनिक विधान ही उपयुक्त है, क्योंकि हम लोग ईश्वर के सिपाही हैं। हम और तुम अधिष्ठाता हैं, इसलिए आगे आगे चलेंगे और यह लोग भजन गाते हुए हमारे पीछे पीछे चलेंगे।

जब सब लोग यात्रा को चले तो पापनाशी ने कहा—

ब्रह्म एक है क्योंकि वह सत्य है और सत्य एक है। संसार अनेक हैं क्योंकि वह असत्य हैं। हमें संसार की सभी वस्तुओं से मुँह मोड़ लेना चाहिए, उनसे भी जो देखने में सर्वथा निर्दोष जान पड़ती हैं। उनकी बहुरूपता उन्हें इतनी मनोहारिणी बना देती है जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वह दूषित हैं। इसी कारण मैं किसी कमल को भी शान्त निर्मल सागर में हिलते हुए देखता हूँ तो मुझे आत्मवेदना होने लगती है, और चित्त मलिन हो जाता है। जिन वस्तुओं का ज्ञान इन्द्रियों द्वारा होता है वे सभी त्याज्य हैं। रेणुका का एक अणु भी दोषों से रहित नहीं, हमें उससे सशंक रहना चाहिए। सभी वस्तुएँ हमें बहकाती हैं, हमें राग में रत करती हैं। और स्त्री तो उन सारे प्रलोभनों का योग मात्र है जो वायुमण्डल में फूलों से लहराती हुई पृथ्वी पर और स्वच्छ सागर में विचरा करते हैं। वह पुरुष धन्य है जिसकी आत्मा बन्द द्वार के समान है। वही पुरुष सुखी है जो गूँगा, बहरा, अन्धा होना जानता है, और जो इसलिए सांसारिक वस्तुओं से अज्ञात रहता है कि ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करे।

जोजीमेस ने इस कथन पर विचार करने के बाद उत्तर दिया—

पूज्य पिता, तुमने अपनी आत्मा मेरे सामने खोलकर रख दी है, इसलिए आवश्यक है कि मैं अपने पापों को तुम्हारे सामने स्वीकार करूँ। इस भाँति हम अपनी धर्म प्रथा के अनुसार परस्पर अपने-अपने अपराधों को स्वीकार कर लेंगे। यह व्रत धारण करने के पहले मेरा सांसारिक जीवन अत्यन्त दुर्वासना-मय था। मदौरा नगर में, जो वेश्याओं के लिए प्रसिद्ध था, मैं नाना प्रकार के विलास भोग किया करता था। नित्यप्रति रात्रि समय जवान विषयगामियों और वीणा बजानेवाली स्त्रियों के साथ शराब पीता, और उनमें जो पसन्द आती उसे अपने साथ घर ले जाता। तुम जैसा साधु पुरुष कल्पना भी नहीं कर सकता कि मेरी प्रचण्ड कामातुरता मुझे किस सीमा तक ले जाती थी। बस इतना ही कह देना पर्याप्त है कि मुझसे न विवाहिता बचती थी न देवकन्या, और मैं चारों ओर व्यभिचार और अधर्म फैलाया करता था। मेरे हृदय में कुवासनाओं के सिवा और किसी बात का ध्यान ही न आता था। मैं अपनी इन्द्रियों को मदिरा से उत्तेजित करता था और

यथार्थ में मदिरा का सबसे बड़ा विध्वंसक समझा जाता था। तिस पर मैं ईसाई धर्मावलम्बी था और सलीब पर चढ़ाये गये मसीह पर मेरा अटल विश्वास था। अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति भोग विलास में उड़ाने के बाद मैं अभाव की वेदनाओं से विकल होने लगा था कि मैंने अपने रँगीले सहचरों में सबसे धनवान् पुरुष को यकायक एक भयकर रोग में ग्रस्त होते देखा। उसका शरीर दिनोंदिन क्षीण होने लगा। उसकी टाँगें अब उसे सँभाल न सकतीं, उसके काँपते हुए हाथ शिथिल पड़ गये, उसकी ज्योति हीन आँखें बन्द रहने लगीं। उसके कंठ से कराहने के सिवा और कोई ध्वनि न निकलती। उसका मन, जो उसकी देह से भी अधिक आलस्यप्रेमी था, निद्रा में मग्न रहता। पशुओं की भाँति व्यवहार करने के दण्ड स्वरूप ईश्वर ने उसे पशु ही का अनुरूप बना दिया। अपनी सम्पत्ति के हाथ से निकल जाने के कारण मैं पहले ही से कुछ विचारशील और संयमी हो गया था। किन्तु एक परम मित्र की दुर्दशा से वह रंग और भी गहरा हो गया। इस उदाहरण ने मेरी आँखें खोल दीं। इसका मेरे मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि मैंने संसार को त्याग दिया और इस मरुभूमि में चला आया। यहाँ गत बीस वर्षों से मैं ऐसी शान्ति का आनन्द उठा रहा हूँ, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा। मैं अपने तपस्वी शिष्यों के साथ यथासमय जुलाहे, राज, बढ़ई अथवा लेखक का काम किया करता हूँ, लेकिन जो सच पूछो तो मुझे लिखने में कोई आनन्द नहीं आता, क्योंकि मैं कर्म को विचार से श्रेष्ठ समझता हूँ। मेरे विचार हैं कि मुझ पर ईश्वर की दयादृष्टि है क्योंकि घोर से घोर पापों में आसक्त होने पर भी मैंने कभी आशा नहीं छोड़ी। यह भाव मन से एक क्षण के लिये भी दूर नहीं हुआ कि परम पिता मुझ पर अवश्य कृपा करेंगे। आशा दीपक को जलाये रखने से अन्धकार मिट जाता है।

यह बातें सुनकर पापनाशी ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाई और यों गिला की—

भगवान्! तुम उस प्राणी पर दयादृष्टि रखते हो जिस पर व्यभिचार, अधर्म और विषय भोग जैसे पापों की कालिमा पुती हुई है, और मुझ पर, जिसने सदैव तेरी आज्ञाओं का पालन किया, कभी तेरी इच्छा अ ___ उ

इसलिए तुम दोनों स्वर्ग में स्वर्ण के सैनिक-वस्त्र धारण करोगे और देवदूतों के नेता मीकायेल अपनी सेनाओं के सेनापति की पदवी तुम्हें प्रदान करेंगे।

वृद्ध पालम को देखकर उन्होंने उसे आलिंगन किया और बोले—

देखो, यह मेरे समस्त पुत्रों से सज्जन और दयालु है। उसकी आत्मा से ऐसी मनोहर सुरभि प्रस्फुटित होती है जैसी उसकी कलियों के फूलों से, जिन्हें वह नित्य बोता है।

सन्त जोजीमस को उन्होंने इन शब्दों में सम्बोधित किया—

तू कभी ईश्वरीय दया और क्षमा से निराश नहीं हुआ, इसलिए तेरी आत्मा में ईश्वरीय शान्ति का निवास है। तेरी सुकीर्ति का कमल तेरे कुकर्मों के कीचड़ से उदय हुआ है।

उनके सभी भाषणों से देवबुद्धि प्रकट होती थी।

वृद्धजनों से उन्होंने कहा—

ईश्वर के सिंहासन के चारों ओर अस्सी वृद्ध पुरुष उज्ज्वल वस्त्र पहने, सिर पर स्वर्णमुकुट धारण किये बैठे रहते हैं।

युवकवृन्द को उन्होंने इन शब्दों में सान्त्वना दी—प्रसन्न रहो, उदासीनता उन लोगों के लिए छोड़ दो जो संसार का सुख भोग रहे हैं।

इस भाँति सबसे हँस हँसकर बातें करते, उपदेश करते हुए वह अपने धर्मपुत्रों की सेना के सामने चले जाते थे। सहसा पापनाशी उन्हें समीप आते देखकर, उनके चरणों पर गिर पड़ा। उसका हृदय आशा और भय से विदीर्ण हो रहा था।

'मेरे पूज्य पिता, मेरे दयालु पिता!'—उसने मानसिक वेदना से पीड़ित होकर कहा—प्रिय पिता, मेरी बाँह पकड़िए, क्योंकि मैं भँवर में बहा जाता हूँ। मैंने थायस की आत्मा को ईश्वर के चरणों पर समर्पित किया, मैंने एक ऊँचे स्तम्भ के शिखर पर और एक क़ब्र की कन्दरा में तप किया है, भूमि पर रगड़ खाते खाते मेरे मस्तक में ऊँट के घुटनों के समान घट्टे पड़ गये हैं, तिस पर भी ईश्वर ने मुझसे आँखें फेर ली हैं। पिता, मुझे आशीर्वाद दीजिए, इससे मेरा उद्धार हो जायेगा।

किन्तु ऐन्टोनी ने इसका कुछ उत्तर न दिया। उसने पापनाशी के शिष्यों

को ऐसी तीव्र दृष्टि से देखा जिसके सामने खड़ा होना मुश्किल था। इतने में उनकी निगाह मूर्ख पॉल पर जा पड़ी। वह ज़रा देर उसकी तरफ देखते रहे, फिर उसे अपने समीप आने का सकेत किया। चूँकि सभी आदमियों को विस्मय हुआ कि वह महात्मा इस मूर्ख और पागल आदमी से बातें कर रहे हैं, अतएव उनकी शका का समाधान करने के लिए उन्होंने कहा—

ईश्वर ने इस व्यक्ति पर जितनी वत्सलता प्रकट की है उतनी तुम में से किसी पर नहीं की। पुत्र पॉल, अपनी आँखें ऊपर उठा और मुझे बतला कि स्वर्ग में तुझे क्या दिखाई देता है ?

बुद्धिहीन पॉल ने आँखें उठाईं। उसके मुख पर तेज छा गया और उसकी वाणी मुक्त हो गई। बोला--

मैं स्वर्ग में एक शय्या बिछी हुई देखता हूँ जिसमें सुनहरी और बैंगनी चादरें लगी हुई हैं। उसके पास तीन देवकन्याएँ बैठी हुई बड़ी चौकसी से देख रही हैं कि कोई अन्य आत्मा उसके निकट न आने पाये। जिस सम्मानित व्यक्ति के लिए शय्या बिछाई गई है उसके सिवाय कोई निकट नहीं जा सकता।

पापनाशी ने यह समझकर कि यह शय्या उसकी सत्कीर्ति की परिचायक है, ईश्वर को धन्यवाद देना शुरू किया। किन्तु सन्त ऐन्टोनी ने उसे चुप रहने और मूर्ख पॉल की बातों को सुनने का सकेत किया। पॉल उसी आत्मोल्लास की धुन में बोला—

तीनों देवकन्याएँ मुझसे बातें कर रही हैं। वह मुझसे कहती हैं कि शीघ्र ही एक विदुषी मृत्युलोक से प्रस्थान करनेवाली है। इस्कन्द्रिया की थायस मरणासन्न है, और हमने यह शय्या उसके आदर सत्कार के निमित्त तैयार की है, क्योंकि हम तीनों उसी की विभूतियाँ हैं। हमारे नाम हैं भक्ति, भय, और प्रेम!

ऐन्टोनी ने पूछा—

प्रिय पुत्र, तुझे और क्या दिखाई देता है!

मूर्ख पॉल ने अध से ऊर्ध्व तक शून्य ने देखा, एक क्षितिज से दूसरी क्षितिज तक नज़र दौड़ाई। सहसा उसकी दृष्टि पापनाशी पर जा पड़ी

निसियास, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ क्योंकि तुमने उससे प्रेम किया है। मुझसे उसकी प्रेमचर्चा करो। मुझसे वह बातें कहो जो वह तुमसे किया करती थी।

लेकिन अभी तक उसके हृदय में इस वाक्य बाण की नोक निरन्तर चुभ रही थी—

'थायस मर रही है।'

फिर वह प्रेमोन्मत्त होकर कहने लगा—

ओ दिन के उजाले, ओ निशा के आकाश दीपकों की रौप्य छटा, ओ आकाश, ओ झूमती हुई चोटियोंवाले वृक्षों, ओ वनजन्तुओ, ओ गृह-पशुओ, ओ मनुष्यों के चिन्तित हृदयो! क्या तुम्हारे कान बहरे हो गये हैं, तुम्हें सुनाई नहीं देता कि थायस मर रही है? मन्द समीरण, निर्मल प्रकाश, मनोहर सुगन्ध! इनकी अब क्या जरूरत है? तुम भाग जाओ, लुप्त हो जाओ! ओ भूमण्डल के रूप और विचार! अपने मुँह छिपा लो, मिट जाओ। क्या तुम नहीं जानते कि थायस मर रही है! वह संसार के माधुर्य का केन्द्र थी, जो वस्तु उसके समीप आती थी वह उसकी रूपज्योति से प्रतिबिम्बित होकर चमक उठती थी। इस्कन्द्रिया के भोज में जितने विद्वान, ज्ञानी, वृद्ध उसके समीप बैठे थे, उनके विचार कितने चित्ताकर्षक थे, उनके भाषण कितने सरस! कितने हँसमुख लोग थे! उनके अधरों पर मधुर मुसकान की शोभा थी और उनके विचार आनन्द-भोग की सुगन्ध में डूबे हुए थे। थायस की छाया उनके ऊपर थी, इसलिए उनके मुख से जो कुछ निकलता वह सुन्दर, सत्य और मधुर होता था! उनके कथन एक शुभ अभक्ति से अलंकृत हो जाते थे। शोक, हा शोक! वह सब अब स्वप्न हो गया। उस सुखमय अभिनय का अन्त हो गया, थायस मर रही है! वह मौत मुझे क्यों नहीं आती! उसकी मौत से मरना मेरे लिए कितना स्वाभाविक और सरल है! लेकिन ओ अभागे, निकम्मे पुरुष, ओ निराश और विषाद में डूबी हुई दुरात्मा, क्या तू मरने के लिए ही बनाई गई है? क्या तू समझती है कि तू मृत्यु का स्वाद चख सकेगी, जिसने अभी जीवन का मर्म नहीं जाना, वह मरना क्या जाने? हाँ, अगर ईश्वर है और मुझे

उन्मुक्त वक्ष के अनुपम सुधा सागर में अपने को प्लावित न कर दिया। तू नित्य उस द्वेष ध्वनि पर कान लगाये रहा जो तुझसे कहती थी, भाग, भाग! अन्धे, अन्धे, भाग्यहीन अन्धे! हा शोक! हा पश्चात्ताप! हा निराशा! नरक में उसे कभी न भूलनेवाली घड़ी की आनन्दस्मृति ले जाने का और ईश्वर से यह कहने का अवसर हाथों से निकल गया कि 'मेरे मांस जला, मेरी धमनियों में जितना रक्त है उसे चूस ले, मेरी सारी हड्डियों को चूर-चूर कर दे, लेकिन तू मेरे हृदय से उस सुखद स्मृति को नहीं निकाल सकता, जो चिरकाल तक मुझे सुगन्धित और प्रमुदित रखेगी!' थायस मर रही है! ईश्वर, तू कितना हास्यास्पद है! तुझे कैसे बताऊँ कि मैं तेरे नरकलोक को तुच्छ समझता हूँ, उसकी हँसी उड़ाता हूँ! थायस मर रही है, वह मेरी कभी न होगी, कभी नहीं, कभी नहीं!

नौका तेज धारा के साथ बहती जाती थी और वह दिन के दिन पेट के बल पड़ा हुआ बार बार कहता था—

कभी नहीं! कभी नहीं!! कभी नहीं!!!

तब यह विचार आने पर कि उसने औरों को अपना प्रेम रस चखाया, केवल मैं ही वंचित रहा, उसने संसार को अपने प्रेम की लहरों से प्लावित कर दिया और मैं उसमें ओठों को भी न तर कर सका, वह दाँत पीसकर उठ बैठा और अन्तर्वेदना से चिल्लाने लगा। वह अपने नखों से अपनी छाती को खरोंचने और अपने हाथों को दाँतों से काटने लगा।

उसके मन में यह विचार उठा—

यदि मैं उसके सारे प्रेमियों का संहार कर देता तो कितना अच्छा होता!

इस हत्याकाण्ड की कल्पना ने उसे सरस हत्या तृष्णा से आन्दोलित कर दिया। वह सोचने लगा कि वह निसियास का खूब आराम से मजे ले लेकर वध करेगा और उसके चेहरे को बराबर देखता रहेगा कि कैसे उसकी जान निकलती है। तब अकस्मात् उसका क्रोधावेग द्रवीभूत हो गया। वह रोने और सिसकने लगा, वह दीन और नम्र हो गया। एक अज्ञात विनयशीलता ने उसके चित्त को कोमल बना दिया। उसे यह आकांक्षा हुई कि अपने बालपन के साथी निसियास के गले में बाहें डाल दे और उससे कहे—

निसियास, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ क्योंकि तुमने उससे प्रेम किया है। मुझसे उसकी प्रेमचर्चा करो। मुझसे वह बातें कहो जो वह तुमसे किया करती थी।

लेकिन अभी तक उसके हृदय में इस वाक्य बाण की नोक निरन्तर चुभ रही थी—

'थायस मर रही है!'

फिर वह प्रेमोन्मत्त होकर कहने लगा—

ओ दिन के उजाले, ओ निशा के आकाश दीपकों की रौप्य छटा, ओ आकाश, ओ झूमती हुई चोटियोंवाले वृक्षों, ओ वनजन्तुओ, ओ गृह-पशुओ, ओ मनुष्यों के चिन्तित हृदयो! क्या तुम्हारे कान बहरे हो गये हैं, तुम्हें सुनाई नहीं देता कि थायस मर रही है? मन्द समीरण, निर्मल प्रकाश, मनोहर सुगन्ध! इनकी अब क्या जरूरत है? तुम भाग जाओ, लुप्त हो जाओ! ओ भूमण्डल के रूप और विचार! अपने मुँह छिपा लो, मिट जाओ। क्या तुम नहीं जानते कि थायस मर रही है! वह संसार के माधुर्य का केन्द्र थी, जो वस्तु उसके समीप आती थी वह उसकी रूपज्योति से प्रतिबिम्बित होकर चमक उठती थी। इस्कन्द्रिया के भोज में जितने विद्वान, ज्ञानी, वृद्ध उसके समीप बैठे थे, उनके विचार कितने चित्ताकर्षक थे, उनके भाषण कितने सरस! कितने हँसमुख लोग थे! उनके अधरों पर मधुर मुसकान की शोभा थी और उनके विचार आनन्द-भोग की सुगन्ध में डूबे हुए थे। थायस की छाया उनके ऊपर थी, इसलिए उनके मुख से जो कुछ निकलता वह सुन्दर, सत्य और मधुर होता था! उनके कथन एक शुभ अभक्ति से अलंकृत हो जाते थे। शोक, हा शोक! वह सब अब स्वप्न हो गया। उस सुखमय अभिनय का अन्त हो गया, थायस मर रही है! वह मौत मुझे क्यों नहीं आती! उसकी मौत से मरना मेरे लिए कितना स्वाभाविक और सरल है! लेकिन ओ अभागे, निकम्मे पुरुष, ओ निराश और विषाद में डूबी हुई दुरात्मा, क्या तू मरने के लिए ही बनाई गई है? क्या तू समझती है कि तू मृत्यु का स्वाद चख सकेगी, जिसने अभी जीवन का मर्म नहीं जाना, वह मरना क्या जाने? हाँ, अगर ईश्वर है और मुझे

खिला अवश्य है। यह सौन्दर्य जो उसका स्वाभाविक आवरण है, तीन मास के विषम ताप पर भी अभी तक निष्प्रभ नहीं हुआ है। अपनी इस बीमारी में उसकी निरन्तर यही इच्छा रही है कि आकाश को देखा करे, इसलिए मैं नित्य प्रात काल उसे आँगन में कुएँ के पास, पुराने अञ्जीर के वृक्ष के नीचे, जिसकी छाया में इस आश्रम की अधिष्ठात्रियाँ उपदेश किया करती हैं, ले जाती हूँ। दयालु पिता, वह आपको वहीं मिलेगी। किन्तु, जल्दी कीजिए, क्योंकि ईश्वर का आदेश हो चुका है और आज की रात वह मुख कफन से ढक जायेगा जो ईश्वर ने इस जगत् को लज्जित और उत्साहित करने के लिए बनाया है। यही स्वरूप आत्मा का संहार करता था, यही उसका उद्धार करेगा।

पापनाशी अलबीना के पीछे-पीछे आँगन में गया जो सूर्य के प्रकाश से आच्छादित हो रहा था। ईंटों की छत के किनारों पर श्वेत कपोतों की एक मुक्ता माला सी बनी हुई थी। अजीर के वृक्ष की छाँह में एक शय्या पर थायस हाथ पर हाथ रखे लेटी हुई थी। उसका मुख श्रीविहीन हो गया था। उसके पास कई स्त्रियाँ मुँह पर नकाब डाले खड़ी अन्तिम-सत्कार सूचक गीत गा रही थीं—

'परम पिता, मुझ दीन प्राणी पर
अपनी सप्रेम वत्सलता से दया कर।
अपनी करुणा दृष्टि से
मेरे अपराधों को क्षमा कर।'

पापनाशी ने पुकारा—

थायस!

थायस ने पलकें उठाईं और अपनी आँखों की पुतलियाँ उस कंठ ध्वनि की ओर फेरीं।

अलबीना ने देवकन्याओं को पीछे हट जाने की आज्ञा दी, क्योंकि पापनाशी पर उनकी छाया पड़ना भी धर्मविरुद्ध था।

पापनाशी ने फिर पुकारा—

थायस!

उसने अपना सिर धीरे से उठाया। उसके पीले ओठों से एक हल्की साँस निकल आई।

उसने क्षीण स्वर में कहा—

पिता, क्या आप हैं ! आपको याद है कि हमने स्रोत से पानी पिया था और छुहारे तोड़े थे ! पिता, उसी दिन मेरे हृदय में प्रेम का अभ्युदय हुआ—अनन्त जीवन के प्रेम का।

यह कहकर वह चुप हो गई। उसका सिर पीछे को झुक गया।

यमदूतों ने उसे घेर लिया था और अन्तिम प्राणवेदना के श्वेत बुन्दों ने उसके माथे को आर्द्र कर दिया था। एक कबूतर अपने करुण क्रन्दन से उस स्थान की नीरवता को भंग कर रहा था। तब पापनाशी की सिसकियाँ देवकन्याओं के भजनों के साथ सम्मिश्रित हो गईं।

'मुझे मेरी कालिमाओं से भली भाँति पवित्र कर दे और मेरे पापों को धो दे, क्योंकि मैं अपने कुकर्मों को स्वीकार करती हूँ, और मेरे पातक मेरे नेत्रों के सम्मुख उपस्थित हैं।'

सहसा थायस उठकर शैय्या पर बैठ गई। उसकी बैंगनी आँखें फैल गईं, और वह तल्लीन होकर बाहों को फैलाये हुए दूर की पहाड़ियों की ओर ताकने लगी। तब उसने स्पष्ट और उत्फुल्ल स्वर में कहा—

वह देखो, अनन्त प्रभात के गुलाब खिले हुए हैं !

उसकी आँखों में एक विचित्र स्फूर्ति आ गई, उसके मुख पर हलका सा रंग छा गया। उसकी जीवन-ज्योति चमक उठी थी और वह पहले से भी अधिक सुन्दर और प्रसन्नवदन हो गई थी।

पापनाशी घुटनों के बल बैठ गया, अपनी लम्बी, पतली बाहें उसके गले में डाल दीं और बोला—ऐसे स्वरों में जिसे वह स्वयं न पहचान सकता था कि यह मेरी ही आवाज है—

प्रिये, अभी मरने का नाम न ले। मैं तुझ पर जान देता हूँ। अभी न मर ! थायस, सुन, कान धरकर सुन, मैंने तेरे साथ छल किया है, तुझे दगा दी है। मैं स्वयं भ्रांति में पड़ा हुआ था। ईश्वर, स्वर्ग, आदि यह सब निरर्थक शब्द हैं। मिथ्या हैं। इस ऐहिक जीवन से बढ़कर और कोई वस्तु और कोई पदार्थ नहीं है। मानव प्रेम ही संसार में सबसे उत्तम रत्न है। मेरा तुझ पर अनन्त प्रेम है। अभी न मर। यह कभी नहीं हो सकता, तेरा महत्व इससे कहीं अधिक है, तू मरने के लिए बनाई ही नहीं गई। आ, मेरे साथ

चल ! यहाँ से भाग चलें। मैं तुझे अपनी गोद में उठाकर पृथ्वी की उस सीमा तक ले जा सकता हूँ। आ, हम प्रेम में मग्न हो जायें। प्रिये, सुन, मैं क्या कहता हूँ। एक बार कह दे, म जिऊँगी—मैं जीना चाहती हूँ! थायस उठ, उठ!

थायस ने एक शब्द भी न सुना। उसकी दृष्टि अनन्त की ओर लगी हुई थी।

अन्त में वह निर्बल स्वर में बोली—

स्वर्ग के द्वार खुल रहे हैं, मैं देवदूतों को, नबियों को और सन्तों को देख रही हूँ—मेरा सरलहृदय थियोडोर उन्हीं में है। उसके सिर पर फूलों का मुकुट है, वह मुसकराता है, मुझे पुकार रहा है—दो देवदूत मेरे पास आये हैं वह इधर चले आ रहे हैं वह कितने सुन्दर हैं! मैं ईश्वर के दर्शन कर रही हूँ!

उसने एक प्रफुल्ल उच्छ्वास लिया और उसका सिर तकिये पर पीछे गिर पड़ा। थायस का प्राणान्त हो गया! सब देखते ही रह गये, चिड़िया उड़ गई।

पापनाशी ने अन्तिम बार, निराश होकर, उसको गले से लगा लिया। उसकी आँखें उसे तृष्णा, प्रेम और क्रोध से फाड़े खाती थीं।

अलबीना ने पापनाशी से कहा!

दूर हो, पापी, पिशाच!

और उसने बड़ी कोमलता से अपनी उँगलियाँ मृत बालिका की पलकों पर रखीं। पापनाशी पीछे हट गया, जैसे किसी ने धक्का दे दिया हो। उसकी आँखों से ज्वाला निकल रही थी। ऐसा मालूम होता था कि उसके पैरों के तले पृथ्वी फट गई है।

देवकन्याएँ जकरिया का भजन गा रही थीं—

'इस्राइलियों के खुदा को कोटि धन्यवाद!'

अकस्मात् उनके कंठ अवरुद्ध हो गये, मानों किसी ने गला बन्द कर दिया। उन्होंने पापनाशी का मुख देख लिया और भयातुर होकर चिल्लाती हुई भागीं—

दादुर! दादुर!! दादुर!!!

वह इतना घिनौना हो गया था कि अब उसने अपना हाथ अपने मुँह पर फेरा, तो उसे स्वयं ज्ञात हुआ कि उसका स्वरूप कितना विकृत हो गया है!